ओ३म्

मन का दान

ओ३म्

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

लेखक

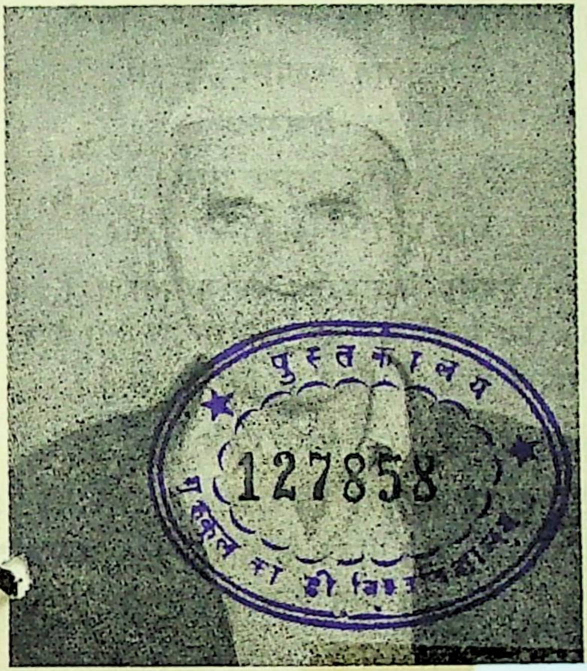
कन्हैयालाल आर्य

ग्राम बुराड़ी, दिल्ली-110009

॥ ओ३म् ॥

मन का दान

जनता जनार्धन के चरणों में सादर समर्पित



लेखक **कन्हैयालाल आर्य**
ग्राम बुराड़ी, दिल्ली-११०००९

पाठकों के लिए

मेरे प्रिय आर्य नवयुवको, मेरी पूज्यनीय आर्य नवयुवतियो मेरी पुस्तिका का क्या साराँश है उस का अनुभव तब ही हो सकता है जब आप आरम्भ से अन्त तक इसका अध्ययन कर लेंगे। अन्यथा कुछ भी समझ में नहीं आयेगा। मेरा विचार धर्म, घर, धन, और देश बचाना है इसलिए पूरी पुस्तक का अध्ययन करना अति आवश्यक है।

-कन्हैयालाल आर्य

॥ ओ३म् ॥

मन का दान

॥ मेरी आंखों देखी घटनाओं पर आधारित ॥

॥ जन कल्याण हेतु ॥

लेखक

कन्हैयालाल आर्य

ग्राम बुराड़ी, दिल्ली-११०००६

१- पुस्तक की रचना का उद्देश्य धन कमाना नहीं है।
२- मेरा उद्देश्य महर्षि दयानन्द का सन्देश देना है।
३- केवल छपाई मूल्य ही प्राप्त करना चाहता हूँ।

प्रथम भाग ग्राम दर्शन नाटक

द्वितीय भाग मेरी प्रिय भजन माला 108

चार भागों में। दर्शन नाटक के आरम्भ की बातें अनावश्यक सी लगेगीं। परन्तु अन्त में वही बातें ठीक लगेंगी।

पुस्तक की रचना का आरम्भ :-
पौष कृष्णा अमावस्या, सं० २०३८ वि०
२६ दिसम्बर, १९८१ ई०
दयानन्दाब्द : १५७ सृष्टि-संवत १,९६०, व ५३,०८२

पुस्तक मूल्य ७-५० रुपये

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियां

मुद्रक :-
श्रीधर प्रिंटर्स
ई-३६, रणजीतसिंह रोड,
आदर्श नगर, दिल्ली-११००३३

॥ लेखक की ओर से ॥

प्रस्तुत रचना का उद्देश्य विशेषकर शिक्षित बालक बालिकाओं को एवं युवकों, युवतियों को एक ऐसी प्रेरणा की ओर अग्रसर करने से है जिसका कुछ शिक्षा संस्थाओं में पूर्णतया अभाव सा प्रतीत सा होता है। मेरी इस पुस्तिका का उद्देश्य एक ऐसी प्रेरणा की ओर अग्रसर करने से है, जो निकृष्ट विचारों से बचाकर उच्च विचारों की ओर अग्रसर करती है।

चाहे संगीत द्वारा आनन्द लें, चाहे साधारण अध्ययन द्वारा आनन्द लें। आनन्द दोनों प्रकार से बराबर ले सकते हैं। अन्त में जिन विद्वानों की महत्वपूर्ण कृतियों से मुझे इस पुस्तक रचना में सहायता मिली है। मैं उनके प्रति अत्यन्त आभारी हूँ।

मुझे आशा है कि अपने उद्देश्य की पूर्ति में यह पुस्तक सफल सिद्ध होगी। इन शब्दों के साथ आपका हितैषी —

कन्हैयालाल आर्य
ग्राम बुराड़ी, दिल्ली-११०००६

—: ० :—

ग्राम दर्शन नाटक के लेखक के अतिरिक्त प्रमुख पात्र

1- श्री दिनेश कुमार त्यागी ।

2- श्रीं हतास सिंह ।

3- श्री शर्मानन्द त्यागी ।

4- श्री राधेश्याम स्वतंत्र सेनानी ।

5- श्री ओंकार सिंह त्यागी सरपंच ।

6- श्री ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य ।

7- श्री अनील कुमार आर्य ।

8- श्री रामकिशन पहलवान त्यागी ।

9- श्री मुन्नालाल आर्य ।

10- अन्य पात्र ।

आज भजन कीर्तन करने में इतना मस्त हो गया कि ड्यूटी पर जाने में भी देर हो गई। मुझे तो आज बैंक में 15 सौ रुपया भी जमा करवाना था। मैं तों चला अपने काम पर। खसोट सिंह कहने लगा यार मैं भी तेरे साथ दिल्ली घूम कर आऊँगा। चल मोटर साईकल निकाल दोनों भाई साथ चलते हैं।

मोटर साईकल को ताला लगा हुआ था। आपनी पत्नि से जबर दस्ती चाबी लेकर और 1500 रुपये अपनी जेब में खसोट सिंह के ही सामने रख लिये और वे दोनों बड़ी तेजी से चले गए। मान सिंह अपनी ड्यूटी पर उपस्थित हो गया। खसोट सिंह को खातर तव्वजो में 1500 सौ रुपये भी जमा करने भूल गए। जब सायं 5 बजे पूरी छुट्टी हुई वो उस का दोस्त खसोट सिंह कहने लगा यार आज तो चल किसी बढ़िया से रस्टोरेन्ट में पीये खायेगें और घर को तफ़री लेकर चलेगें। मान सिंह अपने दोस्त की बात मान कर एक बढ़िया से रैस्टोरैन्ट जा कर खूब खाने-पीने में ही मस्त हो गया, रात के 11 बजे गये।

उस के बाद मानसिंह को अपने घर की याद आई। अपने दोस्त को अपनी मोटर साईकल पर पीछे बैठा कर बड़ी तेजी से घर का रास्ता लिया। सड़क पर रोशनी नहीं थी उस का गाँव वहाँ से तकरीबन तीन मील की दूरी पर रह गया था। रात के अन्धेरे में हरे चारे की पाँच सात भोटा बोगी (गाड़ी) भरी आ रहीं थी। यह तो भगवान को पता मोटर साईकल का हैन्डल पीछे से खसोट सिंह ने घुमा दिया या मानसिंह स्वयं ही घूम गया।

मानसिंह की मोटर साईकल बोगी (गाड़ी) से टकरा गई। मानसिंह को भयानक चोट लग गई उस समय रात्रि के 11-30 बजे होंगें। खसोट सिंह को बिल कुल कोई चोट नहीं लगी। और मान सिंह के सिर से खून की धारा बह निकली थी वह बेहोश हो गया था मैनें सुना था पानी माँग कर पीने की आवाज़ दी थी पानी किसी ने नहीं पिलाया था और उस का नकली दोस्त उसकी बेहोशी में ही 1500 रुपया खसोट कर रफु चक्कर हुआ।

झोटा बोगी वाले भी मान सिंह के खान दान के ही थे। उन में से किसी को भी दया नहीं आई। उस को तड़फता ही छोड़ गये। कुछ ही क्षणों में मान सिंह के भी प्राण पखेरु उड़ गये। श्री कृष्ण भगवान की आत्मा उन को कोस रही होगी कि मेरे बसाये हुऐ इस गाँव के लोग इतने निर्दयी हो गये हैं। यह गाँव तो महर्षि खान्डव का कभी आश्रम था।

उस ही मार्ग से जाटव हरिजन वर्ण का नौ जवान चेतक स्कूटर पर रात्रि के 12 बजे जा रहा था। तेज रोशनी में मानसिंह की मृत लाश को पहचान कर दिल्ली वापिस आकर 100 नं॰ पुलिस को फोन द्वारा बुलाकर उस के हवाले कर दिया।

वह साहसी नौ जवान दो पुलिस के सिपाइयों को अपने ही स्कूटर में बैठा कर श्री ग्रामसेवक का घर बता कर उस को दु:खित समाचार बड़े मन्द स्वर में सुनाया और कहने लगा भाई ग्राम सेवक जी तू तो लुट गया।
ग्राम सेवक अपने पुत्र की मृत्यु की सूचना सुनते ही बेहोश हो

गया । मानसिंह की नव बधू करूण विलाप कर रही थी। उस के अतिरिक्त उस के घर के लोग भी विलाप कर रहे थे। गाँव के सारे व्यक्ति भी सूचना मिलते ही एकत्रित हो कर आँसू बहा रहे थे । सारा गांव मानसिंह की बड़ाई कर रहा था । प्रिय दिनेश जी मैं रो नहीं रहा था मेरे आँसू बह रहे थे। प्रिय दिनेश जी आप का प्रश्न है, कि मानसिंह की 100 (सौ) वर्ष से पूर्व मृत्यु कैसे हो गई ? देखो मित्र ! मानसिंह से गलत मित्र के संग से पितृ आज्ञा का उल्लंघन हो गया था, इस के अतिरिक्त वह हर तरह से ठीक था । उसी दोष के द्वारा ही मृत्यु हो गई ।

दिनेश- गुरु जी यो आधे से ज्यादा जनता यो ही मर रही से, मुझे अब आप यो बताने की कृपा करें की क्या आप सौ वर्ष से पहले नहीं मरेंगे और क्या आप भी सो वर्ष तक जीवित रहेंगें। और यह भी बताने की कृपा करें कि लम्बी आयु के लिए कौन से काम करने चाहिए । कौन से नहीं करने चाहिए ?

आर्य- देखो मित्र । वेदों का धर्म ऋषियों द्वारा बताया गया हैं उन के आदेशानुसार जो मनुष्य आचरण करता है उसकी ही सौ वर्ष की आयु होती है ।

आपका दूसरा प्रश्न था क्या आप भी सो वर्ष तक जीवित रहेंगें । देखो मित्र माता पिता के गर्भाधान से ही आयु का निर्माण होता है । इस लिये मैं यह बताने में असमर्थ हूँ कि मेरे माता पिता ने मेरी आयु का निर्माण ठीक किया या नहीं । मेरे माता-पिता का मेरी बाल अवस्था में ही स्वर्गवास हो गया था ।

॥ लम्बी आयु की सम्भावना ॥

(१) सुनो मित्र अपने द्वारा किसी भी निर्दोष प्राणी को नहीं सताना चाहिए और दोषी को दन्ड देना दिलाना चाहिए

(२) अभक्ष पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए । जैसे मांस शराब, अन्डे, बासी खाना, इनके द्वारा तमस बुद्धि को जन्म मिलता है ।

(३) किसी कार्य के बदले में रिश्वत नहीं लेनी चाहिये । यह भ्रष्ट कार्य है । रिश्वत लेने वाले को दन्ड देना दिलाना चाहिए ।

(४) दिये वचन का पालन करना चाहिये । वचन बद्ध सोच समझकर होना चाहिए ।

(५) आपनी स्त्री के अतिरिक्त, पर स्त्री गमन नहीं करना चाहिए ।

(६) ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए ।

(७) घर पर आये सज्जन पुरुषों का सामर्थ्यानुसार सम्मान करना चहिए ।

(८) संसार के मनुष्यों की एक ही जाति समझनी चाहिये । गुणकर्मों के अनुसार चार वर्ण समझने चाहिए ।

(९) अच्छी बातों को ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करना चाहिए ।

(१०) विज्ञान युक्त ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए और अन्ध विश्वास से दूर रहना चाहिए ।

(११) श्रेष्ठ माता-पिता आचार्यों की आज्ञा का पालन करना चाहिए । दुर्जनों से बच के रहना चाहिए ।

(१२) अपने परिश्रम के धन का ही भोग करना चाहिये। किसी के अधिकार का हरण नहीं करना चाहिए।

दिनेश- गुरु जी, जो उपदेश आपने मुझे दिया है मैं उस को जीवन में धारण करने का प्रयत्न करुँगा। परन्तु यह तो बताओ ग्राम सेवक को खसोट सिंह की दिल दहलाने वाली करतूत का पता तो चल गया होगा उस के विरोध में पुलिस ने कारवाही की थी?

आर्य- हाँ भाई ग्राम सेवक जी को पता तो चल गया था परन्तु वह उस सारे गाँव में बड़ा सीधा सादा मनुष्य था जब उसके विरुद्ध कार्यवाही करने का ज़िकर लोगों ने किया तो उस ने सब से हाथ जोड़कर कहा भाइयो अब मेरा पुत्र दोबारा तो मुझे मिल नहीं नहीं सकता फिर मैं कार्यवाही किस लिये करुँ जो करेगा सो भरेगा।

(पट परिवर्तन)

॥ आर्य मन्च ॥

दिनेश- गुरु जी ! मैं आप का बड़ा आभारी हूँ आज से यह मेरा संकल्प है कि मैं आप के बनाये उपदेश के भजनों को मधुर स्वर में गा कर आर्यवर्त देश की जनता को सुनाया करुंगा आप के बनाये नाटकों को मन्च पर खेलूंगा। अब आप मुझे आज्ञा प्रदान कीजिए।

(दिनेश जी और इस के सब कलाकार साथी नाटक को आर्य मन्च पर खेलने के लिये सुन्दर मंच बनाने की तैयारी में लग जाते हैं।)

आर्य- दिनेश जी आपका धन्यवाद ! मैं आप से यह आशा रखता हूं कि आप जैसे साथियों के द्वारा ही मेरी आशाएं फलें फूलेंगी । देखो दिनेश जी मैं आप के नाटक खेले जाने के समय से पहले उद्घाटन के लिये कुछ माननीय व्यक्तियों को सूचना देने जा रहा हूं । आप और श्री शर्मानन्द त्यागी, दोनों लम्बा चौड़ा मन्च बनाना । और चौधरी ओम दत्त को, और श्री राम किशन पहलवान जी को बुला लेना और चौधरी ओम दत्त जी की सारी बात मानना नहीं तो सारा बना बनाया खेल बिगड़ जाएगा ।

दिनेश- गुरु जी आप चिन्ता न करें मैं आप की इच्छा के अनुसार ही मन्च बनाऊंगा, बनवाऊंगा ।

(आर्य का ग्राम प्रधान के पास निमन्त्रण हेतु जाना)
प्रधान श्री राधेशाम जी, नमस्ते ।

प्रधान राधेशाम- आइए महाशय कन्हैया लाल जी, नमस्ते ।

आर्य- प्रधान जी क्या कारण है आप तो बड़े कमज़ोर नज़र आते हैं ।

प्रधान- हाँ महाशय जी खाँसी सुबह के समय बहुत ही सताती है दम फूल जाता है । छोड़ो इन बातों को लो बीड़ी पीओ ।

आर्य- प्रधान जी धन्यवाद ! मैं बीड़ी नहीं पीता हूँ । मैं तो आप से एक दान माँगने आया हूँ वह दान ये है कि आप आज से बीड़ी पीनी छोड़ दें । क्यों कि अभी हमारे गाँव को आपकी जरुरत है यदि आप बीड़ी पीते रहे तो आप और कमज़ोर हो जायेंगे । लो मैं आप को पन्द्रह बीस भुने हरड़ और काला नमक देता हूं बारीक चूर्ण बनाकर सायं गर्म पानी से एक

चम्मच सेवन किया करो। खाँसी दमे में आराम आएगा। और हाँ मैं आज आप को एक सूचना देने भी आया हूं। जो आपने आर्य समाज हेतु भूमि दान दी है उसी स्थान पर दो दिन बाद रात्रि 8 बजे ग्राम दर्शन नामक नाटक खेला जायेगा उस के उद्घाटन के समय आप का आना आवश्यक है। क्यों कि आपने ही कलाकारों को आशीर्वाद देना है। आप समय पर आने की कृपा करें।

प्रधान- हाँ आर्य जी मैं अवश्य ही समय पर उपस्थित होऊँगा। आप अपनी खाँसी की दवाई के पैसे तो ले लो आप तो मेरे लिये वैद्य ही बनकर आज आगये। मैं अब बीड़ी पीनी भी छोड़ दूंगा। आपका बड़ा धन्यवाद।

आर्य- आप का धन्यवाद, मैं दवाई के पैसे नहीं लूंगा समाप्त होने पर और मंगा लेना।

(कन्हैया लाल आर्य का सर्कल पंच के पास जाना)
सरपंच श्री ओंकार त्यागी जी, नमस्ते।

सरपंच ओंकार- आइए आर्य जी नमस्ते, आपने यहाँ आने का कष्ट किया मेरे योग्य कोई सेवा थी तो मुझे सूचना भिजवा देते मैं आपकी सेवा में हाज़िर हो जाता।

आर्य- प्रिय ओंकार जी ! मैं आज आप से कुछ आशांए लेकर आया हूं।

सरपंच- हाँ यदि मैं अपने बाबा कि इच्छाओं की पूर्ति न करुंगा तो और किस की करुंगा ?

आर्य- मैं आप से यही आशा रखता हूं, धन्यवाद। मुझे आप

का धन तो नहीं चाहिए, आप का तन, मन, अवश्य चाहिए देने का वचन दो ।

सरपंच- अवश्य ही दूंगा आप ही मेरे सब कुछ है ।

आर्य– प्रिय मित्र देखो आपको भगवान ने धन दिया है, विद्या दी है, आप को सुन्दर जवानी दी है और दो भाइयों के सहयोग से सरपंची का पद भी मिला है । आप अपने गांव में यदि अच्छा वातावरण बनायें तो यहाँ के नवयुवक आप का अनुसरण अवश्य करेंगे ।

जवानों के द्वारा ही समाज बनता बिगड़ता है । किसी कवि ने कहा भी है ।

करना चाहें तो कर सकते नौ जवान दुनियाँ में ।
बाल बृद्ध क्या करेंगे मेहरबान दुनियाँ में ।।

तो मैं कह रहा हूं कि परमात्मा ने आप को जो सोन्दर्य दिया है यदि आप शराब और सिगरेट पीना छोड़ दें तो आप का दुगना सोन्दर्य आप के गांव में और कई गुना बढ़ सकता हैं । क्यों कि यहाँ के नौ जवान आप का अनुसरण करते हैं । जो गांव सभ्य होता है उस का समाज, और राज भी स्वागत करता है ऐसे वातावरण से ही समाज और राज तथा गांव नगर स्वर्ग के सामान समझे जाते हैं ।

और हां, मैं कल की आर्य समाज के कार्यक्रम की सूचना भी देने आया हूं । आप के ही इस गॉव में श्री राधेश्याम आर्य समाज मन्दिर में ग्राम दर्शन नाटक को खेलने की योजना भी है सायं 8 बजे दिल्ली से भी कुछ आर्य विद्वान आयेंगें हम आप के द्वारा उनका स्वागत करवाना चाहते हैं । इसलिये हमारा निमन्त्रण आप स्वीकार करें ।

सरपंच- बाबा जी, आप का धन्यवाद मैं आज से ही सिगरेट शराब पीनी छोड़ दूंगा और आप के आदेशानुसार कार्यक्रम के समय पहुँच कर बाहर से आए आर्य विद्वानों का स्वागत अवश्य ही करुँगा और अपने सब साथियों से कराऊँगा । इसके अतिरिक्त धन का दान भी दूंगा अपने समाज को सशक्त बनाने के लिये सहयोग दूंगा । आपनेजो आज मुझे शिक्षा दी है उस का मैं बड़ा ही आभारी रहूँगा ।

(उद्‌घाटन कार्य हेतु कन्हैया लाल आर्य का पुरानी सब्जी मण्डी केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के कार्यालय में जाना ।
माननीय ब्रह्मचारी राज सिंह अध्यक्ष और श्री अनिल कुमार आर्य महा मन्त्री दोनों किसी भावी कार्यक्रम की योजना हेतु बैठक कर रहे थे ।)

आर्य- अध्यक्ष ब्रह्मचारी राज सिंह जी व श्री अनिल कुमार आर्य जी व समस्त सदस्यों को नमस्ते । आप सब कुशलता पूर्वक तो हैं ?

ब्रह्मचारी राज सिंह व अनिल कुमार आर्य —
आइये कन्हैया लाल जी, नमस्ते । आप का परिवार कुशल से तो है, आप के गांव में सब कुशलता पूर्वक होंगे । आज आप के यहाँ आने का क्या उद्देश्य है ?

आर्य- हां ब्रह्मचारी जी, आप सब ने मुझे जो कार्य सौंपा है उसी की सूचना देने आया हूँ । आप सब को याद होगा कल सायं 8 बजे श्री राधेशाम आर्य समाज मन्दिर गांव बुराड़ी वाले का आप के द्वारा उद्‌घाटन होना है । हम गांव वालो ने उस की

पूरी तैयारी करली है। केवल आप सब का समय पर आना ही बाकी है।

ब्रह्मचारी राज सिह व अनील कुमार आर्य आदि— आर्य जी, आप का धन्यवाद हम अपने साथियों सहित समय पर अवश्य ही आजायेंगे। आप थके मांदे (कमज़ोर) नज़र आते हो थोड़ा फलों का रस पीकर जाना।

आर्य- ब्रह्मचारी जी, आप सबका धन्यवाद, मैं तो अपनी भारत भूमि के पानी को ही फलों का रस समझकर पीता हूँ।

(आर्य द्वारा रंग मंच का निरीक्षण)

आर्य- दिनेश जी, नाटक के लिए मंच ठीक बन गया या अभी कुछ बाकी है। आओ चले देखें। पहलवान श्री राम किशन त्यागी जी को और शर्मानन्द त्यागी व ओम दत्त चौधरी को भी बुलालो। हम सब मिल कर देखेंगे कोई त्रुटि तो नहीं रह गई है।

दिनेश- गुरु जी मंच तो हम सब ने मिल कर ही तैयार किया है। सब को अभी बुलाता हूँ। (थोड़ी देर के बाद सब कलाकार उपस्थित हो जाते हैं। और चरण स्पर्श करते हुऐ सब ही कलाकार मिलकर नमस्ते करते हैं।)

आर्य- सब भाइयों को मेरी नमस्ते, आओ सब भाई मिल कर ही मंच का निरीक्षण करेंगे। अब सात बज गये हैं, सब कलाकार रंग मंच पर आ जाओ।

(स्त्री, पुरुष, श्रोता सब अनुसाशन से बैठे हैं। और श्री राम किशन त्यागी पहलवान के सभी शिष्य और मुन्ना लाल आर्य के सभी स्वयं सेवक रंग मंच के चारों ओर सावधान स्थिति में खड़े हैं। गणवेश-खद्दर की दोलाँघ की धोती कुर्ता कमीज सिर पर केसरिया रंग की टोपी, सफेद जूते हाथों में दन्ड लिये। नाटक मंच बहुत लम्बा चौड़ा बनाया हुआ है।)

(कलाकारों का परिचय)

सब से पहली पंक्ति में ओम दत्त, शर्मा नन्द त्यागी कवल सिंह सिसोदिया, गोपी चन्द, महाशय तोल राम हरिजन, सुनील अनिल, उस से पहली पंक्ति पहलवान रामकिशन, और मुन्ना लाल दो कुर्सियों पर बैठें हैं। फिर दोनों पंक्तियों के बराबर दो कुर्सियों पर माननीय प्रधान श्री राधेशाम और श्री ओमकार सर्कल सरपंच बैठें हैं। पिस्तोल गले में पड़ी है। मंच के दोनों अग्रभागों पर एक पर ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य दूसरी कुर्सी पर महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य हाथों में नंगी तलवार लेकर विराजमान हैं। मंच के ऊपरी भाग पर गोल चक्र में बड़े अक्षरों में ओ३म् शब्द शोभा बढ़ा रहा है। उस के नीचे एक पट पर दो लाइनों में लिखा हुआ है। कोई भी अभक्ष पदार्थ सेवी पवित्र मंच पर आकर न बैठें)

॥ नाटक आरम्भ ॥

मंच के अग्रभाग पर मेज़ पर हरमोनियम रख कर और साजों सहित स्वयं कन्हैया लाल आर्य प्रार्थना के पश्चात मानव सुधार का भजन सुनाते हैं।

तर्ज-- टप्पों वाली, स्वामी दयानन्द की जय कार करते हैं।

भाई आओ बिचार करें,

इस मानव जाति का सब मिल के सुधार करें।
जब झूंठ को समझें पाप, फिर झूठ क्यों बोले आप।
प्रभु मिलन की कार करें ॥१॥

इस मानव जाति का सब मिल के सुधार करें। मनु स्मृति रही बतलाई, । कर ओ३म् का जाप तरें ॥२॥

इस मानव जाति सब मिल के सुधार करें।
द्वादश अध्याय में वर्णन, परमेश्वर मिलन का साधन। प्रणायाम वेद अध्ययन हम बारम्बार करें ॥३॥

वायु से विचरता मन प्रभु दर्शन रोज करें। जाति वर्ण व्यवस्था नहीं, गुण कर्मों से चार वर्ण।
श्लोक मनु के प्रचार करें ॥४॥

इस मानव जाति का सब मिल के सुधार करें ॥
तेरा कहैन्या लाल आर्य रोये, बिन प्रभु दर्शन के, आंसु ओं से मुंह धोये, प्रचार करें हम भवसागर कैसे पार तरें ॥५॥

इस मानव जाति का सब मिलके सुधार करें।

दिनेश

(ओ३म् धुन भजन मधुर स्वर में सुना रहे हैं।)
ओ३म् स्तुति भजन।

सब से बड़ा ओ३म् का नाम

ओ३म् नाम से सब सुख भोग, ओ३म् से सोते जागे। पक्षी गण भी उस को सुमरें, रटलें इसे सुबह और शाम ॥१॥

सब से बड़ा ओ३म् का नाम

ओ३म् नाम से अमृत पावे, भवसागर से पार लगावे।
विषय विकारों में ना फंसना, रखना इन से मन को थाम ।।२।।

सब से बड़ा ओ३म् का नाम

ऋषि मुनियो ने है ओ३म् को गाया, जीवन अपना सफल बनाया ।
प्रथम वेद में ओ३म् ही आया, पीछे जपा राम और शाम ।।३।।

सब से बड़ा ओ३म् का नाम

ओ३म्, सुधा रस तू पीता जो, प्रेमी तू प्यो कर जीता जो ।
बिना मूल्य के नाम बिना न होता दान, इससे मिले मुक्ति का धाम ।।४।।

सब से बड़ा ओ३म् का नाम

कन्हैया लाल तू ओ३म् को ध्याले, मन मन्दिर को साफ बनाले ।
वेद धर्म पे इन भक्तों को मनालें, ये उलटे मार्ग जा रहे चाले ।।५।।

(ओ३म् भजन की धुन के बाद सब श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गुन्जा दिया। उस के बाद श्री राधेशाम प्रधान जी ने १०१ रुपया की माला श्री दिनेश कुमार त्यागी के गले में डाल कर स्वागत किया। उस के बाद सरपंच श्री ओंमकार त्यागी जी ने श्री रामकिशन त्यागी पहलवान के गले में ५०१ रुपये की माला डाल कर स्वागत किया। और कई हज़ार के नोट सरपंच जी ने सब कलाकारों के उपर बरसाकर सब का स्वागत किया।)

(सारे गांव की जनता ने दस २ हजार को माला बना कर ब्रह्मचारी राज सिंह जी का और अनिल आर्य जी का स्वागत किया।

जितनी धन राशि सारे गांव ने दान में दी उस से दुगनी धन राशि दान में इसी गांव के दस युवकों ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष श्री राज सिंह आर्य को दान के रुप में दी उन दस युवकों का परिचय इस प्रकार से है।)

वैदिक धर्म के लिए दानी दाताओं का परिचय

(१) श्री सतीश कुमार त्यागी, सुपुत्र शान्ति स्वरूप त्यागी
(२) रामफल त्यागी, भूतपूर्व सर्कलपंच।
(३) श्री यज्ञ दत्त त्यागी नम्बरदार।
(४) पं० मांगे राम कालोनाइज़र।
(५) हिन्दू भद्र श्री परमानन्द अनाड़ी।
(६) श्री नरेन्द्र कुमार राजनीतिक।
(७) श्री वासुदेव बैठकी नेता।
(८) नथ्थू सिंह सिसोदिया।
(९) श्री रतन सिंह आर्य
(१०) रिसाल बाल्मीकी।

केन्द्रीय आर्य युवक अध्यक्ष ब्र० राजसिंह आर्य का

भाषण

आदरणीय बन्धुओ माताओ और बहनो आज आप सबने हमारे वैदिक धर्म के कार्यक्रम का जो स्वागत किया है तथा तन मन और धन से सहायता दी है। मैं बुराड़ी गांव की केन्द्रीय आर्य युवक शाखा की ओर से सभी को धन्यवाद देता हूँ। आप सब ने जो धन दान दिया है, इस धन राशि

से हम और समस्त कलाकार अपने खून पसीने की कमाई से दान की राशि में और धन अपनी सामर्थ्य के अनुसार मिला कर देंगे।

और यह धन राशि श्री राधेशाम त्यागी आर्य समाज मन्दिर निर्माण कार्य में व्यय की जायेगी। आप की धन राशि आप के मानव निर्माण कार्य में ही फले फूलेगी। आप के इस मन्दिर में एक पुस्तकालय वाचनालय भी स्थापित किया जायेगा। इस में चारों वेद छः शास्त्र हिन्दी भाषा में बाइवल, कुरान, एवं सत्य को जानने के लिए सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि ग्रन्थ होंगे। इन्हीं ग्रन्थों के स्वाध्याय से आज के युवकों का भविष्य उज्जवल होगा। इसी मार्ग पर चल कर इस गांव की सभ्यता संस्कृति को उन्नत शिखर पर पहुँचाने का हमारा लक्ष्य है।

खेद के साथ कहना पड़ता है कि मैं जिस मानव शक्ति को स्थापना करने इस गाँव में आया था वह मुझे न के बराबर मिली है। मैं आप की गाँव की शिवाजी शाखा में ५०१ युवक नित्य प्रति दिन देखना चाहता हूँ। और वे युवक ऐसे हों जैसे आप सब के सामने श्री अनिल कुमार आर्य मन्च पर खड़े हैं। इसी प्रकार से आर्य समाज को करोड़ों नव युवकों की आवश्यकता है इन शाखाओं द्वारा देश भक्ति, शारीरिक शक्ति तथा विज्ञान का प्रशिक्षण शिवरों द्वारा दिलाया जाता है।

आर्य समाज का लक्ष्य है सारे विश्व के लोगों को आर्य बनाना क्यों कि आनार्यों की बढ़ोतरी से ही सारे विश्व का भविष्य अन्धकारमय बनेगा।

आर्यो का मुख्य कार्य ईश्वर कृत वेद विधान का प्रचार करना और उस के अनुसार ही नव युवकों की शक्ति बढ़ाना। क्यों कि मानव कृत सम्प्रदाय विश्व के विनाश का कारण बनता जा रहा है। जैसे मानव कृत धर्म पुराण कुरान, बाइवल और अनेक मत मतान्तर एक दूसरे के जान के लेवा हैं इसी कारण सारी दुनियाँ में युद्ध के बादल मंडराते दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

इस लिये अपने आर्यवर्त्त देश को आर्य राष्ट्र घोवित कराना है। क्यों कि यह प्राचीन ऋषि मुनियों की यज्ञ भूमि है। इस ही भूमि से सारे विश्व के मनुष्यों को मानव ज्ञान विज्ञान मिला था। इस का प्रमाण वेद स्वत: प्रमाण हैं।

उपरोक्त ज्ञान विज्ञान की जानकारी हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ द्वारा मिली है।

हम सब उपरोक्त कार्य को पूर्ण कर के ही ऋषि दयानन्द जी की अमर आत्मा को शान्ति पहुँचा सकते हैं और हमें यह अटूट विश्वास है कि उपरोक्त कार्य को आप अवश्य पूर्ण करेंगे क्यों कि हम आशावादी हैं निराशावादी नहीं हैं। वह आर्य ही नहीं जो निराशावादी हो।

मैं आप सब श्रोताओं से यह आशा करता हूँ कि आप कल से नित्य प्रति हर घर से अपने युवक युवतियों को शाखा के निर्धारित समय पर भेजने की सलाह देंगे। जिस प्रकार से हम अपने गृहकार्यो के लिये समय देते हैं। उसी प्रकार से

हम शाखा के लिये भी समय दें। तभी हमारे घर, ग्राम, नगर, देश. धर्म की रक्षा हो सकती है और उस का उपभोग सुख शान्ति से कर सकते हैं। इस के विपरीत करेंगे तो उपरोक्त सब कुछ विनाश होते ही देखेंगे।

(सब ओर तालियाँ)

गांव की सभा के कुछ श्रोताओं के ब्रह्मचारी जी से कुछ प्रश्न ।

श्रीमान राजसिंह जी आपने देश भक्ति का बड़ा अच्छा उपदेश दिया है आपको धन्यवाद परन्तु आप हमें यह बताने का कष्ट करें कि आज की इस भयानक महंगाई में किस के पास इतना समय है कि वह दो घन्टे प्रति दिन अपने युवकों को शाखा में भेजे। गुजारा करना ही कठिन हो रहा है और फिर हम तो गांव के रहने वाले कृषक हैं हम तो चौबीसों घन्टे कुछ न कुछ करते रहते हैं। किसी कवि का कहना भी है :-

इस दुनियाँ के दो रक्षक हैं, एक प्रभु एक हाली।
ये दो शक्ति ऐसी हैं, जो कभी न रहती ठाली ॥

इस लिये श्री राज सिंह आर्य जी, हमारी तो सलाह है कि हर महीने हमारे गाँव में यदि अपने कार्यक्रम में फिल्म डाँस भंगड़ा डाँस, लखमीचन्द की रागनियों का प्रदर्शन कराते रहें तो राधेश्याम आर्य समाज जैसे दस मन्दिर बनवा सकते हैं क्योंकि हमारे यहाँ की जन संख्या १५-२० हजार की हैं यदि प्रति आदमी २ रुपया भी देगा तो ३०-४० हज़ार रुपये तो एक कार्यक्रम में हो मिल जाया करेंगे।

ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य :-

मेरे भाइयो मैंने आप सबको ऋषियों की भारतीय सभ्यता संस्कृति प्रचार करने की सलाह दी है। आपने मुझे उस के विपरीत सलाह दी है। आप की सलाह का उत्तर हमारे महामन्त्री अनिल कुमार आर्य देंगे।

श्री अनिल कुमार आर्य जी का भाषण-

पूजनीय माताओ बहनों एवं भाइयो,

अभी-अभी आप सभी के सामने हमारे अध्यक्ष माननीय ब्र० राजसिंह जी ने प्राचीन सभ्यता संस्कृति की और ऋषि के कार्य को रूप देने की सलाह आप सब को दी है। यदि इस कार्य को अनदेखा कर दिया तो यह सत्य है कि इस दुनियाँ में जो मानव कृत मतों की आँधी आ रही है। यह ईश्वर कृत वेद धर्म का विनाश कर देगी।

क्योंकि मानव कृत मतों में कहीं भी कोई स्थान चारों ऋषियों आदित्य, वायु अग्नि से लेकर ब्रह्मा, विष्णु महेश राम, कृष्ण की सभ्यता संस्कृति का नही है! यह जो आपने भयानक महंगाई का ज़िकर किया है यह भी वेद धर्म न मानने से ही है।

अब आपके प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है, आप का कहना है महंगाई के कारण वश गृह की व्यय पूर्ति नहीं हो तो शाखा में जाने का समय नहीं मिलता। तो क्या आप बता सकते हैं इस भयानक महंगाई में शादी विवाहों में ३०-४० हजार रुपया खर्च कहाँ से आता है? शराब सिगरेट दिन में कई कई बार सेवन करने के लिए कहाँ से पैसा आ जाता है? मैं आपके गांव के नवयुवकों को कई कई बार बत्तरा सिनेमाघर के

सामने लाइनों में खड़े देखता हूँ। उस समय पैसा कहाँ से आता है और सारो सारी रात आप फिल्म डांस भंगड़ा और सांग देखते हैं जब महंगाई है तो उस समय पैसा कहां से आ जाता है ? इस प्रकार के खेल तमाशे देखने से मान मरयादा का धन बल का, बुद्धि का नाश हो जाता है आप वैज्ञानिक दृष्टि से देख सकते हो।

इन कारणों से ही भ्रष्टाचार, चोरी, जारी, रिश्वतखोरी चोरबाज़ारी हो रही है। नकली भगवान बनाकर उसकी पूजा करवाकर भोले भाले आदमियों से धन ठगना होता रहे तो वह दिन दूर नहीं है, जो हजारों बर्ष से इस देश की खोई आजादी जो मिलो, इस देश के अनार्यो के हाथों में चली जायेगी। पहले की तरह से श्रेष्ठ मनुष्यों को फिर न्याय नहीं मिलेगा।

जिस प्रकार हम गृहस्थ पालन में धन और समय लगाते हैं। उसी प्रकार देश, धर्म की रक्षा में समय लगाना युवकों और युवतियों का कर्तव्य है। तब ही मनुष्य समाज का सुख शान्ति का द्वार खुल सकता है। इस लिये सत्य को जानने के लिये सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कीजिये और अपने जीवन को सफल बनाइये।

अनिल दिनचर्या

(१) प्रातः ४ बजे उठकर नित्य कर्म निवृत्ति
(२) प्रातः ६ बजे से आठ बजे तक शाखा कार्य।
८ बजे सन्ध्या करके दूध सेवन।
प्रातः १० बजे से सायं ५ बजे तक गृहकार्य।

६ बजे सायं से १० बजे सायं तक आर्य बन्धुओं के पास से धन एकत्रित कर के समाज कार्य में लगाना और रविवार को सारा दिन समाज कार्य में व्यतीत होता है।

इस लिए जिस प्रकार से आप के गृहस्थ कार्य में व्यवस्था है उसी प्रकार देश, वेद धर्म कार्यों में व्यवस्था रहना अति आवश्यक है। अन्यथा संसार के मनुष्यों का भविष्य अन्धकार मय होता जायेगा।

श्रोताओं ने तालियाँ बजा कर श्री अनिल कुमार आर्य जी के भाषण का स्वागत किया।

आर्य मंच

कन्हैया लाल आर्य-

मंच पर कलाकार नाटक का प्रदर्शन कर रहे हैं और चालीस पचास युवक गाँव के केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के सदस्य बनने के लिये लाइनें बना कर खड़े हैं। हजारों पुरुष देवियाँ सभा में बैठे है अनुशासन में एक भाग में पुरुष दूसरे भाग में देवियाँ बैठी हैं। बीच में आने जाने का मार्ग है। बड़े आनन्द से नाटक देख रहे हैं।

श्री तोखराम आर्य (हरिजन) बड़ी सुरीली तरज़ में हारमोनियम बजा रहा है। श्री शर्मा नन्द त्यागी अपने बनाये भजन बड़ी सुरीली आवाज़ में गा रहे हैं।

भजन संख्या (3)

तर्ज-- सावन का महीना पवन करे शोर।

वैसे तो करें भक्ति, पर मन में बहता पाप।
उन का रे क्या होगा अब तुम ही सोचो आप ॥

मुँह में राम राम और बगल में छुरी।
ये तो लगे हमने भाई बात रे बुरी।।
न होती इच्छा पूरी करते झूठा जाप ।।१।।

माथे पर तिलक और हाथ माला।
चेहरा भोला भाला पर मन है काला ।।
पीते भर भर प्याला वे बैठ के रोज़ शराब ।।२।।

मन्दिर में जायें पर चोरी की नियत रहे।
भूखे सच्चे ने धमका दे वे इसे प्रीत कहें ।।
जुबांन पर गन्दे गीत रहे वे ज़हरीले काले साँप ।।३।।

कहे शर्मा त्यागी सब देखे परमात्मा।
वैसे उन्हें फल सब देवे जैसी उनकी आत्मा ।।
अधर्म का करो खात्मा करो लाईन धर्म की साफ़ ।।४।।

श्री कवल सिंह सिसोदिया अपनी मोटी आवाज़ में अछूतों को उधर भजन सुना रहा हैं।

॥ दोहा ॥

जाति मनुष्य की एक है, बतलाते चारों वेद।
गुण कर्मो से चार वर्ण विषय ना समझे यह भेद ।।

॥ भजन ॥5॥

स्थाई- भाई खुद ही करो बिचार, नीच पन क्या है चमार में।
अन्तरा-पशु खेंचें और चमड़ा उतारे, ना ये किसी जीव को मारे ।।
फिर शर्मिल क्यों हत्यारों में ।।१।। भाई खुद ही करो विचार

गऊ काटें हैं रोज़ कसाई, उन से लो तुम हाथ मिलाई।
गैरत जरा तुम्हें नहीं आई, रहे नहीं किन्हीं बिचारों में ।।२।।

सब्जी बेचें है मुसलमानी, दे छिड़का मसक का पानी।
झट नहीं हैं इस में जानी बैठी रहे बाज़ारो में ॥ ३ ॥

गन्दे रहते हैं हलवाई, उन की खालें रोज मिठाई।
रोटी जो होटल में खाई कोई तो बोलो सारों में ॥४॥

हस्पताल की दवाई खाते, नल का पानी पी इतराते।
अण्डे केक कबाब उठाते ना बचता कोई हजारों में ॥५॥

छूत छात को छोड़ो भाई, इस में रहें नुकसान उठाई।
बढ रहे मुसलमान, ईसाई, स्वयं फँस रहे विकारों में ॥६॥

चार आश्रम, चार वर्ण, हैं, ना समझे भाई यही भरम है।
इन चारों की जाति एक है, ना आओ पापों के बहकाने में ॥७॥

कवल सिंह, शर्मानन्द त्यागी नित नये २ भजन बना रहे।
कन्हैया लाल कहे मिल गया इन का सहारा भजन गाऊँ हरिजन प्यारों में

श्री रतन सिंह आर्य (हरिजन) का तीव्र आवाज़ में भजन।

॥ संकल्प गीत ॥ 6

हम आर्य वीर हैं आर्य वीर, दुनियाँ में धूम मचा देगें।
मुरझाये जीवन कानन में फिर सुन्दर फल खिला देंगे ॥

हम सीखे आगे बढ़ना, संकट में पैर नहीं हटना।
हम बाधाओं से टक्कर लें, विपदा को दूर भगा देंगे ॥१॥

चाहे कांटे भी आयें मार्ग में, चाहे कितने घाव लगें पग में।
हम वीर देश के बालक हैं, निष्कंटक मार्ग बना देगें ॥२॥
तूफानों से टकरायेगें, सागर को भी तर जायेंगे।
हम देश धर्म सेवा हेतु, अपना सर्वस्व लगा देंगे ॥३॥
जब देश पे आपद आयेगी, अपना ही चक्र चलायेगी।
हम मातृ भूमि की रक्षा में, हँस हँस के शीश कटा देंगे ॥४॥

॥ प्रार्थना ॥

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्त्तव्य मार्ग पर डट जायें।
पर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जायें॥
छल छिद्र द्वेष पाखन्ड झूठ, अभिमान से निशि दिन दूर रहें।
कर जीवन शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा हर्षा जायें ॥१॥
हम दीन दुःखी निर्बलों विकलों के सेवक बन सन्ताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके उन को तारें खुद तर जायें ॥२॥
निज आन मान मर्यादा का प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जायें ॥३॥

(उस के बाद चौधरी ओमदत्त ने हनुमान का रुप धारण किया हुआ है कलाकारों कीरक्षा हेतु। हाथ में गदा ले कर मंच के अग्रभाग पर बैठा है और लोगों को दूर २ तक देख रहा है और कभी २ हुकार भी मार देता है। सब श्रोता उस को देख कर प्रसन्न हो रहे हैं।)

सारी सभा आनन्द ले रही है। परन्तु कुछ असामाजिक लोग जल भुन कर राख हुए जा रहे हैं। उन में से एक व्यक्ति ने सभा का रंग भंग करने हेतु योजना बनाई है। उस ने अपने सिर के बाल तो पहले से ही बढ़ाये हुए थे।

डाढ़ी, मूंछ, नकली लगाकर, दोनों लाइनों के बीच में आ कर बैठ गया ।)

उस के बराबर एक नवयुवती बैठी थी। उस गुन्डे ने उस नवयुवती के ऊँगली लगा दी। उस नव युवती ने बड़ी तेज़ी से उठकर उस के मूँछ पर वड़े ज़ोर से मुक्का मार दिया। और इस की नकली मूँछ दाढ़ी उतार कर जनानी सभा में फैक दी। और उस के सिर के बाल पकड़ कर एक और मुक्का बड़ी ज़ोर से मुँह पर मार दिया। उस के एक दाँत निकल कर दूर जा पड़ा।

वह युवती बड़ी तीव्र आवाज़ में सारी सभा को सम्बोधित करते हुए बोली। आप सब अनुशासन से बैठे रहे ये गुन्डा सभा भंग करना चाहता था। इस के लिए मैं एकली ही काफी हूं। इसे पकड़ने की कोशिश ना करें अन्यथा सभा भंग हो जायेगी उस नवयुवती ने उस गुन्डे के एक और मुक्का मार कर सभा से बाहर कर दिया।

श्री राम किशन त्यागी पहलवान के पठ्ठे और श्री मुन्ना लाल आर्य के स्वयं से एक सावधान स्थिति में खड़े हैं। और चौधरी ओम दत्त हाथ से गदा घुमाते हुए अपने गुरु से आज्ञा लेना चाहते है उस गुन्डे को पकड़ने के लिये उस के गुरु ने और पहलवान ने, और नुन्ना लाल ने इस लिये आज्ञा नहीं दी। क्यों कि उस देवी ने बड़ी तीव्र आवाज़ में यह कह दिया था की इस गुन्डे को पकड़ने से सभा भंग हो जायेगी।

यह गुन्डा कौन था कल के कार्यक्रम में इस के साथी और इस का नाम सारी सभा के सामने बता दिया जायेगा।

(परदा गिरता है)

(रंग मंच दूसरा दिन परदा उठता है प्रार्थना के बाद)

विषय- सामाजिक कार्य कर्ताओं की कठिनाइयाँ

मंच प्रवक्ता आर्य।

।। भजन—प्रार्थना ओ३म् की ।।6।।

तर्ज— रघु पति राघव राजा राम

नर नारी सब प्रातः शाम।
भजलो प्यारे ओ३म् का नाम ।।
ओ३म् नाम का पकड़ सहारा, वो ही है सच्चा पिता हमारा।
वो ही है मुक्ति का धाम ।।१।।
कैसा सुन्दर जगत रचाया, सूर्य, चाँद, आकाश, बनाया।
गुण गाता है जगत तमाम ।।२।।
पृथ्वी और पहाड़ बनाये, नदियाँ नाले खूब चलाये।
बिन कर कर्म करे निष्काम ।।३।।
ऋषियों मुनियों ने है गाया, अन्त किसे ना उस का पाया।
हम सब करते उस को प्रणाम ।।४।।
मन अपने को शुद्ध बनाओ, विषय विकारों से बच जाओ।
वेदों का ये ही फरमान ।।५।।
हीरा जन्म गवाओ ना तुम, लाल, ज़रा घबराओ ना तुम।
सन्ध्या करो सुबह और शाम ।।६।।

कन्हैया लाल आर्य- श्री हतास सिह ने योजना बनाई एक बन्द कमरे में गुप्त मीटिंग की, रात के ११ बजे हैं। उसने

अपने सारे सदस्य बुलाये हुए हैं। मैं उन सभी सदस्यों के नाम बतादूं क्यों कि मैं इस मंच का प्रवक्ता हूँ।

॥ सदस्य सूची ॥

१- श्री हतास सिंह।	९- श्री अतरा बुद्ध।
२- ,, सुभास कलंक।	१०- ,, मुन्ना राज।
३- ,, रमेश नं० १।	११- ,, जय प्रकाश।
४- ,, रमेश नं० २।	१२- ,, अमर बाल्मीक
५- ,, रमेश नं० ३।	१३- ,, धन्ना (कबीरा)
६- ,, जसवंता कालोनाइजर	१४- ,, भ्रष्ट सिंह।
७- चौ० श्री कुमार सिंह	१५- ,, राम फला।
८- ,, हरिया सिंह।	

बैठक का स्थान जसवन्त (कालोनाइज़र) का घर समय रात्री ११ बजे चौधरी शिव कुमार सिंह को छोड़कर सभी सदस्य बैठें हैं।

श्री हतास सिंह—

भाइयो! हमारे सभी सदस्य आ गये हैं परन्तु हम सभी में जो खास सदस्य है वो नहीं आया है। मैं कई बार बुलाने के लिये जा चुका हूँ। भाइयो, उस का आना बहुत ज़रुरी है। जिस कार्य के लिए यह मीटिंग बुलाई है उस के बिना पूरी नहीं होगी क्यों कि वह करोड़पति है अब मैं श्री जसवन्त सिंह कालोनाइज़र जी से प्रार्थना करुँगा कि आप ही चौधरी जी को बुला कर ला सकते हो क्यों कि चौधरी करोड़पति है और बिना धन के कोई योजना सफल नहीं हो सकती।

श्री जसवन्त सिंह कालोनाइज़र—

भाई हतास सिंह जी आप बिलकुल न घबराइये मैं अभी चौधरी जी को बुलाकर लाता हूँ। मेरी उस से बहुत पक्की यारी है। मैंने अभी पिछले महीने उस के दो लाख के प्लाट हाल पर बिकवाये थे और मैं और वह दोनों कई बार बत्रा हाल पर जहां एक रैस्टोरेन्ट भी है, वहां हम दोनों उसी के खर्च से नंगा डांस देखने गए थे और वहाँ इंगलिश बीयर भी खूब पी थी, और बढ़िया भैंस का मीट भी खाया था और जो आनन्द वहाँ लिया इसे यहाँ बताना ठीक नहीं समझता हूँ।

(थोड़ी देर में जसवन्ता चौधरी को लेकर मीटिंग स्थान पर आ गया)

चौधरी— सब भाईयों को राम-राम आज मुझे कैसे याद किया है मेहरवानी कर के बताओ। सारे सदस्य खड़े थे। चौधरी जो को राम-राम करके चुप बैठ जाते हैं।

श्री हतास सिंह आखों में आँसू भर के खड़ा हो जाता है और अपना भाषण शुरु करता है। चौधरी साहब और भाइयो मेरी आज सब से हाथ जोड़ कर विनती है कि जब तक मैं अपनी दुःख भरी कथा सुन ता रहूँ तब तक और कोई भाई न बोले।

भाइयो! बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे गाँव का हिन्दू सनातन धर्म खतरे में पड़ गया है यह तो आप सबको मालूम ही है कि हमारे इस धर्म को खतरे में डालने वाला एक ही आदमी है और वह कन्हैया लाल आर्य है। सारे गाँव में वैदिक धर्म का प्रचार करवा रहा है और सनातन हिन्दू धर्म

को खतम करवाता जा रहा है। देखिये हम सब हिन्दू धर्म का प्रचार करने के लिए जनाने घरों में भोले बाबा भगवान की और देवी मैया की मूर्ति लगा कर खूब मज़े से कथा कीर्तन करा करते थे। काफी रुपया आया करता था। अब सारे गाँव में हम से कोई कीर्तन नहीं करवाता। भाइयो ये हम सब के लिए बड़ी दु:ख की बात है।

आज आप सब भाइयो को इस लिये इकट्ठा किया है। और अपनी पुरानी बातों को याद दिलाने के लिये भी आप को तकलीफ़ दी है। यह तो आप सब को मालूम ही है कि हम सब ने अपने हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिये अपने इस गाँव में राम लीला कमेटी सन् १९६८ में बनाई हमारे में कोई हारमोनियम बजाना नहीं जानता था। हम सबने मज-बूरी में इस कन्हैया लाल को शामिल कर लिया था। क्यों कि यह हारमोनियम बजाना जानता था और हम इसे मूर्ति पूजक भी बनाना चाहते थे।

जब हम राम लीला करते थे सारा गाँव देखने आया करता था और १५-२० हज़ार रुपया मज़े से दान के नाम के मिल जाया करते थे। हम सब कलाकार और यार दोस्त गणेश के पूजन के बाद परदे की ओट में चार पाँच बीयर की बोतल उड़ा लिया करते थे। फिर स्टेज पर जा कर ऐसी राम लीला खेला करते थे कि ऐसी सारे हिन्दुस्तान में कोई खेल नहीं सकता।

(हतास सिंह आँखों से आँसू टपकाते हुए कहने लगा) आप सब को पता नहीं मालूम है या नहीं परसों हमारे ही गाँव में राधेश्याम आर्य समाज मन्दिर के स्थान पर उस कन्हैया लाल

पाखण्डो ने बड़े जोर का जलसा आर्य समाज का करवाया था। हमारे गाँव के लोगों ने ६०,००० रुपया दान में दिया। भाइयो, मैं उस अन्याय को होते हुऐ देख नहीं सकता। मैंने एक यौजना बनाई। मैं नकली दाढ़ी, मूंछ लगा कर अपने मुँह पर उस जलसे को भंग करने के उद्देश्य से मर्द लुगाइयों के बीच में जा बैठा। मैंने सोचा मैं किसी बोरबानी के ऊँगली लगाकर अपनी मूँछ दाढ़ी उतार कर फैंक दूंगा। और पब्लिक में मिल जाऊँगा। हा होला मच जायेगा। सभा भंग हो जायेगी।

एक औरत घूंघट काढ़े बैठी थी मैंने उसी के बगल में अपनी ऊँगली लगा दी। उस ने मेरा हाथ बड़ी मजबूती से पकड़ कर मेरे मुँह पर बड़े ज़ोर से गुट (मुक्का) मारे। मेरा एक दाँत तो वहीं टूट कर गिर गया था और उसने दाढ़ी मूंछ उतार कर पब्लिक में फैंक दी मैं छुड़ाकर भागने को कोशिश करने लगा तो ये जो कम्बखत मेरे सिर के बाल बढ़ा रखे है उसने बड़ी मजबूती के साथ पकड़ लिये और उसने ज़ोर-ज़ोर से लैक्चर देना शुरु कर दिया और कहने लगी आप सब बैठे रहें इस गुन्डे के लिए मैं अकेली ही काफी हूँ यदि आप इस को पकड़ने के लिए चले तो सभा भंग हो जायेगी। भाइयो मैं बड़ी मुश्किल से जान बचा कर अपने घर आया।

भाइयो, मैंने आप को यहाँ बुलाकर इस लिये कष्ट दिया है कि ये जो पाखण्डी कन्हैया लाल आर्य है, इस का पाखण्ड यहाँ राम किशन पहलवान के बल पर चल रहा है। वरना इसे मेरे यार दोस्त स्टेज पर खड़ा भी न होने दें। और

मुन्ना लाल तो है किस खेत का बथुआ ।
अगर हमारे चौधरी श्री कुमार सिह कोई लालच दे कर राम किशन पहलवान को इस पाखण्डी के खिलाफ कर दे तों हमं सब हिन्दू धर्म की रक्षा फिर से कर सकते हैं। सब खड़े हो कर चौधरी जो से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं । और

रमेश नं0 1 कहने लगा–

आगे देखिए—

भाई हतास सिह अगर चौधरी जी ने हम सब की प्रार्थना सुण लई तो उस ने तो तेरा एक दाँत तोड़ा है, मैं तो उस बीरबानी को चौधरी जी के कदमों में लाकर पटक दूंगा । बस एक बोतल चाहिए मुझे तो ।

रमेश नं0 2-अरे यार मैं तो इस पाखण्डी को पहले से ही जानता हूँ । मैंने तो इस की कई बार बेइज्जती करी है । मैं तुम्हारी राम लीला में एक बोतल शराब पी कर आया करता था । और वहाँ बैठा करता था जहाँ रामायण बांची जाती थी, न आप चौपाई गाता था और न किसी और को गाने देता था । इस पाखण्डी ने एक बार मेरी ओर को आँख काढी थी । मैंने दूसरे दिन ही अपने यार को पूरी एक बोतल पिला कर लाया, उस के सिर में मैंने एक पत्थर लगवाया था । और जब उस के भतीजे ने ज़ोर भरा तो अपने यारों से खूब धरवाया था, वह मेरा अब तक कुछ भी नहीं बिगाड़ सका है । ये सब बातें सन् १९७६ की है ।

रमेश नं0 3- भाइयो, मैंने तो हमेशा के लिए इस पाखण्डी का टिकट काटने की योजना बनाई थी सन् १९८१-८२ में ।

मुझे तो ऐसे लोगों की बेज्जती करने के लिये वेद विरोधी मतों से पैसा भी मिलता है। आप में से कोई चाहे तो आप को भी दिलवा दूँ।

जो मैने इस की बेज्जती करनी थी वो इस प्रकार से करनी थी उस के भतीजे के मकान के सामने मैंने राम लीला कराई और उस आर्य पाखण्डी को पार्टी का गुरु बनवाया उस को हम सब ने माला डाली। उसी दिन मेरी योजना उस के सिर में जूते लगवाने थे अपने खिलाये पिलाये दोस्तों से परन्तु क्या बताऊँ उस रामकिशन पहलवान ने मुझे मौका ही न दिया। उस के पट्ठे पहलवान वहीं लठ्ठ लिये बैठे रहे।

सुभास कलंक— भाइयो, मैंने तो इस पाखण्डी को चारा काटने की मशीन ही चोरी से रात को अपने चार साथियों के सहयोग से चुराली थी, मेरा ये कुछ भी नहीं बिगाड़ सका।

जसवन्ता कालोनाइज़र-- भाइयो। मैंने तो इस पाखन्डी की चकबन्दी के दौरान इस की जमीन की कीमत सब से थोड़ी लगवाई और कीमत में लेने नहीं दी। लाल डोरे में सब की ज़मीन की स्कीम कीमत डेड़ रुपया थी। इस को लाल डोरे की कीमत मैंने १ आने लगवाई इस ने पेट भर के कार्वाही की पर इस को सफलता नहीं दी और इस को गोबर कूड़े के लिये प्लाट भी नहीं लेने दिया इस की कायमी में से भी मैंने चकबन्दी पास होने के समय दो बिषवा ज़मीन कटवादी।

अतरा बुध्दू- भाइयो, इस पाखन्डी को जब आप सब ने राम लीला कमेटी का अध्यक्ष बनाया था मैं तो तभी से इससे चिड़ा हुआ था क्योंकि अध्यक्ष मुझे बनना था मैं आयु में इस से बड़ा था मैंने तो अपना बदला उसी वर्ष चुका लिया था। स्टेज पर अपना एक यार खड़ा कर के ६ रुपया दान में से उठवा लिया था और गाँव के जूते इस के सिर पर पड़े।

मुन्ना राज- भाइयो ,इस पाखन्डी को राम किशन पहलवान ने खाँडेशवर मन्दिर सम्मति का मेम्बर बनवा दिया ये तो दूसरे दिन ही पन्च बन कर कहने लगा मन्दिर भूमि जिन लोगों ने दबाई है सब से ही छुटनी चाहिये। मैंने इसको भी और रामकिसन पहलवान को भी, दोनों को भगा दिया और सम्मति से नाम भी कटवा दिया क्यों कि मन्दिर भूमि हम ने भी दबाई हुई थी।

जय प्रकाश- भाइयो, मैंने तो इस पाखन्डी से ५० रुपया नजर के चश्में के लिए उधार लिया था आज तक एक पैसा दिया नहीं करले मेरा जो करेगा मैंने लिख कर दे राख्या है।

अमर बाल्मीक- भाइयो, ये पाखन्डी मेरा रिस्ते में चाचा लागे से पर अपने गाँव में इस की चौधर तो मैं भी देखना नहीं चाहता हूँ क्यों कि सूवर का गोस्त और शराब पीने खाने की मेरी भी आदत है। यो यूँ कह रहा था, मांसाहारी और शराबी को राम लीला कमेटी में सदस्य नहीं रहना चाहिये यो आप मनु महाराज बना डोले से। भला यो हमें कैसे रोक सकता है। मैं अगले साल अपनी राम लीला की न्यारी पालटी बना कर खेलूंगा। देखें मैंने कोण रोके साले, का सिर फोड़ दूंगा।

यो कन्हैया तो है किस खेत का बथुवा हम तो सरकार को हिला कर धर दें।

धन्ना-कबीरा :-

भाइयों मैं तो उस कन्हैया लाल आर्य पाखण्डी के पेट में सूधो जूतियों बड़ गया था। मन्ने बड़े करुणां स्वर में उस से कहा महाशय जी आज तो घर में बालक दो दिन से भूखे बैठे हैं। यो फट बोल्या चाल तने रामरूप मित्तल बनिया से उधार नाज चून दिवा दूँ। मेरी जब तक पार बसावेगी तेरे बच्चों को भूखे नहीं मरने दूँगा।

मैं तो चार पांच महीने उधार खाता रहा मैंने बनिया को इक फूठी कौड़ी दई नहीं फिर बनिया ने उसी से वसूल पाये। यो मरा करले के करेगा।

सुरेश कुमार :- भाइयो सबसे तगड़ी बात मेरी सुनो। यू पाखन्डी मेरे भाई सुधीर पर रोब ज़माकर कहने लगा पिछले वर्ष की यदि तू शराब पीनी नहीं छोड़ेगा तो हम तुझे रामलीला कमेटी से निकाल देगे। मैंने तो उसी दिन कसम खा लई थी कि इस गांव से इसकी चौधर खतम करनी है। हमारे गांव में रामलीला हो रही थी यो पाखण्डी स्टेज पर ही बैठा था। मैंने जाकर इसके चरण छू लिये। उस ने मेरे सिर पर हाथ फेर के अपने ही पास बैठा लिया और मैंने कहा गुरूजी मैं आपके चरणो का ही दास रहना चाहता हूँ। इनके घर भी मेरा आना जाना हो गया। इसकी छोरी सुब्बो थी १२-१३ वर्ष की।

उसको उड़ाने की योजना बनाने लगा । और इस पाँखन्डी के एक छोरा था उसे बीड़ी सिगरेट पिलाने की आदत गेरी और फिर एसी नसीली बीड़ी पिलाई कि इस के छोरे का पढ़ना लिखना उसके ज़हर से सब छूट गया और इसकी छोरी मेरे बहकाये में आ गई थी । उसके बाप को किन्ही सुत्रों से पता लग गया उसका गोंणा करके उसको ससुराल भेज दिय। इस लिये भाई मेरी योजना फेल हो गई ।

ब्रह्मा नऊवा :– भाइयो थारा पाखण्डी कन्हैया मेरे दो वर्ष पहले यूँ बोल्या कि भैया मेरा पैसा कोई नहीं रख सकता । मेरा परमात्मा सब वसूल कर लेता है । मैंने इसकी लकड़ी ईन्धन दुकान में सांझी होकर ५०० रुपया चुकता किया यो और इस का भगवान ले लो मेरे से ।

रामेशर आगरी :- भाइयो इस थारे पाखण्डी की ताकत तो मेंने भी नापके देख राखी है । मेरा झोटा चोरी हो गया था और इसकी बोगी चोरी हो गई थी । उसके ढूँढने में खर्च उसी का ही लगा । मेरे बांटे में ६५ रुपया आए थे । मेंने तो एक कौड़ो दई नहीं ! अब तो उसने मांगना भी छोड़ दिया है ।

पूर्ण आगरी :- भाइयो तुम इस पाखन्डी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सके । सुनों सब बहादुरी की मेरी बात । मेरा काम दूसरों का रुपया कर्ज खा कर न देना है । कहता साफ हूं । अब से पांच वर्ष पहले मैं बड़ा भोला बनकर इसके पास मज़दूरी करने आया ६ महीना मैंने बड़ी इमानदारी से काम किया यो मेरे

से खूब खुश हो गया। मेरे ६ बालक एक घर वाली है हम किराये पर रहा करते थे। इसने बिना किराये ही अपना बाहर का मकान दे दिया और मुझे खाने कमाने के लिये झोटा बोगी मोल लेकर दे दी मैंने के काम करना था। २-३ हजार रुपया कर्ज़ के रूप में इसी से लेकर खाता रहा।

और एक दिन अपनी वहू से मिलके इस के उस घर का मालिक बनने की योजना बनाई। मैंने अपनी वहू को खूब बढ़िया वढ़िया टूम कपड़े पहरा कर घर में बैठाकर इसके घर जा कर कहा बाबा आज तो बच्चों की माँ को तकलीफ है। आप दवा गोली तो जानते ही हैं जरा घर जाकर देख आना ! आपकी बड़ी मेहरबानी होगी। तो इस ने कहा बहुत अच्छा मैं देख आऊँगा। मैं तो खेत में चला गया और ये मेरे घर को चला गया मैं अपने सारे बच्चे साथ ले गया था।

मेरे घरवालो ने बताया, जब आर्य जो हमारे घर आये और उन्होंने मेरे से पूछा आप को क्या रोग है। तो मैंने घूँघट में से मुँह दिखाकर मुस्कराते हुए कहा मुझे प्रेम रोग है क्या आप ठीक कर देंगे और बर्फी दूध का गिलास मेरे हाथ में था। तब आर्य जी ने कहा बहिन जी में आप के रोग का उपचार नहीं कर सकता और ये कहकर चला गया कि बहिन जी नमस्ते,। भगवान आपको सद् बुद्धि दे।

दूसरे दिन मुझे मेरे बच्चों सहित एक पहलवान कीं सहायता से उस घर से निकाल दिया और ये कह दिया कि मेरे जो कर्ज़ के रूप में तेरे पर ढाई हज़ार बिना ब्याज के रुपया है जब तेरे से बन जाए दे देना मैंने तो आज तक दिए नहीं है। अब कमन्द पुर गांव में रहता हूँ।

राजेन्द्रा :- भाइयो मैंने भी उस पाखण्डी के खेत का डोता (लाइन) तोड कर साले पर खूब रोब जमाया था। उस की जुबान बड़ी चले है मेरे से कहने लगा मेरा ही डोला तोड़ा और मेरे पर ही रोब। उल्टा चोर कोतवाल को डांटे मास्टर कालीराम से पूछ लो।

हतासर्सिह : देखो भाइयो अब सब चुप हो जाओ अब रात के ३ वज गये हैं। चौधरी शिव कुमार सिह जी सो गये दीखे हैं। उनको जसवन्त जी जगाओ। अव तो यही हमारे मार्ग दर्शक हो सकते हैं।

चौधरी : भाइयों में सो नहीं रहा हूँ। आप सब की बातें सुण रहा हूँ। अब आप मेरी बात सब ध्यान से सुणों देखों भाई मैं तो करोड़पति हूँ और अरब पति वनने का मेरा लक्ष है।

मैं तो गाँधी वादी हूँ धर्म निपेक्षता का मेरा सिद्धान्त है। मेरी तरफ से कोई धर्म फलो फूलो, या खतम हो जाय। मुझ तो अपने लक्ष की पूर्ति को देखना है। परन्तु आप लोगों के जिकर करने से पुरानी बात याद आ गई है। जब आप लोगों ने मेरा साथ दिया था।

भाइयों आप को याद होगा सन १९७८ की बात है। मैं चौधरी ओमदत्त जी को साथ लेकर उस पाखण्डी कन्हैयालाल आर्य के धर गया था और वहां जाकर मैंने उस को खूब घमकाया भी था मैंने उसे कहा तू ही हमारी रामलीला कमेटी का मनु महाराज है तो मेरे से बोला क्या बात हो गई है भाई जो आप इतने अप्रसन्न हो। तो मैंने कहा हरिया सिह

लक्ष्मण का पाट बड़ा बढिया खेला करता था आपने उसे पार्टी से क्यूँ निकाल दिया। अरे भाई मेरे से बोल्या भाई उसने अपनी ही गाँव की एक कुवारी कन्या (लड़की) से भ्रष्ट कार्य की चेष्टा में लिप्त पाया इसलिये उस को सारी सम्मति की राय से निकाल दिया और मैं समझता हूँ वह अच्छा ही किया था।

मैंने कहा सम्मति कोन होती है निकालने वाली। जैसी हरिया सिंह ने छेड़ खानी की है ऐसी तो सारी दुनियाँ करती है। उसे आप को पार्टी से नहीं निकालना चाहिये था।

ओमदत्त चौधरी के सामने की बात है उस से पूँछलेना वो पाखण्डी मेरे से कहने लगा 'मेरे से यदि आपके ऐसे विचार हैं, तो आप गाँव का तो क्या सुधार करोगे आप तो अपने घर का भी सुधार नहीं कर सकते हो।"

भाइयों मुझे उस की बात सुण कर बड़ा गुस्सा आया मैं उस को सुधारता तो वहीं पर आप सब भाइयों ने उसे कमेटी का अध्यक्ष बनाया हुआ था सर्व सम्मति से। मैं उस समय मजबूर था। परन्तु मैं उस के घर से यह कह कर चला आया, की गाँव और घर को तो मैं बाद मैं सुधारुँगा पर तुझे जरुर सुधार दूगा कुछ दिनों में।

उस के बाद आप भाइयों क सहयोग से उस पाखण्डी को उसके अध्यक्ष पद से हटा कर उस की खब बेइज्जती की। और उस वर्ष बड़े गट से गाँव में हम सब ने रामलीला खेली नोट खूब आये। उस के बाद आप को याद होगा हम सब ने एक-एक अंग्रेजी बीयर बोतल बड़े डाट से सबने मिल बैठ के

पी थी। एक साथी तो नशे में हलवा की भरी परात हो लेकर अपने घर चला गया।

अब गलती तो आप लोगों की है उसे दोबारा सर्वसम्मति से अपनी कमेटी का अध्यक्ष क्यूँ बनाया है।

हतास सिंह और सब की एक साथ आवाज़े।

हम उस को कभी अध्यक्ष नहीं चुनते।

परन्तु क्या करे वो कमबखत रामकिशन पहलवान और चौधरी ओमदत्त शर्मानन्द त्यागी, यज्ञदत्त नम्बर दार जसवन्त भगत जी शर्मा, अतर सिंह इन सबने दोबारा सब को जोर देकर उस पाखण्डी को अध्यक्ष बना दिया है और अब ये सारे उसी के साथ हैं।

चौधरी- देखो भाइयो मैंने तो उस से उसी वर्ष अपना बदला चुका लिया था। और मेरा वो आज तक कुछ भी नहीं बिगाड़ सका है। और नही मेरे विरुद्ध वो कोई बगावत करता है। फिर भी मैं आप भाइयों की बात पर विचार करुँगा। वैसे तो मुझे जिस पार्टी से फायदा होता है मैं तो उसी को अटेन्ड करता हूँ।

बाहर से एक आवाज़ आती है

नाटक ग्राम दर्शन का ही भाग

एकता पार्टी

वारता :- मीटिंग समाप्त होने वाली ही थी। क्यों कि रात्रि के ४ बजने वाले थे। परन्तु बन्द कमरे का किसी ने कुन्डा बाहर से खड़खड़ाया। और दो व्यक्तियों की आवाज़े आई। "कुन्डा खोलो"

हतास सिंह - कौन भाई नरेन्द्रा जी और भाई सुभाषा जी आप

आप इस टाइम कैसे आये सेवा फरमाइये।

नरेन्द्रा- हाँ भाई हम दोनों आप सब को हमारी राम-राम देखो आप भाइयो ने हमे बुलाया तो नहीं था परन्तु हमे किन्हीं सूत्रों से आप की मिटिंग का पता चल गया था। हम दोनों आपके चौधरी साहब के बाद ही आकर बाहर बैठकर आप सब भाइयों की पूरी बातें सुन चुके हैं।

ये तो आप सबों को मालूम ही हैं मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूं यहाँ तो मैं आकर कुछ दिनों के लिये बस गया हूँ। यहाँ के एकता पार्टी का अध्यक्ष हूँ और मेरे साथ मेरा दोस्त सुभाषा है जो एकता पार्टी का उपाध्यक्ष है। और आप के गाँव का ही रहने वाला है।

अब मैं आप से यह बताऊँगा कि हमें आप की बातें सुनने का क्या मतलब था :—

उस कन्हैया लाल आर्य से जो आपको परेशानी है। वह भी हमारे एकता पार्टी का है। किसी कवि ने कहा भी है कि :-

दुश्मन का दुश्मन दुनियां में अपना होता प्यारा।
शायद इस मौके पर भाई बने जो काम हमारा।।

॥ हल ॥

दुश्मन से दुश्मन को कभी न मिलने दें ॥

॥ दृष्टान्त ॥

प्रवक्ता :-जैसे मुसलिम राज्य के आगमन समय में जयचन्द व मोहम्मद गौरी, पृथ्वी राज चौहान के जानी शत्रु थे। उन

दोनों के मिल जाने से चौहान राज्य के साथ-साथ भारत की स्वतन्त्रता भी समाप्त हो गई थी, इतिहास पढ़ें ।

नरेन्द्रा- भाइयो मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ यदि हमारी दोनों **पार्टी** एक हो गई तो इस कन्हैयालाल एकता पार्टी को भी इस के द्वारा बड़ा लोश (घाटा) पहुंच रहा है। क्योंकि इस गाँव में कोई भी जो प्रोग्राम करता हैं वह २५ परसैन्ट हमारी पार्टी को देकर कर सकता है परन्तु यो पाखन्डी अपने प्रोग्राम से हमें कुछ भी नहीं देता और हमारे पर रोब भी जमाता रहता है और सब से अधिक दान में रुपया इस के प्रोग्रामो मैं यहाँ के लोग देते हैं ।

अब मैं आप भाइयों को अपने एकना पार्टी के नियम सुनाना चाहता हूँ । सब को बड़ा आराम देकर सुख चैन की बन्सी बजाई जा सकती है जो इस प्रकार से हैं ।

।। नियमावली ।।

१. हमारी पार्टी औरत जाति को सड़क के सामान समझती हैं इसे कोई भी यूज़ कर सकता है ।

२. हमारी पार्टी का कोई भी कार्य करता रात्रि के दस बजे के बाद यदि चाहे तो शराब, मीट, फ्री खूब खाओ ।

३. जो हमारे कार्यकर्ता के हुकम को नहीं माने उस पर झूठा इल्जाम लगाकर उस को खूब पीटो ।

४. रात के आठ बजे से दस बजे तक हाथों में झण्डा लेकर तीन रंग का हर गली मोहल्ले में देवी जी की जय के नारे लगाओ।

५. हमारे गांव में यदि कोई किसी प्रकार का खेल तमाशा करता हो तो उस की आधी आय हमारी पार्टी को दे ।

हतास सिंह - भाई नरेन्द्रा जी अगर आप के पहले नियम का किसी के माँ बाप को पता लग जाय तो आप क्या करेंगे।

नरेन्द्रा – देखो भाई हतास सिंह जी, पहली बात तो ये है कि कोई भी लड़की का मां बाप अपनी बेइज्ज़ती की वजह से हम पर कार्यवाही नहीं कर सकता है और यदि करेगा भी तो हमारा ऐडवोकेट श्री जय सिंह जो पूरा सात फुट लम्बा जवान है और आधा फुट लम्बी मूँछे रखता है। डेढ मीटर की गोलाई का पेट है। जब वह दिल्ली की किसी अदालत में बहस करने के लिये जाता है तो पूरी एक इंग्लिश बीयर पी कर जाता है। वहां उस का इतना रोब है कि अदालत के सामने जो कुछ भी कहता है सारी बातें उस की मान ली जाती हैं। वह पहले तो बीतल का लालच देता है यदि कोई न माने तो आंखो की ऐसी घुड़की देता है कि डरियाये का पैन्ट में ही पेशाब निकल सकता है। फिर हमें डर किस का है और फिर हर पावरफुल पार्टी से हमारा लिंक होता है। केवल आर्य समाज में ही हमें स्थान नहीं मिला है। इसलिये अब मैं यह जानना चाहता हूँ आप भाइयों की क्या राय है ?

(सब चुप बैठकर विचार कर रहे हैं ।)

उपाध्यक्ष श्री सुभाषा का भाषण :-

भाई नरेन्द्रा जी आपको मालूम नहीं है कि श्री हतास सिंह की पार्टी चुप क्यों बैठी है। मुझे सब मालूम है। देखो भाई हतास सिंह जी शायद आप हमारी पार्टी को कमज़ोर समझ रहे हैं। परन्तु हम कमज़ोर नहीं हैं हम तो अच्छे अच्छे का मुंह फेर देते हैं। आपको मालूम नहीं है कि मैं कितने त्याग, बलिदान के बाद इस पार्टी का उपाध्यक्ष बना हूं। सुनो पहले तो मेरा परिचय सुनो। मेरे वड़े भी उत्तर प्रदेश के निवासी थे रल गाँव में से तो मेरा दादा आया था उस का एक नावलद रिश्ते दार था मेरे दादा ने उस की पाँच सौ बीघा ज़मीन पर कब्जा किया घर घेर भी उसको फ्री फन्ड में मिल गये। मेरे बाप हर तीन भाई थे उन्होंने भी अपनी आयु में कुछ नहीं किया। खूब आनन्द लिये। खूब ज़मीन बेचकर खाई। अब हम कई भाई हैं। ज़मीन की माटी बेचकर सारे खूब शराब उड़ाते हैं और आनन्द ले रहें हैं।

मैं एकता पार्टी का जिस त्याग बलिदान के द्वारा उपाध्यक्ष बना सुनो। एक दिन का ज़िकर हैं मेरे से भाई नरेन्द्रा कहने लगा यार तू हमारी पार्टी का सदस्य बन जा। मैंने कहा भाई मुझे अध्यक्ष बनावे तो बन सकता हूँ।

नरेन्द्रा जी ने कहा यदि तू पूरे एक वर्ष शराब पीकर सारे गली मोहल्लों में सारे गांव की मां बहिनों को गाली दे और तेरा कोई मुकाबला ना कर सके तो मैं तुझे अपनी पार्टी का उपाध्यक्ष वना सकता हूं। मैंने इसकी शर्त मन्जूर कर ली। अपने चार साथी लेकर पूरे एक वर्ष सारे गाँव की माँ

बहिनों को गाली हर गली मोहल्ले में दी। सन् २५-८-१९८१ को पूरा वर्ष हो गया। मैंने नरेन्द्रा जीं से कहा अब मुझे उपाध्यक्ष बनाओ। नरेन्द्रा जी ने कहा ये तो मैंने मान लिया कि आप सारे गाँव के विजयी नेता है। परन्तु उस कन्हैया ल ल आर्य पाखन्डी की गली में कभी नहीं गया, जो हमारा पक्का दुश्मन है।

मैंने उसी टाईम अपने चार साथी बुलाये और एक बोतल पीकर उसकी गली में एक हरिया कन्डेरे को छाती में टक्कर मारी वह बेहोश होकर गिर गया। उसकी घर वाली सुन कर मुझे गाली देने लगी, मैंने उस को भी मारना शुरू कर दिया।

पता नही उस कन्हैया पाखन्डी ने पीछे से आकर मेरे मुँह पर ज़ोर से चांटा मार दिया मुझे चक्कर आ गया। उसके बाद मेरे साथियों ने उसको पीछे से अन्धेरे में कोली भरकर खरंजे पर दे मारा वह तो बेहोश हो गया। और मैं भागकर अपने घर में अपनी मां के जनाने कपड़े पहनकर घर में ही छुप गया। और मेरे हेलफर भी नौ दो ग्यारह हो गये। उस पाखन्डी के साथियों ने मुझ पीटना चाहा। परन्तु उनकी मेरे घर में घुसने की हिम्मत नहीं पड़ीं।

उसके बाद किसी ने १०० नम्बर पुलिस को टेलीफोन कर दिया एक घन्टे में ही पुलिस आ गई। पहले तो मैंने पुलिस को चकमा दिया अपनी मां के कपड़ें पहन ही रखे थे उसकी बोली में मैंने कहा जी सुभाषा ने हमें बरबाद कर दिया, अब

न जाने क्या लिखा है भाग्य में। मैं खुद ही कल किसी से पकड़वाकर आप पुलिस के हवाले करवा दूँगी। परन्तु उस पाखन्डी के साथियों ने मुझे थोड़ी ही देर में पकड़वा दिया। पुलिस ने अपनी चौकी में ले जाकर मेरी हड्डी पसली मार मार के एक एक तोड़ी और मेरा चालान कर दिया। उस से दूसरे दिन मेरी जमानत हो गई ।

मैं उसी दिन अपने सेठ कालाधन के पास जाकर उसके चरणों में पड़कर खूब रोया और मैंने कहा मैंने आपकी इतने दिन सेवा की है आज मेरी मदद करके उस पाखन्डी से बदला दिलाएं। उस सेठ ने फोन किसी पुलिस आफिसर को करके उससे कहा कन्हैया लाल आर्य पाखन्डी को पकड़वा कर और साथ में उसके भतीजे प्रकाश को पकड़वा कर पुलिस के द्वारा खूब पिटवाया। अब उसकी हिम्मत नही वो मेरी ओर के लखा भी ले। वो तो चौधरी कल्याण सिंह ने राधेश्याम के कहने से छुड़वा दिया वरना बच्चू जेल की रोटी खाता।

इसलिए भाई हतास सिंह जी आप अपनी जो भी कठिनाइयां हैं उन सबको हमारे अध्यक्ष श्री नरेन्द्रा जी से कहो। आपको सन्तोष जनक उत्तर देंगे।

हतास सिंह - भाई नरेन्द्रा जी हम सब इसलिये चुप बैठे हैं कि हमारे गाँव में आर्य समाज का इतना जबरदस्त प्रचार उस पाखन्डी ने करवा दिया है कि सारा गाँव ही आर्य समाज की बाते ठीक मानने लगा है। एक जसवन्त भगत जी ही बाकी बचा है।

देखो परसो जो श्री राधेश्याम आर्य समाज मन्दिर में उस पाखन्डी ने नाटक खिलवाया था। सारे गांव ने मिलकर दान में ६००००/- (साठ हजार) रुपया दिया था, साठ हजार। अब भाई नरेन्द्रा जी तू ही बता। जब सारे गांव ने उसको इतनी धन राशि देकर उसकी बातों को माना है तो क्या वह गांव तुम्हारे घास डालेगा।

नरेन्द्रा - देखो भाई हतास सिंह जी, अगर आप सभी साथी मेरी पार्टी में शामिल हो गए तो मैं आप सब को यह विश्वास दिलाता हूँ जो ६००००/- (साठ हजार) रुपया उस पाखन्डी को दान में मिला है वह सारा रुपया हमारी थारी जेबों में आ जायेगा।

देखो मेरे बाप से जो एक सम्गलर ने एक बीघे ज़मीन एक लाख रुपया अपना काला धन छुपाने के लिए ली है उस रुपये का मैंने मकान बनवाया है। आधा रुपया मेरे बाप के पास बाकी है। उस मकान के गेट के बाहरी भाग पर मैंने स्वामी दयानन्द की मूर्ति खुदवाई है।

मैं पढ़ता लिखता तो हूँ नहीं मैंने दिल्ली कालेज, यूनिवर्स्टी में मैंने दो स्थानों पर बोगस बी. ए. में दाखिला लिया हुआ है। वहां स्वामी अग्नि वेश ने शहीदों की स्मृति में नवयुवक एकता पार्टी नाम से पार्टी बनाई हुई है। उसी के द्वारा मुझे मेरे गाँव का अध्यक्ष नियुक्त किया हुआ हैं।

मैं अपने गाँव में आर्य समाज का जलसा करवाऊंगा और स्वामी अग्निवेश को बुलबाउँगा। उस कन्हैया लाल आर्य पाखन्डी के नाम झूठे इल्ज़ाम लगाकर मैं खूब तगड़ा भाषण

दूंगा। वह साठ हजार रुपया आपकी और मारी जेबो में आसानी से आ जायेगा।

हतास सिंह – भाई नरेन्द्रा जी यदि उस पाखन्डी ने आपकी स्टेज पर आकर आपसे स्पष्टीकरण मांगा तो आपके पास कोई उत्तर है।

नरेन्द्रा - यार, सुनो उस कन्हैया लाल आर्य का यह नियम है कि वह किसी स्टेज पर बिना निमन्त्रण के नहीं जाता है। चाहे उसके खिलाफ कोई कुछ भी कहे। मैं उस के इस नियम का फायदा उठाउंगा। यदि इतने पर भी बात नहीं बनेगी तो मैं अपने कालेज के स्टूडेन्टों से उस के खिलाफ प्रदर्शन करवाऊँगा।

हतास सिंह - भाई नरेन्द्रा जी आपको हमारा सबका धन्यवाद। अब हमें विश्वास हो गया है कि तू ही हमारे सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा कर सकता है। हम सब तेरे साथ हैं। क्योंकि कालेज के लड़कों से तो हमारी सरकार भी इतना डरती है जितना किसी जमाने में बजरंग बली हनुमान से लंका वाले डरा करते थे।

नरेन्द्रा - भाई हतास सिंह और साथियो आप सबको मेरा थैंक्यू। अब मेरे साथियो ध्यान से सुनो मेरे कल के प्रोग्राम की योजना। उस पाखन्डो के मकान पर हम सब मिलकर रात के आठ बजे चलेंगे। और उस के साथ मज़ाक उड़ाकर उस

को उत्तेजित करेंगे। आप सब चुप बैठकर देखते रहना। मैं खुद ही उससे बोलूंगा। ओर उस के बाद हम सब मिल कर जल्से की योजना बनायेंगे।

॥ दूसरा दिन स्थान कन्हैया लाल आर्य का मकान ॥

उसके साथी और नरेन्द्रा – अरे भाई महाशय जी राम राम।

कन्हैया लाल आर्य - आओ भाई नरेन्द्रा जी और सब भाइयो आप सब को मेरी नमस्ते।
अब मेरे लिये क्या सेवा है मुझे आप सभी भाई बताने की कृपा करें। मेरे योग्य कोई सेवा होगी तो मैं अवश्य करुँगा।

नरेन्द्रा - भाई ताऊ सेवा तो कुछ नहीं करवानी है हम तो आप को समझाने आये है। बड़े बडेरे कहते आये है की हिन्दू की अक्कल बुढापे में खराब हो जाती है सो आपकी अक्कल खराब हो गई है। तू देश भगत बना डोले है और हमारे जैसे नौजवानों के रास्ते का रोड़ा बन रहा हैं के तुझे ये आर्य समाजी इस देश का राष्ट्रपति बना दंगे।

तेरी साठ साल की उमर हो गई है खाने पीने की तेरे घर में कोई कमी नहीं है घेर तेरा रोड पर है खा पी मौज उडा तेरे लिये हम कोई बांकी लौंडी वहीं ला दिया करेगें तेरी सेवामें इसलिये तू अपनी आदत से बाज़ आजा।

कन्हैया लाल आर्य - भाई नरेन्द्रा जी आपने अपनी बुद्धि के अनुसार जो सोचा है उसे आप ही ठीक मान सकते हैं। परन्तु मेरी बुद्धि के अनुसार यह विरोधाभास दृष्टि गोचर होता है।

क्यों कि सेवा करने के लिये मेरी धर्म पत्नि कान्ता देवी है। और मेरा एक पुत्र आनन्द दत्त त्यागी नाम का है जिसने अपने सब आनन्द त्याग कर मेरी सेवा करता रहा है और अब भी करता है।

परन्तु अब मेरी इच्छा दूसरी है कि जिस मातृभूमि में मैंने जन्म लिया है यदि मेरे इस शरीर की मिट्टी देश के काम आ जाये तो में अपने आप को धन्य समझूँगा इसलिये एक कहावत भी है। सुनो।

हैं कहावत एक मुसाफिर, मार्ग से कर रहा गति।
पक्षी बैठे थे तरु में, अग्नि लग रही थी अति।।

(वन को जलते देख कर पथिक कहने लगा)

आग लगी इस वृक्ष में, जले डाल और पात।
तुम क्यों जलते पक्षियो, जब पंख तुम्हारे साथ।।

(विहंगमो का कहना)

बात सुन कर के पथिक की, अब विहंगम कह रहे।
सुने है भाई तू पथिक, क्यों इस के संग हम दह रहे।।

फल खाये इस वृक्ष के, बीठ लथेड़े पात।
धर्म हमारा है यही, जल मरें इसी के साथ।।

नरेन्द्रा - अरे ताऊ बूढ़े तेरे क्या कहने है शेर तो खूब जोर का सुनाया।

प्रवक्ता - नरेन्द्रा के साथी सब हाहुल्ला मचा कर सब खिल खिला उठते है।

नरेन्द्रा और उस के साथी एक साथ-

उरे ताऊ हम सब की माग है आप अपनी हारमोनियम पर

हम सब को एक रागनी लखमी चन्द कि और सुना दे तू तो बड़ा चाल बाज बूढ़ा है। हाँ भाई पुराना खुरपा रुरांट है।

कन्हैयालाल आर्य- हाँ भाई मैं लखमी चन्द की रागनी तो नहीं जानता पर अपने बनाये भजन या अपने गुरु भीष्म के बनाये सुना सकता हूँ।

नरेन्द्रा- सुणावे भी तू अपने बनाये या अपने गुरु के हमारा खामाखा टाइम खराब कर रहा है। हमें अपने सैर सपाटे में जाना है हमारा टाइम हो गया है।

तर्ज - हमतो आनन्द अपना मनायेंगे
स्थाई- तुम्हें सैरो सपट्टे बिगाड़ते हैं।
अन्तरा- अपने आप को तुमने पहचाना नहीं।
सृष्टि रचयिता की आज्ञा को माना नहीं॥
स्थाई- हरदम हंसी और ठट्टे बिगाड़ते है॥१॥

आप फैशन परस्ती के चक्कर में फंस।
सुवाँग थेयटर सिनेमों की टक्कर में फंस॥
दोस्त होकर इकट्ठे बिगाड़ते हैं॥२॥

दोस्त अन्डे कबाबी शराबी मिले।
कोरे कंगाल करते नवाबी मिले॥
ऐसे उल्लू के पट्ठे बिगाड़ते हैं॥३॥

नशे करवा के जेबें काट रहे जो।
गुन्डा शाही के मालिक बने लाट जो॥
ठग चोरो उच्चके बिगाड़ते हैं॥४॥

चाट चट पट पकोड़ी छुके तेल में।
सिरका ओर प्याज, लहसन पिसे तेल में।
रगड़ा पट्टी सिल बट्टे बिगाड़ते हैं॥५॥

आये बाबाजी उनके सतसंगी बने ।
गाँझा सुल्फा पी कर के भंगी बने ।।
गुरु भीष्म ये पट्ठे समाज को बिगाड़ते है ।।६।।

नरेन्द्रा- ओ बूढ़े तू क्या समझता है अपने आप को हम सब को अपने घर बुलाकर हम सब की बेइज्ज़ती करता है । तूने हम सब को उल्लू का पट्ठा और सूअर का पट्ठा कहा है । देख कान खोल के सुन ले तू किस खेत का बथुवा है तेरी तो इस गाँव में से जड़ उखाड़ कर फेंक देंगे समझा ।
चलो रे अपने घर को इस को एक दो दिनों में कबर तैयार करनी होगी ।

।। सम्पूर्ण ।।

।। ओ३म् शान्तिः ओ३म् शान्तिः ओ३म् शान्तिः ।।

।। ओ३म् ।।

मेरे मन का दान प्रभु चरणों में सप्रेम सादर समर्पित

ओ३म् भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः । ओं तपः । ओं सत्यम् । (तैत्ति 10/26)

(मेरी प्रिय उपदेश भजन माला १०८)

।। प्रथम भाग ओ३म् महिमा ।।

पारब्रह्म परमात्मा, कर दो हृदय में प्रकाश ।
नमः गुरु भीष्म जी के ज्ञान का रहूँ हमेशा दास ।। १३ ।।

ओ३म् ओ३म् जपता रहूं सुबह और शाम ।
बुरे कर्म से हे प्रभु मेरी बुद्धि को दे थाम ।। १४ ।।

॥ ओ३म् की स्तुति ॥

मब से बड़ा ओ३म् का नाम ।
ओ३म् नाम से सब दुःख भागे, ओ३म् नाम से सोते जागे ।
पक्षीगण भी उसको सुमरें रट ले इसे सुबह और शाम ॥
सबसे बड़ा ओ३म् का नाम ॥ १ ॥

ओ३म् नाम से अमृत पावे, भवसागर से पार लगावे ।
विषय विकारों में ना फँसना, इस रस से मन को थाम ॥
सबसे बड़ा ओ३म् का नाम ॥ २ ॥

ऋषियों मुनियों ने है गाया, जीवन अपना सफल बनाया ।
प्रथम वेद में ओ३म ही आया, पीछे जपा राम और शाम ॥
सब से बड़ा ओ३म् का नाम ॥ ३ ॥

ओ३म् सुधा रस तू पीता जा, प्रेमी तू पीकर जीता जा ।
तेरा व्यय ना होता दाम, इससे मिले मुक्ति का धाम ॥
सब से बड़ा ओ३म् का नाम ॥ ४ ॥

कन्हैया लाल तू ओ३म् को ध्याले, मन मन्दिर को साफ़ बनाले ।
वेद धर्म पे इन को मनाले, ये उल्टे मार्ग जा रहे चाले ॥
इनको ज्ञान ओ३म् दे थाम ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

आर्यों की परिषद हो दुनियाँ में, तब ही न्याय हो सकता है ।
अनार्यों को आर्य बना कर, आर्य राष्ट्र हो सकता है ॥

॥ भजन ॥

ले ओ३म् का झण्डा हाथों में, दुश्मन पर बढ़ते जायेंगे ।
लेकर उगते रवि की लाली, नित्य बसन्ती की हरियाली ॥
वह ले ले लहरें आता है, धरती के जागे भाग चलो ॥ १ ॥

जब गोली गोले बरसेंगे, यह सिर कट कट कर सरसेंगे ।
हम मौत के भीषण आंगन में, हंस हंस के खेलें फाग चलो ।।२।।

पर्वत से कहदो नम जाये, सागर से कह दो थम जाये ।
यह एक बनाने दुनियाँ को उमड़ा है अनुराग चलो ।। ३ ।।

जब प्रेम सचाई विद्या का, यह झन्डा बाँका लहराया ।
हिन्सा पाखन्ड अविद्या से, कहदो अब तुम भाग चलो ।। ४ ।।

कन्हैया लाल बुराड़ी वाले का, कहना है वेद मतवाले का ।
है देश हमारा आर्यो का इसे आर्यवर्त्त बनाने चालो ।। ५ ।।

ओ३म् ही जीवन हमारा, ओ३म् प्राण धार है ।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालन हार है ।।

ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सर्वदानन्द है ।
ओ३म् है बल तेज धारी, ओ३म् करुणा कन्द है ।।

ओ३म् सब का पूज्य है, हम ओ३म् का पूजन करें ।
ओ३म् ही के ध्यान से हम, शुद्ध अपना मन करें ।।

ओ३म के गुरु मन्त्र जपने से, रहेगा शुद्ध मन ।
बुद्धि दिन प्रति दिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन ।।

ओ ३म् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जायेगा ।
अन्त में वह ओ३म् हम को, मुक्ति तक ले जायेगा ।।

(मेरे कुछ मित्रों ने मुझ से कहा कि आप हमें कुछ ज्ञान दो मैंने कहा मैं आप भाइयों को क्या दे सकता हूँ ? ऋषियों ने तो ओ३म् को ही पुकारा है ।)

॥ दोहा ॥

ईश्वर करे की आप की, इच्छा हो फलवान ।
मैं क्या दूंगा आप को, देंगे श्री कृपा निधान भगवान ।।

॥ भजन ॥

स्थाई - एक ओ३म् नाम मुख से निकले, बस यही हमारा नारा है।
अन्तरा - सृष्टि के रचाने वाला तू, और फूल खिलाने वाला तू।
स्थाई - सब जगत रचाने वाला है, बस ये ही हमारा नारा है।

बादल गर्जे बिजली चमके, और छम छम मेंह बरसता है।
नदियाँ नाले सब लहराते, बस ये ही हमारा नारा है॥

सागर के तट पर खड़ा हो के, कोई जब देखे तेरी माया को।
बड़े बड़े जल चर वहाँ गरजते है, बस ये ही हमारा नारा है।२।

॥ दोहा ॥

जो कुत्ता दर-दर फिरे, दर-दर दुर-दुर होय।
एक ही दर का हो रहे तो दुर-दुर करे ना कोय॥

॥ भजन ॥

स्थाई - तू बन ओ३म् का हामी, वो है अन्तरयामी, सब का स्वामी
ले उस ही का सहारा।

अन्तरा - वो रहता सब के संग, जैसे दूध में घृत और हिना में रंग
भूल गया तू मिलने का ढंग।

अन्तरा - कर जाप सदा, हो दुःख बिदा, दुनियाँ में सदा एक ओ३म्
शब्द ही आधारा।

वना ओ३म् को हामी ऋषि दयानन्द, काट गया भारत वर्षके फन्द,
ओ३म् ने मूलशंकर से बना दिया दयानन्द।
आज भारत वर्ष, रहा ऋषि के दर्शन को तरस
पर चलता ना कोई चारा॥ २॥

जगत गुरु शंकराचार्य बने थे ओ३म् हामी
विश्व ने मान लिये वह स्वामी।

वे करते रहे सदा योग अभ्यास वेदों का प्रकाश
वह जगत गुरु था हमारा ॥ ३ ॥

कन्हैया लाल तेरी करनी कथनी ना एक, तू अपने आप को ले देख
तू कर गायत्री मन्त्र का जाप, हो पाप माफ,
फिर जगत भक्ति से प्यार करे सारा ।४।

॥दोहा ॥

वहुत भजा पर ना मिला, मुझ को तेरा धाम।
मुझ गिरते को परमात्मा, ज़ल्दी से ले थाम ॥

॥ भजन ॥

तर्ज– हरियाणा

तेरी दया दृष्टि के बिना नहीं चलता कोई चारा।
हार लिया झक मार लिया, लिया आखिर तेरा सहारा।
पापी बनवा ले तू महल अटारी, धर्मी रह जाते निर्धन दीनदुखारी।
भगवान तेरी दुनियाँ में देख लिया खूब नज़ारा।
शुभ कर्मों के करने वाला ही रोता है बिचारा ॥१॥
अपमान गरीबों का हो, यहाँ होता है,
पाप, पाखण्ड, झूठ अन्याय यहाँ फलता है।
यदि कोई भी सन्मार्ग पर चलता है बिचारा।
काँटो से भरा मार्ग उस का होता है सारा ॥२॥

हे प्रभु दिखा वो ऐसा चमत्कार,
जो पापी की नौका डूबे मझधार ।
तेरे नाम का आनन्द ले फिर दुःख मिट जाए सारा ।
श्री राम, लक्ष्मण से भाई हों फिर स्वर्ग बने घर हमारा ।३।

चिन्ता मत करना मेरे साथी,
धर्म गति नेक कर्मो से आती ।
निन्दक तो तेरे दोषों को धोता है सारा ।
कन्हैया लाल वेद प्रचार में लगा दे जीवन सारा ।।४।।

॥ दोहा ॥

पाप बढ़ा है देश में दुखिया मनुष्य महान ।
भगत तेरे जाये कहाँ दीन बन्धु भगवान ।।

॥ भजन ॥

अन्तरा - जाऐं तो जाँये कहाँ ओ३म् मेरे,
भगत तेरे दुःखी है यहाँ ।
स्थाई- सत्य युग में हिरण्यकुश, को मारा, धर्म रुप को दिया सहारा ।
अब फिर भेजो भगत प्रह्लाद यहां ।।१।।

॥ जायें तो जायें कहां ॥

त्रेता युग में पाप बढा यहां, श्री राम जी भेज प्रभु यहाँ ।
अब फिर पाप बढा जग में, जाँयें तो जांयें कहाँ ।। २ ।।

ओ३म् मेरे भगत तेरे दुःखी है यहां ।
द्वापुर युग में श्री कृष्ण पधारे, अत्याचारी कंस से मारे ।
अत्याचार अब बढ़ा है यहां ॥ ३ ॥

द्वापुर युग में ही दुःशासन संघारा, सति द्रोंपदी को दिया सहारा।
आज हजारों द्रोपदी रोती यहां ।। ४ ।।
कन्हैया लाल को मान प्रभु देवो, देवे प्रभु जी अब जल्दी देवो।
हम हैं यहां और तुम हो कहाँ ।। ५ ।।

।। भजन ।।

तर्ज— उठ भोली जाति
स्थाई - हे परम पिता हम दोनों पर तू ही दया दे कर ।
अन्तरा - समझे थे तेरी दनियाँ में, मेल से खाये कमायेगे ।
स्थाई - परन्तु आपस के झगड़ों ने दिया हम को तंग कर ।। १ ।।
हम ऋषियों के जापों का पिता यदि मेल कर देवो ।
तो वो ही पहले जैसे ऊँचे काम देवे कर ।। २ ।।
अपने ऋषियों की भारत यज्ञ भूमि को हम स्वर्ग बनाना चाहते हैं।
गर हो दया तेरी तो पूर्ण दिखायें कर ।। . ।।
जिस ओर देखता हूँ प्रभु है रोशनी तेरी ।
तेरी रोशनी के ज्ञान को समझें देवो वो वर ।। ५ ।।
प्रभु जो ये भीख माँगते हम तेरे दर खड़े ।
इस भारत वर्ष हमारे को फिर से गुलज़ार कर ।।६।।
खड़ा कन्हैया लाल है ये द्वार पर तेरे ।
दे ज्ञान की मुझे भीख पाकर जो जाऊँ में तर ।। ७ ।।

।। प्रथम भाग पूर्ण ।।

।। दूसरा भाग, उपदेश के भजन ।।

तर्ज - ।। आनन्दी ।।
गुरु भीष्म का शिष्य हूँ मैं, उन के चरणों मे शीश झुकाता हूँ।

दूसरा भाग, उपदेश के भजन

तर्ज

आनन्दी ॥ 26 ।

प्रभु भक्ति की भीख माँग कर, अपना दिल बहलाता हूँ ॥
सौन्दर्य मेरा लुट चुका, अब शरीर में पिन्जर बाकी है।
सुनाने के लिये इस आत्मा में, उपदेश की बातें बाकी हैं ॥

भजन ॥ 28 ॥

अन्तरा - भाई देखो अजब तमाश ईश्वर लीला का।
बिन कर कर्म करत है सारी पृथ्वी लीला का ॥
कहीं पहाड़ वन हैं भारी कहीं बहें समुन्दर खारे।
यह देखो खेल दुनियाँ वाले का ॥ १ ॥
धन दौलत उसी की माया, ओ मूर्ख क्यों गरमाया।
एक दिन उड़ जायेगा तोता तेरे पिन्जरे का ॥२॥
जो नर बुरे कर्म से डरता, ओ ईश्वर के दर्शन करता।
बचा जाता है चक्र चौरासी लाख का ॥ ३ ॥
क्यों कन्हैयालाल घबराता, कोई सुकर्म कर तू भ्राता।
तू शिष्य है भीष्म ब्रह्मचारी का ॥ ४ ॥

तर्ज :- रघुपति राघव

भजन ॥ 29 ॥

स्थाई - ओ३म् ओ३म् बोलो मन से जब तक प्राण रहें तन में ॥

अन्तरा - उसी ओ३म् का पकड़ सहारा, ऋषियों ने भी उसे पुकारा
पाप अति लोभ से मुँह मोड़ो मन में ॥ १ ॥
यहाँ कोई ना रह सकता भाई, पाप कर्म की करो न कमाई।
क्यों परमपिता को रहा भूल मन में ॥ २ ॥

दुनिया में कुछ रहने वाले, मुँह के झूठे मन के काले ।
सत्यता की टोह ले मन में ॥ ३ ॥
कन्हैयालाल झूठों की झूठी माया, गुरु भीष्म के ज्ञान में पाया।
वैदिक धर्म को मान मन में ॥ ४ ॥

दोहा ॥ 30 ॥

मन उस राही तू चालिये, देख सजन खुशी होय ।
उस राही ना चालिये, देख दुःखी सब होय ॥

तर्ज : बिगड़ी बनाने वाले

भजन ॥ 31 ॥

बिगड़ी भारत की फिर से बना दे ।
आशा हमारी के फ़ल खिला दे ॥

अन्तरा - इधर भी तू ही है, उधर भी तू ही है ।
स्थाई– जायें किधर हमको रास्ता बता दे ॥ १ ॥

ना रहे आर्य ब्रह्मचारी, ना रहे सदाचारी ।
हमको फिर से सदाचारी बना दे ॥ २ ॥

प्रभु भेज स्वामी, दयानन्द सा कोई ।
जो आकर वेदों की बन्सी बजा दे ॥ ३ ॥

बढ़ते जा रहे शराबी माँसाहारी और अत्याचारी ।
मानवता का इनको पाठ पढ़ा दे ॥ ४ ॥

भिखारी कन्हैयालाल खड़ा दर पर तेरे ।
ज्ञान की भीख देकर मुक्ति दिला दे ॥ ५ ॥

तर्ज : आनन्दी ॥ ३२ ॥

वैज्ञानिक दृष्टि से देखो तो, संसार एकता होती है ।
कपोल कलपित भवानायें तो, बीज फूट का बोती हैं ॥

संसार का मालिक एक ही है, सूरज जल पृथ्वी एक ही हैं।
दोषी को दो दण्ड निर्दोषों की रक्षा नेक ही है ।।

भजन ।। 33 ।।

गौ जननी करे पुकार सुनो रे भारत वासी ।

अन्तरा - एक समय इस देश में होता था मेरा मान ।
नित उठ मेरे को पूजें थे खिलावे थे धन-धान ।।

स्थाई - बसें थे यहाँ गुण वासी ।। १ ।।

खा पीकर घी दूध दही, होते थे बलवान ।
आज बिना दूध दही थी बिगड़ी सबकी शान ।।
हुए सब दुःख के ग्रासी ।। २ ।।

भारतवासी जागियो गऊ माता करे पुकार ।
दुखड़ा मुझ पर है घना, रोऊ ज़ार बे ज़ार ।।
गले में पड़ रही फाँसी ।। ३ ।।

हाय जरा सुनते नहीं सो गये आँखे मीच ।
दुष्ट कसाई ले जा रहा मुझे हत्थे में खींच ।।
तुम्हें आवे हँसी ।। ४ ।।

गुरुओं की सेवा करो कटे जन्म जन्म की त्रास ।।
मुक्ति का मार्ग ये ही है, मन में करो विश्वास ।।
कन्हैया कहे बुराड़ी निवासी ।। ५ ।।

भजन ।। 34 ।।

कैसी अन्धेर गर्दी कोई समझे तो समझावें हम ।
जनसंख्या बढ़ती जाती है, इसको कोई घटाता ना ।
अन्न और वस्त्र धन और धरती, घी दूध नजर में आता न ।।
इतनी उत्पत्ति कर दी ।। १ ।।

कांणा बनिया नौ छोरे, और छोरी सात बतावे क्या ।
एक सौड़ में सारे सोवें, बतला गुजर चलावे क्या ।।
फिर पब्लिक भूखी मरती ।। २ ।।

एक चौधरी लंगड़ा था और बहरी उसकी नारी थी ।
थे दस बालक और बस पाँच बीघा की क्यारी थी ।।
और वह भी गिरवी धर दी ।। ३ ।।

अखड़ सिंह की धरती लेकर, डँगमारा कर बोते हैं ।
कांणै गन्जे छित्तर छज्जू भूखे नगे रोते हैं ।।
पड़े महा पोह की सर्दी ।। ४ ।।

फिर नाई से कहे कि मेरे एक छोरे ने उलझा दे ।
बैल बेच कर चीज घड़ा दूँ पर ये डोरी सुलझा दे ।।
तेरी सिलवा दूँगा वर्दी ।। ५ ।।

चाय पी कर जीता हूँ बाबू गऊओं पर कृपाण चले ।
आँखे भीतर दाँत बाहर बुड्ढे की तरह नौ जवान चले ।।
भीष्म के शिष्य तेरे चेहरे पर ज़र्दी ।। ६ ।।

मेरी आत्म कथा – जो मुझे बताया गया

।। मेरा परिचय ।।

मेरा जन्म कृष्ण पक्ष अष्टमी दिनाँक १-८-१९२२ को बताया है । समय रात्रि बारह बजे का । प्रिय मित्रों मैं अपना परिचय इस लिए दे रहा हूँ कि मेरे परम प्यारे ओ३म् ने मेरी विपत्ति के समय में किस प्रकार से सहायता की ।

मेरी जब ६ महिने की आयु थी उस समय मेरी माँ का देहान्त किसी के द्वारा हो गया था । जब मेरी आयु ६ वर्ष की थी उस समय मेरे पिता श्री राम सहाय का देहान्त हो गया था । जब मेरी आठ वर्ष की आयु थी उस समय मुझे किसी के द्वारा जंगल में गऊएं

चराने (चुगाने) का काम मिला था। उस समय हमारे जंगल में हिंसक जंगली जानवर रहते थे। दिन छिपने वाला था गऊएं मेरे से प्यार करती थी और मैं उनसे प्यार किया करता था उस समय मैं उनसे प्यार करते करते सो गया था। मेरी भूख के कारण बस मेरी नींद से आँखे खुल गई। उस समय रात्रि के दस बजे का समय होगा। मेरे दोनों ओर दो गऊ माता मेरी रक्षा हेतु बैठी थीं मैं हड़बड़ा कर उठा और रोने लगा और रात्रि के अन्धकार में उठ कर चल दिया, मुझे मालूम नही था मेरा गांव घर किधर है। उन दोनो माताओ ने एक आगे एक पीछे चल कर मुझे मेरे स्थान पर छोड़ा और अपने घर चली गई।

दूर के रिश्ते में रामकोर नाम की एक बुढ़िया थी जो मेरी ताई लगती थी। वो ही मुझे खाना खिलाती थी, मुझे उसने अपनी छाती से लगाकर सिसकते हुए कहा बेटा तू अनाथ है और दुनिया के बनाने वाला परमात्मा नाथ है, वो ही तेरी रक्षा करेगा। आ भैया रोटी खा ले और सो जा।

मैं उसी दिन से अपने मन में रोता हुआ ही परमात्मा नाथ को गाया करता था। जब मुझे जंगल में भूख सताती थी तो जंगली घास खाकर भूख को शान्त कर लेता था। मुझे वह भजन अब भी याद है जो पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। अब मेरी आयु ५६ वर्ष की है।

॥ भजन ॥ 35 ॥

तुझ बिन नाथ सहारा कहां है।
फिरता हूँ मैं तेरे आसरे पर, और सहारा कोई नहीं।
तुझे ढूढँना है नाथ कहाँ है ॥ १ ॥
बाप मरा बचपन में छोड़कर, माता के दर्शन किये नहीं।
अब भगवन मेरे तू भी क्यों रूठ रहा है ॥ २ ॥

क्या खता मुझ से हुई जो इतना कष्ट दीना प्रभु ।
तुम बिन मेरा कौन यहाँ है ।। ३ ।।
तेरा भिखारी कन्हैया, खड़ा दर पे तेरे पिता ।
तुझ बिन ज्ञान की भीख और मिले कहां है ।। ४ ।।

मैं उपरोक्त भजन को अकेला ही गुनगुनाया करता था। मेरे गाँव में आर्य उपदेशकों, ब्रह्मचारियों के प्रचार भजन हुआ करते थे। मैं उन के उपदेशों को सुनकर समझकर अपने आचरण से ही बनाने का प्रयत्न किया करता था । और अपने नाथ परमात्मा से ये भीख माँगता था । हे नाथ मुझे भी ऐसे ही विद्वान् बनाओ जैसे ये ब्रह्मचारी हैं ।

मेरे परमप्यारे नाथ ने मुझें दर्शन तो नहीं दिये परन्तु मुझे ज्ञान मार्ग पर ले आया । एक दूर दराज का रिश्तेदार हेल्थ आफिसर था वह मुझे अपने घर का नौकर बनाकर ले गया । जिला झंग मघियाणा मन्डी पंजाब में । जो आजकल पाकिस्तान में विद्यमान है। सन् १९३५ की घटना है उस महाशय का नाम देवदत्त त्यागी था निवासी गाँव हथवाले का थ। उसकी पहलो धर्मपत्नी से दो कन्याएं थो जिनका नाम यशोदा देवी, सभुद्रा देवी था । मैं उनको प्रातः आठ बजे बिद्यालय छोड़ने जाया करता था और एक बजे वापिस लाया करता था । वो दोनो खाना खाकर मुझे पढ़ाया करतीं थीं । अपने माता पिता से छुप करके । मुझे याद है मेरे पाठ याद न होने पर कई बार पीटा भी था ।

मैंने सुना था वह दोनों देवियां बहुत ऊँचे पद पर नौकरियों में नियुक्त हुई थी । अब हो सकता है रिटायर हो गई हों ।

सन् १९३५ समय रात्रि ११ बजे दिनांक १-८-१९३५ को उपरोक्त महाशय को हा कोठी में एक कमरा बिना लाईट का था। जिस में मैं सोया करता था सो जाने का प्रयास कर रहा था । एक

विचित्र रंग की गोल रोशनी में बाल ब्रह्मचारी महात्मा भीष्म जी का चेहरा मुस्कराता दीखा उन की शुद्ध खादी की सफेद पगड़ी कुर्ता तहमन्द आयु अनुमान ५० वर्ष की प्रतीत होती थी। उस से पूर्व मैंने उन को कभी नहीं देखा था।

वह चेहरा मैं भूला नहीं था सन् १९४५ में मेरे दूर दराज के रिस्तेदार ब्रह्मानन्द त्यागी गांव सिकार पुर निवासी से इतिहास लाडो बे दोषी लेखक महात्मा भीष्म गाँव घरोंडा जिला करनाल पुस्तक पर वोही चेहरा मुस्कराता मैंने पहिचान लिया और मैं गुरु चरणों में पहुँच गया।

॥ दोहा ॥

हे पारब्रह्म परमात्मा, मेटो सकल कलेश।
नमः गुरु भीष्म जी से मिला मुझे उपदेश ॥

॥ आरती गऊ माता की ॥

भजन ॥ 36 ॥

जय जय गोमाता ओ३म् जय जय गोमाता ॥
तेरी जय में जय भारत की माता सुख की दाता ॥

दूध, दही, घी मक्खन रबड़ी जो तेरी खाता हे माता जी तेरी खाता
सबसे अधिक अकल में और बल में वह कहलाता ॥
ओ३म् जय जय गौ माता ॥ १ ॥

तेरे घी से हवन करे जो प्रति दिवस भ्राता। हे माता प्रति
पवन शुद्ध हो और शुद्ध पानी बादल बरसाता ॥
ओ३म् जय जय गौ माता ॥ २ ॥

तेरे बछड़ों पर जुआ धर कर किसान हल बहाता ॥
अन्न कमा सब को अन्न देता देश का अन्न ढोता ॥
ओ३म् जय जय गौ माता ॥ ३ ॥

गोबर और मूत्र भी तेरा अमूल्य कहलाता ।
दर्द कान का पैर का चमरस दो दिन में जाता ।।
ओ३म् जय जय गौ माता ।। ४ ।।

मरने पर चमड़ा दे जाती काम बहुत आता ।
खाद बने तेरी हड्डी का किसान ले जाता ।।
ओ३म् जय जय गौमाता ।। ५ ।।

दुःख से छूट छूट कर जो मानव सुख चाहता ।
गौ माता का दान करो आर्य पुरुष ये बतलाता ।
ओ३म् जय ज़य गौमाता ।। ६ ।।

।। भजन ।।

रंक – प्रभु हमें सद्बुद्धि दो दान दास तेरे द्वार खड़े ।
ऐसी बुद्धि सबको दे, जो मिल के रहे इन्सान ।
कर्म करें सब अच्छे अच्छे लेकर तेरा नाम ।।
नियम पर रहे अड़े ।। १ ।।

सुना है हमने नियम तेरे बुद्धि में बड़े महान ।
उन वेदो का ज्ञान देओ जो हो सब का कल्याण ।।
लिखें और रोज पढ़े ।। २ ।

सांख्य योग और कर्म योग से दर्शन होय तुम्हारा ।
इस मार्ग का गीता जी से लगा है पता तुम्हारा ।।
योग के लिये हमें करो खड़े ।। ३ ।।

कहैन्या लाल को सद् बुद्धि दे है मेरे संगवाज ।
तेरे भक्तों पर संकट भारी, तुम ही करो कल्याग ।
तेरे चरणो में पड़े ।। ४ ।।

दोहा ।। 39 ।।

ना मेरे पे पैसा है ना मेरे साथी भगतों पै पैसा है ।
हे प्रभु हमें समझ नहीं आता ये तेरा न्याय कैसा है ।।

तर्ज मुझे प्रभू से प्यार हो गया

भजन ॥ 40 ॥

ओ३म् मुझे तेरे से प्यार हो गया ।
चल दिया जो किनारे किनारे, अपनी जीवन दशा को सम्भाले ।
ओ३म् उस का तो बेड़ा पार हो गया ॥१॥

अपनी नैया का तू खुद है खिवैया किसकी आस करे तू भैया ।
ओ३म् सहाई तेरा विश्व रचैया ॥२॥

जब गज (हाथी) ने तुझ को पुकारा, तब आकर के दीना सहारा ।
ओ३म् ग्राहा की तूने है भगैया ॥३॥

जब राणां ने मीरा सताई, बता किस से तूने प्रीती लगाई ।
ओ३म् मेरा तो प्यारा मुरली बजैया ॥ ४ ॥

भक्त प्रहलाद पै क्या २ बीती, तेरी छोड़ी नहीं थी प्रीति ।
ओ३म् खम्ब चीर दर्शन दे गया ॥ ५ ॥

भक्त रोते हैं दुखिया बिचारे, दुःखो होते ना होते गुज़ारे ।
ओ३म् तुम इन को दे दो रुपया ॥ ६ ॥

डूबता है कहैन्या तुम्हारा, उस को आकर के दे दो सहारा ।
ओ३म् बुराड़ी अपना गांव बतैया ॥ ७ ॥

दोहा ॥ 41 ॥

पार ब्रह्म परमात्मा तेरी, सभी जगह ज्योति ।
नमः गुरु भीष्म के ध्यान से मिला ज्ञान रुपी मोती ॥

दोहा ॥ 42 ॥

राम, कृष्ण की भूमि पर, पाकिस्तान के षडयन्त्र रहे है फैल ।
नौजवानो बेहोशी तजो, उठकर कर दो उन को फेल ॥

तर्ज - हरियाणा

स्थाई - आर्य वीरो जागो समय नहीं है सोने का ।

अन्तरा- रिपु दल दे रहे तुम को धोखा, और वो देख रहे है मौका।

स्थाई - भारत माता भूमि काश्मीर का शीश काटने का ॥ १ ॥

कशमीर राज्य यह कट गया, तो समझो वैदिक धर्म दुनियाँ से मिट गया ।

फिर तुम्हें कौन सुनावेगा, उपदेश गीत, रामायण प्यारी का ॥२॥

तुम हो रहे नाच गानों में मस्त, रिपु दल खड़ा सीमाओं पर
जब उनका षडयन्त्र है आर्य सभ्यता संस्कृति मिटाने का ॥३॥

याद करो इतिहासों की घटना, यदि फूट रही तो देश नहीं बचना ।
दे रहा इतिहास प्रमाण, जयचन्द पृथ्वीराज का ॥ ॥

गुप्तचर उनके छूट रहे हैं, हमारी कर आपस में फूट रहे हैं ।
मौका देख रहे हैं हमें आपस में लड़ाने और भिड़ाने का ॥५॥

आर्य सभ्यता संस्कृति भाई, उन्होंने कभी नही अपनाई ।
दे रहा गर्व ही रानी पदमनी का किला चित्तौड़ का ॥६॥

अविद्या, अन्याय बेईमानी छोड़ो भाई, इसमें रहे नुकसान उठाई ।
याद करो लुट या मन्दिर जगन्नाथ, सोमनाथ का ॥७॥

मित्रो कन्हैया रहा सबको समझाई, अब सब हो लो सीधी राही ।
अर्ध सैनिक संगठन बनाओ भाई, आर्य युवक परिषद का ॥८॥

दोहा ।। 44 ।।

जन्म भूमि से प्यार जो करते हैं जवान ।
सफल ज़वानी हो जाती दे रहे हैं इतिहास प्रमाण ।।

तर्ज :- आनन्दी ।। ४५ ।।

जिस घर में बैर ना उसकी खैर, यह दुनिया कहती आई है ।
इतिहास भी यही कहते आये, ये मार्ग बड़ा दुःखदाई ।।
सत्य उपदेश का जो उपहास करे, उपदेश जो उसको देता है ।
वह अपने जीवन रूपी मार्ग में, कांटो की लाईने बोता है ।।

जिज्ञासु को जो उपदेश करे, वह ऊँचा उठता जायेगा ।
वह जीवन रूपी नैया को भवसागर पार लगायेगा ।
है प्रभु जी मेरी मांग यही सद बुद्धि हम सब को देवें ।
सत्य बुद्धि ही धन ऐसा है जो अन्त शिखर पर पहुंचावे ।।

तर्ज :- हरियाणवी

भजन ।। 46 ।।

स्थाई – हे जगत पति मुझ मूढ़ मति को अति शीघ्र कर दे । नाव पड़ी मझधार पार भवसागर से कर दे ।।

अन्तरा - तूने बहुतों को पार उतारा, मैं भी समझूं तेरा सहारा ।

स्थाई - तूने सदन कसाई तारा, प्रभु मुझ को भी बार हो ।।१।।
हे जगत रूप जन्जाल, प्रभु तू मुझ को जल्दी सम्भाल ।
कभी चौरासी के चक्कर में तू मुझको डाल दे ।।२।।
चौरासी का भयंकर चक्कर, कभी लाखों वर्ष खाता फिरू टक्कर ।

इसलिये मुझे बचाकर पार तार दे ।।३।।
हे चैतन्य पूजा श्रेष्ठ बताई, जड़ पूजा है निष्फल भाई ।

वेदव्यास जी महाभारत में रहे गवाही दे ॥४॥

कन्हैया लाल बुराड़ी वाला, त्यागी शर्मानन्द से पड़ गया पाला ।

यह जड़ पूजा का हुआ मतवाला उसकी बुद्धि का ताला खोल दे ॥५॥

॥ वार्ता ॥

कन्हैयालाल आर्य - मेरी पुस्तक को पढ़ने वाले प्रिय मित्रो मेरा भी कभी दिल टूट जाया करता था परन्तु मेरा प्यारा परमात्मा मुझे सहारा देता रहता था ।

सांग देखने वाले मुझे कहा करते थे जो आनन्द रागनियों में आता है वह ? तेरे भजनों में नहीं आता शराबी मुझे कहते थे सौ गाली न दो एक बार महाशय कह दो । बस काफी हो जाती है । कोई कहता है तू मुझे गुरू बना ले मैं तुझे सांगी बना दूँगा । परन्तु मेरा लक्ष्य तो स्वयं अच्छा बनने का था और अपने समाज को अच्छा बनाने का था ।

भजन ॥ 46 ॥

तर्ज :- हरियाणवी

हुलड़बाजी मचती भाई किस को भजन सुनावें हम ।
आशा लेकर के जो आवे निराश हो अपने घर जावें हम ।
कहता भोन्दु वलद कुशाली, बना मुझे गुरू तेरी करूँ दूर कंगाली ।
सुवाँग करण को डगर तुझ से फिर बतावें हम ॥१॥
कहता दिल्लू करो भजन प्रचार बन्द,
काट दो रागनियों के फन्द ।

कहो तो एक छोरे ने परहा घाघरी नाच दिखावें हम ।।२।।
एक ने महाशय शब्द पुकारा,
बोल उठा एक मांस भक्षण वाला ।
ना सौ गाली देई अबे एक महाशय कह दवायें हम ।।३।।
यदि सुनना चाहते वैदिक भजनों के छन्द,
तो करो बन्द अन्डे बन्द पाखन्ड ।
धर्म भवन भाई आप सजाओ भजन सुनावें हम ।।४।।
रोश में कहता कन्हैयालाल,
मेरे है दिल में बड़ा मलाल ।
ऋषि मुनियों की शिक्षाओं के मज़ाक उड़ावे हम ।।५।।

।। वार्ता ।।

कन्हैयालाल आर्य - मेरे प्रिय श्रोताओ त्यागी ब्राह्मण हमारे प्राचीन ग्रन्थों में कर्मकाण्ड कर के दान लेने वाले ब्राह्मणों से श्रेष्ठ माने गए हैं । परन्तु वड़े खेद का विषय है कि कुछ त्यागी ब्राह्मण कहलाने वाले, अभक्ष पदार्थ का सेवन करते हैं । अनावश्यक अप शब्दों का उच्चारण करके अपनी वाणी पर बट्टा लगा रहें हैं । इस लिये मित्रो आओ अपने आपस के मत-भेद मिटाकर उच्च विचार बनायें ।

तर्ज :- रसिया

भजन ।। 46 ।।

स्थाई - भैया आपस के मत भेद हमारा नास करें डट के ।
त्यागी बनकर त्याग ना सीखा, रहे स्वार्थ में फँसा ।।
आपस में लड़ लड़ के खो बैठे इज्जत के लटके ।।१।।

आर्य हो तुम अनार्यों जैसे करने लगे काम बार बार ।
होनहारी को बना के शिष्य, दिखाओ राक्षसों के झटके ॥२॥

त्यागी तो वो होते हैं जो शुद्ध करते आहार विहार ॥
नकली त्यागी पी शराब फिरे गलियों में दिखते तहमद के
फटके ॥३॥

अपने ही गाँव की बहन बेटी को जो ताकते हैं जार ।
समझाने से कभी ना माने जब तक पड़े ना मार ।
इनको दण्ड दिलाओ नौजवानो सुनते जाओ उल्टे हटके ॥४॥

धर्म रहित जो गाँव होयेगा गर्क होयेगा जल्दी ।
इसका दोष लगे जवानों को बता रहा कर हमदर्दी ॥
आर्य युवक परिषद बनाकर, इनको पीटो हंस हंस के ॥५॥

कन्हैयालाल बुराड़ी याला नौजवानो को रहा समझाय ।
अच्छे काम करने से, भैया ईश्वर भक्त कहलाय ॥
यदि हमारी बातें न मानी, तो फिरोगे दर दर भटके भटके ॥ ६ ॥

तर्ज :— हरियाणवी

भजन ॥ 48 ॥

स्थाई - भगवान तेरी दुनियाँ में बड़ा अन्धेर दिखाई दे ।
लुच्चे गुण्डे बेईमान का जोर दिखाई दे ॥

अन्तरा - घूमते फिरते डाकू चोर, नाश कर देंगे ये रिश्वतखोर ।
जगह जगह दुखिया भाइयों की टेर सुनाई दे ॥१॥
कहीं भंगड़ो की फिरे जमात, गुण्डे दे सीटी दिन रात ।
दुर्घटना में पड़ा सड़क पर सिसके आधी रात ॥
भाई की भाई में अब न मेहर दिखाई दे ॥२॥

देश के क्या नौजवानों की शान, कम अकल मनुष्य जब
बनते जाएं हैवान।
बाजारों में शराब मांस का ढेर दिखाई दे ।३॥

अभक्ष पदार्थ खाकर भाई,
दुनियाँ की बुद्धि बौराई।
आजाद देश के बिखरे हुए विद्वान दिखाई दें ॥४॥
कन्हैयालाल तू कितना ही रोले,
तेरी कोण सुणे यहाँ भोले।
तू उस परमपिता को सुणाले, जहाँ भी दिखाई दे ॥५॥

॥ वार्ता ॥

कन्हैयालाल आर्य - मैंने एक राष्ट्रीय कविता को राष्ट्रीय गीत का रूप दिया है मैं आप पाठकों से यह आशा करता हूँ कि आप इससे लाभ उठायंगे।

॥ गीत ॥

करो राष्ट्र निर्माण, बनाओ माटी से सोना।
बिना राष्ट्र निर्माण किये कल्याण नहीं होना॥
सुजला सुफला हम धरती के वासी।
फिर क्यों अपने महा देश की जनता रहे उदासी॥
अन्नधान से भर दो अपने घर का कोना कोना ॥१॥

सागर हमको देता अपने दूत जलद गम्भीर।
और हिमालय देता हमको शीतल मन्द समीर॥
गर्वोन्नत मस्तक रख कहता कभी न विचलित होना ॥२॥

गंगा यमुना यहाँ बहाती हैं अमृत की धारा।
ब्रह्मपुत्र कृष्ण नदी का, जल दूध से प्यारा॥
दूध की धारों से धरती का सूखा भाग भिगोना॥ ३॥

आंसू बहुत वहाये हमने, देखी खूँन की धारा।
आज पसीनें की बूदों में छिपा भविश्य हमारा॥
श्रम सीकर से पुण्य भूमि का कण कण करो सलोना॥४॥

धूली भरे कर चरण राष्ट्र के, सच्चे नव निमार्ता। - बार
इन पर गर्व करेगी युग युग प्यारी भारत माता॥
इन से बढ़ कर और ना कोई दूनो चाँदी सोना॥ ५॥

स्वप्न स्वर्ग का धरती पर उतरेगा श्रम के द्वारा।
श्रम बनबासी राम इसी से दैत्य दशानन मारा॥
अब आराम हराम राष्ट्र ते द्रोह एक पल करना॥ ६॥

यहाँ बलवानों का निर्बलों पर अत्याचार न हो अब।
मनुष्य मनुष्य के बीच यहाँ कोई दीवार न हो अब॥
बहे प्रेम की धार मिटे बैर दीनता रोना॥ ७॥

आज हमारे देश के अन्दर प्रजातन्त्र सुखदाई।
प्रजातन्त्र का मान प्रजा की होती रहे भलाई।
यहाँ एक ही घाट पिएं जल सिंह और मृग छोना॥ ८॥
कन्हैया लाल ऋषियों की यज्ञ भूमि पर कर चल कुछ भलाई।
विना करे भलाई, किसी को मुक्ति मिले ना भाई॥
तू देश भक्त बन कर बनजा, दुनियाँ का खिलोना॥ ९॥

॥ वार्ता ॥

कन्हैया लाल आर्य- बड़े खेद की वात है की जिस योगी ने अखन्ड वाल ब्रह्मचारी रह कर संसार के सब सुखो के लात मार

कर। इस आर्य देश के लोगों की सोई हुई आत्मा को जगा कर हजारों वर्ष से खोई हुई आजादी प्राप्त करने का मार्ग बताया। उसी को यहाँ की निष्ठुर जनता आज भूलती जा रही है।

तर्ज—चली फैशन की मस्त हवायें नर नार उड़ें।

भजन ॥ 49 ॥

उस योगी की अमर कहानी, तुम्हें याद भी है। टेक
मूल भूत से मन्दिर अन्दर लख चूहे की घटना।
सच्चा शिव तलाश करूँगा, मन में लागी रटना॥
जड़ पूजा से हुई थी गिलानीं॥ १॥

मात पिता परिवार से नाता, तोड़ चला ब्रह्मचारी।
शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी बने, फिर दयानन्द हितकारी॥
करी भारत को भेट जवानी॥२॥

हमारा राजस्थान पढ़ो ये बात लिखी हुई पाई।
सन् १८५७ था गदर की नींव जगाई॥
करी वीरों ने जो कुरबानी॥३॥

फिर मथुरा में गुरु बनाये थे विरजानन्द दन्डी।
वेद पढ़ भारत में घूमे, दहल गये पाखण्डी॥
करी पोपों की खैंचा तानी॥४।

डटे अरब के मुकाबले पर, डट गया वीर अकेला।
वेद और ईश्वर था साथी, ना चेली थी ना चेला॥
पड़ी लाखों मुसीबत ठानी॥५॥

गर्मी सर्दी भूख प्यास सहीं ईंट व पत्थर गाली।
दुनियां के हाथों में दे गये सत्यासत्य की ताली॥

राव करण करी नादानी ॥६॥

दो घोड़ो की बग्गी रोकी, शहर जालन्धर जाके ।
गारा से बैलों की गाड़ी कर दई बाहर धिका के ॥
थे ब्रह्मचारी लासानी ॥७॥
किसी ने गल में सांप डाला किसी ने विष का प्याला ।
हमको वह आजाद बना गया योगी वेदों वाला ॥
गुरु भीष्म की तर्ज बयानी ॥८॥

वैदिक धर्म बचाना है तो बनो बीर मरदाने ।
इन्डिया से बना भारत अब चलो आर्यवर्त बनाने ॥
हो आर्य वीरों की अमर कहानी ॥९॥

यदि वीरो ये कार्य करना है तो इस प्रकार से होगा ।
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का स्वयं सेवक बनना होगा ॥
जो शिक्षा कन्हैया लाल की मानी ॥१०॥

भजन ॥ 50 ॥

स्थाई– दुनियां भर में भटके हम, उल्टे सीधे लटके हम ।
थके राम, कृष्ण, रटके हम, पर मिला नहीं इस रट में तू ॥

अन्तरा- तीर्थ व्रत किये, भूखे मरे, और सुखाया तन हमने ।
जेष्ट मास में धूनी जलाई, छाने पहाड़ और वन हमने ॥

तो0- द्वारिका दाग लगा लिये, गंगा यमुना नहा लिये ।
घण्टे शंख बजा लिये, कहीं मिला ना मंदिर मठ में ॥१॥

किये कीर्तन भांज मजीरे चिमटा ढोलक खड़काये ।
हरे राम और हरे कृष्ण ये आठ पहर गाने गाये ॥
थके मौन व्रत पाठ कर, चरण अमृत चाट कर ।

घर लिया बारा बाटकर पर मिला न मंदिर मठ में तू ।।२।।

फिर मैं ही खुद ब्रह्म बना, जा पैर दबाये सन्तों के ।
मलंग ग्रन्थ जूतों की पूजा चेले बने महन्तों के ।।

काना बाती कुरु है एक चेला एक गुरु है ।
कान फाड़कर हुए हैं, ले करामात इस लठ में तू ।।३।।

मिले कुम्भ पर बाई बाबा बिल्कुल नंगम नंगे थे ।
अगड थत्ता फूँके लकड़ता, बोली हर गंगे थे ।।

बड़े बढ़ा रहा बाल है बिछा रहा मृग छाल है ।
माथा बिल कुल लाल है ना देखा गंगा तट में तू ।।

पन्ड़े पोप पुजारी देखे गऊ दान करवा रहे थे ।
गरुड़ पुराणा पढ़े मुर्दे बेतरणी पार करा रहे थे ।।

हर तरह ठगियों को छूट थी मची हुई एक लूट थी ।
सारी बातें झूठ थी ना देखा इस खट पट में तू ।।

किया भटकते हुऐ एक ऋषि दयानन्द वेदों वाला ।
वेदों का मार्ग बताया कर भेद भरम तोड़ा ताला ।।

गुरु भीष्म का लेके सहारा शर्मानन्द जी को बतला रहा ।
कन्हैया लाल आर्य ओ३म् मन्दिर में तुझे बुला रहा सुन्दर कथा सुनादे ।।

दोहा ।। 51 ।।

पारब्रह्म परमात्मा तेरा सभी जगह प्रकाश ।
इस अविद्या पापन का प्रभु तूही कीजिये नाश ।।

तर्ज :-

आनन्दी ।। 52 ।।

जड़ की पूजा करने से, जड़ बुद्धि हो जाती है ।
चैतन्य की पूजा करने से, चैतन्यता आ जाती है ।।

मत करो निराशा की बातें, जीने का सम्बल आशा है ।
कर्तव्य कर्म करते जाओ, यह जीवन की परिभाषा है ।।

कविता ।। 53 ।।

हे मानव तू हर पल सोच समझ कर चल ।
निर्दोष जीव को नहीं सता, वरना बुरा मिलेगा फल ।।

उस प्रभु के सामने तेरा छल बल, कुछ भी नहीं चल सकता है ।
यदि चाहे तो तुझे पल भर में दल सकता है ।।

मत मेरी बात को झूठ मान, तू देख प्रत्यक्ष प्रमाण यहाँ ।
सत्ताइस तीन अठत्तर को दिल्ली में देख धमसान यहाँ ।।

सायं ६ बजे आकाश से, बादलों से बारिष होने लगी ।
मोरिस नगर से तूफां चक्रवात उठा, बिजली कड़कने लगी ।।

पौन मील की चौड़ाई दो मील का लम्बा विस्तार था ।
इस बीच दिल्ली यूनिवर्सिटी कालेज, और फौजी बैरक था ।।

आगे नहीं पीछे नहीं, इस बीच हाहाकार था ।
दो मिनट तक ही रहा, बहुतों को किया विसमार था ।।

यह देखो उस अदृष्य शक्ति का कमाल ।
हजारों को चोटें लगी, सैकड़ों का आया काल ।।

चोटें जो गृहस्थ जाल की, पथ भ्रष्ट हम को करती हैं ।
सादा खाओ सादा पहनो, चोटें ये बच सकती हैं ।।

देख कर दुखी को दुखी होते हैं जो नर ।
ये ही प्रभु की भक्ति है, ये ही भक्ति की है डगर ।।

हे कन्हैया करनी कथनीं, ना सभी की एक है ।
अपने भक्तों की प्रभु राखे हमेशा टेक है ।।

।। वार्ता ।।

हे आर्य सनातन धर्म के मानने वालो मेरे मित्रो बड़े खेद के साथ कहना पड़ रहा है हमारे देश में भ्रष्टाचार का बोल-बाला है चोरी, जारी, सीना जोरी रिश्वत खोरी है और कमज़ोर अल्पसंख्यकों को सताया जा रहा है। जाति बिरादरी की घृणा (नफरत) भी कम नहीं है। धनी वर्ग लाभान्वित होता जा रहा है। उपरोक्त कुकर्म वैदिक, मानव धर्म के विपरीत हैं। यह आचरण देशी और विदेशियों द्वारा फलते फूलते रहे हैं। उन विदेशियों से देश को आज़ाद कराने में बड़े-बड़े बलिदान इस देश के विद्वानों, तथा युवकों ने देकर विदेशी तो देश से बाहर खदेड़ दिये परन्तु इन देशियों से अब कैसे सुलटा जाये। क्योंकि यदि कोई साहस करके दोषी को सरकार द्वारा दन्ड दिलवाने का प्रयत्न करता है तो न्यायालयों में वर्षो लग जाते हैं उसमें भी दोषी दोषों में लिप्त रहता है और दण्ड दिलाने वाला परेशान हो जाता है। इस विषय पर केवल आर्य समाज विचार कर रहा है परन्तु जन सहयोग और धन सहयोग घटता जा रहा है। इसलिये हारे का हरिनाम है। अब तो परमात्मा ही रक्षक है परन्तु इसके परिणाम क्या हो सकते हैं सुनो—

तर्ज— आनन्दी ।। 54 ।।

अब बाढ़ खेत को खाने लगे, तो अन्न देश में कैसे हो।
जब रक्षक ही भक्षक बन जाये, तो देश की रक्षा कैसे हो ।।

श्री राम का वो उपदेश कहाँ, जो राक्षसों को मारे थे।
श्री कृष्ण का वो उपदेश कहाँ, जो सत्यासत्य को छाने थे !!

सत्यासत्य की कुन्जी दे गये, यह ऋषि दयानन्द ब्रह्मचारी।
इन भ्रष्टाचारी लोगों ने, उनकी भी बातें दे मारी ।।

भजन ।। 55 ।।

बीच में जो वैठे यही डबो रहे नैया को।
दोष दे खिवैया को भाई दोष दे खिवैया को ।।
खिवैया दो चार हैं, असबार हजार हैं।
नैयाके डुबाने को ये सारे ही तैयार हैं ।।
तैयार मारने अपने भैया को ।।१।।

न्यारी न्यारी पार्टी और न्यारे न्यारे प्रोग्राम आज।
देश द्रोही चाहें की बिगड़े इन्तजाम आज ।।
जो ना सगय के, साथ-साथ बदलें ना रवैया को ।।२।।

कुछ कहते हैं राज्य नहीं धर्म के आधार होगा।
हम कहते हैं देश का ना बेड़ा परलो पार होगा ।।
पूछता न आज कोई वेद के पढ़ैया को ।।३।।

रिश्वत और ब्लैक कर मनहूस रहे।
पूंजीपति सेठ खून मजदूरों का चूस रहे ।।
रोटी कपड़ा मिलता नहीं रात दिन कमैया को ।।४।।
ऋषियों को पिलावें जहर ईंट पत्थर गाली दें।
जालिमों को दावतें और शराब की प्याली दें ।।
हाथों पर उठाये फिरते साँगी फिल्म नचैया को ।।५।।

सांग और सनेमे भारत वर्ष को डबो रहे।
लड़की और लड़कों को काली नागन से डसवा रहे ।।
मखियों की तरह भागे थाप थैया को ।।६।।
तांगे वाले, रिक्शा वाले, झल्ली वाले भूखे कपड़े फटे हैं।
देखो फिर सिनेमा वाली लाइन वीच डटे हैं ।।

पंडित जी कहकर बोलें बदमाश गवैया को ॥७॥
लोग कहते प्रधान मंत्री खर्च करती बेशुमार क्यों ।
उपदेश कभी नौकरी ले करते हैं प्रचार क्यों ॥
गुरु भीष्म ने बताया एक लाख मासिक मिलते थे
सुरैया को ॥८॥

कन्हैया लाल आर्य राखे, कंवलसिंह, अमीचन्द मेर है ।
देश भक्त बन जाओ भैया ये ही हमारी टेर है ॥
देश भक्त बनना चाहिये हर एक भैया को ॥९॥

॥ वार्ता ॥

उसी सर्व व्यापक ईश्वर के वेद ज्ञान के गुणों को गाकर धारण करो जो मानव जाति को उन्नति के शिखर पर ले जाने का आदेश दे रहा ।

तर्ज—नगरी नगरी द्वारे द्वारे

भजन ॥56॥

स्थाई-समय सुहाना बन मस्ताना गुण ईश्वर के गाना ।
मन रूपी मन्दिर के अन्दर जीवन जोत जगाना ॥

अन्तरा परम पिता से प्यार कर शुद्ध आचार विचार कर ।
इन्द्रियों को बस में करके मन अपने को मार कर ।
यम नियम का पालन करके जीवन सफल बनाना ॥१॥
निर्धन को न कभी सता, दुखियों का दुख दर्द मिटा ।
हीरा जन्म अनमोल है तेरा, मिट्टी में न इसे मिला ।
सुखों का भण्डार वही है शरण उसी की आना ॥२॥
हे लाल न उसे भुला, जीवन वेद अनुसार बना ।
संध्या सतसंग वेद पाठकर जीवन अपना सफल बना ।
भाई बेटा बन्धु पत्नी, संग किसे नहीं जाना ॥३॥

भजन ॥ 57 ॥

स्थाई- ओ३म ने देख लो कैसी रची दुनियाँ रंगीली है ।

अन्तरा- कहीं बहते नदी नाले, कहीं सिन्धु उमड़ता है ।
कभी वर्षा कभी गर्मी, कभी जाड़ा जकड़ता है ॥
चमकती मेघ कालो में, कभी बिजली कटीली है ॥१॥

सुबह ओर शाम को चिड़ियाँ, घने वन में चहकती है ।
वो बुलबुल कोकिला मैना, मोरनी भी कुहकती है ॥
रीछ बन्दर शेर हाथी, फिरे सूरत छबीली है ॥२॥

न मिलती एक सी सूरत, न मिलता एक सा खाना ।
कर्म न एकसा मिलता, न मिलता एक सा वाना ॥
बेल बूटे सुगन्धित हैं, खढ़ी कीकर कंटीली है ॥३॥

हमें दो ज्ञान बुद्धि का, रचयिता नाम है तेरा ।
मांगने को न पर जावे, सभी इन्तज़ाम है तेरा ॥
सुनी महापुरुषों की हमने, बड़ी बाणी रसीली है ॥४॥

चमोला ॥ 58 ॥

हमें मिला दे लाय कर कोई ऐसा इन्सान ।
करके दया करदे हमें चार चीज का दान ॥

अन्तरा- चार चीज का दान एक नाश कभी जो भोग न हो ।
और दूसरे ऐसी जवानी, जिसमें बुढ़ापे का रोग न हो ॥
देवो तीसरे ऐसी खुशी जिसमें कभी शोक न हो ।
चतुर्थ ऐसा मित्र मिले कि जिससे कभी वियोग न हो ॥

तो0 खाक दुनियां की छानी मिला नहीं ऐसा दानी ।
हम ही उसके शिष्य करें जो पूर्ण बानी ॥

दोहा ॥ 59 ॥

इन चारों को छोड़ो भाई, आगे और सुनो बाणी ।
वह घर स्वर्ग समान समझो जहां देवियाँ बोलें मीठी बाणी ॥

भजन ॥ 60 ॥

स्थाई- छोटी बड़ी बहिनों, आदर से सबसे बोलना ।

अस्थाई- मीठी मीठी बाणी बड़ी कल्याणी ।
इस बाणी का बहन कहते हैं कोई मोल ना ॥१॥

देवरानी जिठानी से हिल मिल के रहना ।
अपनी बाणी से किसी का दिल ना तोड़ना ॥२॥

सास सुसर की सेवा करना बहनों ।
पति अपने को री गर्मी में पंखा झोलना ॥३॥

नियम से पालो गृहस्थ धर्म को ।
घर अपने से बाहर अवारा नहीं डोलना ॥४॥

दोहा ॥61॥

जो जवान ब्रह्मचारी कर सकते हैं देश का सुधार ।
नीच लफंगे क्या करेंगे डूबेंगे जा करके मझधार ॥

भजन ॥62॥

स्थाई- नो जवानों नो जवानों सीना तान चलो नौ जवानों ।

अन्तरा- तुम प्रताप सेवा दुर्गादास हो, बनो अमरसिंह दृढ़ नेमी हो ॥
बन पृथ्वीराज बलवान चलो नौ जवानो ॥१॥
कुम्भावीर अमीर बनो तुम, सांगा से रणधीर बनो तुम ।
बन दयानन्द से वीर चलो नौ जवानो ॥२॥

सुभाष नर नाहर बनकर, दयानन्द से ज्ञानी बनकर ।
तन मन धन करते दान चलो नौ जवानो ॥३॥

बढ़े उठो सब गाँधी बनकर. धूम मचा दो आंधी बनकर ।
मत बन कर आगाखान चलो नौ जवानो ॥४॥

दयानन्द से बनो अलबेले भूमण्डल गये हिला अकेले ।
दुष्टों के मारते मान चलो नौ जवानों ॥५॥

चलो स्वर्ग करो सीधी रिड़ियां लहाशों की लो बना सीड़ियाँ ।
गुरू भीष्म का करते प्रचार चलो नौ जवानो ॥६॥

॥ वार्ता ॥

कुछ बेहूदे लोग गलत दलील देते है । जैसे --

दोहा ॥63॥

नाचण में कोई दोष ना, नाची दुनियाँ सारी ।
ब्रह्मा नाचे विष्णु नाचे नाचे दुनियां सारी ॥

तर्ज - आनन्दी ॥64॥

ब्रह्मा नाचे विष्णु नाचे कृष्ण मुरारी हैं ।
ऐसी शिक्षा देकर के, क्यों हमको बना दे अनार्य हैं !!
वो नाचे थे धर्म युद्ध मे, हमें आर्य वीर बनाने को ।
ये नाचे है महफिल में, हमें भ्रष्टाचारी बनाने को ॥

ईश्वर, जीव प्रकृति को, शाश्वत अमर बताई है ।
फिर जीव ईश्वर से मिलना क्यों चाहे, ये बता दे मेरा भाई है ॥

तास खेल में ब्रह्म बताते, हमें सुनकर आवे हँसी है ।
तास अक्षर ब्रह्म बोध ठीक, पर खेल ये सत्यानाशी है ॥

जो खेल खेलता कसरत का उसकी आयु बढ़ जाती है।
कन्हैयालाल शुभ कर्म किये जा, यही तेरा साथी है ।।

दोहा ।।65।।

भ्रष्टाचार ही राज को कर देता बदनाम ।
सत्यमन का निर्णय करना है पंचों का काम ।।

भजन ।।66।।

स्थाई- अजी एजी देश में कुछ ऐसे बने हैं पंचायती ।
पढ़े लिखे ये सिगरेट बाज बने चोर जार के साथी ।।

अन्तरा- पढ़ाई बताती नहीं निर्दोष का अपमान करना ।
पढ़ाई बताती नहीं किसी से बलातकार करना ।।
पढ़ाई बताती नहीं नशे बेशुमार करना ।
पढ़ाई तो ये बताती है श्रेष्ठ कर्म से प्यार करना ।।
पढ़ाई ये बताती है बैद्य और वैज्ञानिक बनो ।
बनकर के वैज्ञानिक सारे देश का उपकार करो ।।
वैदिक सभ्यता संस्कृति यही बताती ।।१।।

जिस पन्चायत घर में हमने न्यायिक निर्णय होते देखे ।
अब उस पन्चायत घर में भाई हमने कुत्ते लड़ते देखे ।।
लड़-भिड़ कर के वहीं सोते वहीं टट्टी करते देखे ।
उस को कोई उठाता नहीं बहीं कीड़े पड़त सड़त देखे ।।
आर्य मुसाफिर जब सत उपदेश देने पन्चायत घर में आते है ।
वे सब देख बुरा हाल बहुत ही घबराते हैं ।।
सफाई करता देखा कन्हैया लाल आर्य अपना साथी है ।। २ ।।
प्रधान सरपन्चों के घर पर भारी भीड़ रहती है ।
दलालो का आना जाना छीना झपटी रहती है ।।

आप भी दलाल बन गए ऐसी चढ़ी मस्ती है।
होटलों में खाना खाते रहते पीते रहते विस्की है।
पन्च होना चाहिये सत्यसत का निर्णय करने वाला॥
निर्दोष की रक्षा और दुष्टों को रुलाने वाला।
परन्तु गुन्डों से डरें ये पन्चायती ॥ ३ ॥

जब प्रधान पंच डरने लागे निर्दोष की सहाई कहां।
निर्दोष की सहाई बिना देश और गाँव शहर की भलाई कहाँ॥
जहाँ निर्दोषी को मार और रिश्वत की भरमार हो।
सुख और शान्ति रहती नहीं देश में हाहाकार हो॥
बुरे कर्म करने वालो का होता हरगिज बेड़ा पार नहीं।
आखरी में डूब जाता फिर कोई बनता यार नहीं॥
अरे कन्हैया लाल आर्य तू बनजा निर्दोषी का साथी ॥ ४ ॥

दोहा ॥ 67 ॥

फैशन परस्ती ने लिया निर्दोषों को लूट।
ज्ञान दृष्टि से देख लो बात नहीं है झूट॥

भजन ॥ 68 ॥

स्थाई- चली फैशन की मस्त हवायें नर नारी उड़े।

अन्तरा- फैशन से ब्रह्मचर्य गया, नर नार बने व्यभिचारी॥
व्यभिचार से दुनियाँ बढ़गई, रिश्वत चोर बजारी।
दिन रात मुसीबत उठायें॥ नर नारी उड़े॥ १॥

बूशर्ट बूंट पतलून पहर कर साहेब बन कर डोलें।
हिन्दी भाषा छोड़ के बाबू गिट-पिट गिट-पिट बोलें॥
गल नकटाई खूब सजाई ॥ २॥ नर नारी उड़े।
तिर्छी माँगे और ऊँची ऐड़ी, फिरती देखी लेडी।

हम खाना होटल में खाते, तुम क्या समझे गडी ॥
जाली बालो में काली लगायें ॥ ३ ॥

॥ वार्ता ॥

ई० १४६४ की एक ऐतिहासिक घटना से आज की नव युवतियों को शिक्षा लेनी चाहिये। ग्वालियर का राजा मान सिंह था उसी के राज्य में एक राई नाम का गाँव था। उसी गाँव की एक गूजर जाति की परिवार की निन्नी नाम की बाला थी जिस का आगे चलकर इतिहास में मृगनयनी नाम से जाना जायेगा। इस का एक छोटा भाई था। माता पिता का साया बचपन में ही समप्त हो गया था। धन घर भूमि हीन थी। इस की गरीबी का अनुचित लाभ उठा कर गाँव के लोगों ने उसी गाँव के भयानक जंगल के खेतों को दिन-रात की रखवाली करने का काम दे दिया था। उस के बदले में रोटी और कपड़ा तन ढकने के लिये निर्धारित किया गांव वालों ने। उस जंगल में बड़े बड़े भयानक हिसक जंगली जानवर रहा करते थे। जैसे बबर शेर, भेड़िया जक्र, अरसा भेंसा इत्यादि। इस देवी ने अपनी और अपने भाई की रक्षा हेतु तीर और बर्छी चलाने का अभ्यास करना आरम्भ किया। मूर्ख अभ्यास होने पर लोगों पर एक प्रकार की विजय प्राप्त कर ली थी और एक गरीव परिवार की लड़की उपरोक्त गाँव की ही लाखी देवी नाम की थी जो निनोदेवो के साथ अभ्यास रत थो। किसीं भी संघर्ष का सामना जब करना होता था तो उस के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर दुष्टों के साथ युद्ध किया करती थी। सज्जन लोग उस देवी को वीरागना देवी के रुप में सम्मान की दृष्टि से

देखते थे। और दुष्ट प्रवृति के लोग उस से ईर्ष्या करते थे। जैसे शराबी जुवारी, चोर, डाकु जार इत्यादि। क्योंकि वह देवी अपने ही तरीके से उन को कठोर दन्ड दिये बिना नहीं छोड़ती थी। इस लिये उस की न्याय प्रियता और वीरता की धाक सारे ही गाँव पर जम चुकी थी। इस लिये उस गाँव में चोर और डाकुओं का आक्रमण बन्द हो गया था।

किसी सज्जन व्यक्ति द्वारा ग्वालियर के महाराजा मानसिंह को निन्नीदेवी की वीरता की सुचना दे दी गई। उस की परीक्षा राजा अपने सैनिकों सहित लेने उसी गाँव में आ गये जैसा सुना परीक्षा में वैसो ही प्रवीण पाई महाराजा ने कंवल को फूल कीचड़ में पड़ा समझकर अगिकार करना चाहा। परन्तु उस देवी ने अपने ग्राम वासियो के लिये उचित सहायता प्रस्ताव राजा से मनवाकर ही अंगिकर प्रस्ताव स्वीकार किया उपरोक्त ऐतिहासिक घटना कपोल कलपित नहीं है। प्रमाण के लिये यदि आप देखना चाहें तो ग्वालियर शहर में जाकर देख सकते हैं वहाँ पर मृगनयनी का महल जाति के नाम से गूजरी महल ऐतिहासिक इमारत बनी हुई है उसी के साथ राजा मानसिंह के नाम से मान मन्दिर भी बना हुआ है। मृगनयनी ने राजा को रानी बनने के वाद मुगल साम्राज्य के युद्धों में उन के विरुद्ध लड़कर उन के साम्राज्य को हिला दिया था। राजा मानसिंह ने क्या परीक्षा ली थी मृगनयनी कि वह आप भजन के रुप में सुनिये।

दोहा ॥ 69 ॥

ओ३म् ओ३म जप कर के ओ३म् एक वीरांगना की कथा सुनानी है।
सन् १४६४ की एक घटना है, जो की रसीली बाणी है॥

भजन ॥ 70 ॥

बर्छी पैनी ले, मृगनयनी करने चली शिकार,
जहाँ वन घोर भयंकर ॥

तोर कमन्छा कन्धे पर, तिक्षण बरछी हाथ लई ।
संग सैकडों नर नारी, लाखी रानी संग लई ॥
मार्नसिह ने कहा होजाओ, घोड़े पर असवार,
जहां वन घोर भयंकर ॥ १ ॥

निन्नी ने इन्कार किया मैं घोडे पर चढ़ी नहीं ।
अब से पहले पैदल ही क्या मैं शेर से लड़ी नहीं ॥
बर्छी से नाहर अरणों भैसे मार दिये कई वार,
जहां वन घोर भयंकर ॥ २ ॥

महाराजा थे हाथी पर, कुछ घोड़ो पर असवार चढ़े हुये ।
शोर सुना नाहर उठा, बीहड़ वन में पडे हुये ॥
मृगनयनी पर टूट पड़ा था बाध एक बदकार,
जहां बन घोर भयंकर ॥ ३ ॥

चक्कर ले गई तरुवर का और ढाल की ओट को ।
नाटर पर मृगनयनी ने, झट बर्छो की चोट करी ॥
शेर की गर्दन में से बर्छी कर दई परली पार,
जहां बन घोर भयंकर ॥ ४ ॥

पीछे से अरणां भैसा, मृगनयनी पर टूट पड़ा ।
सम्भल गई थी मृगनयनी क्रोध बदन से फूट पड़ा ॥
सींग पकड़ लिये थे अरणों के होकर के होशियार,
जहां बन घोर भयंकर ॥ ५ ॥

नाड पकड़ मृगनयनी ने, अरणां भैसा गेर दिया।
लाखा रानी ने आकर, खडग नांड पर फेर दिया ।।
मानसिंह ने आके खुशी में, दीनीं गले में माला डाल,
जहाँ बन घोर भयंकर ।। ६ ।।

दुनियां के आर्य भाइयों उस देवीं से शिक्षा लो।
मांस न खाओ शराब ना पीओ, देश भक्ति की दीक्षा लो।।
इस देवी का गवालियर में है, गूजरी महल महान,
जहाँ वन घोर भयंकर ।। ७ ।।

कन्हैया लाल का गाना सुन कर, ब्रह्मचारणी वहन वनें ।
दुष्ट नीच मुस्टन्डों के लिये, बहने भयंकर काल बनें ।।
वन कर के लक्ष्मी वाई गुन्डों को करो देश से बाहर,
जहाँ बन घोर भयंकर ।। ८ ।।

।। वार्ता ।।

एक देश भक्त आर्य देवी रक्षाबन्धन के पर्व पर। अपने बड़े भाई के हाथ में पहोची बांन्ध कर, एक ओर खड़ी हो जाती है। उस का भाई पहोची के बदले में कुछ धन देना चाहता है। परन्तु बहन ने कहा भैया मैं धन को भूखी नहीं। मेरी भूख और है। भैया वचन दो मेरी इच्छा की पूर्ति करोगे। भैया ने कहा यदि मैं वहन की इच्छा की पूर्ति नहीं करुँगा तो मैं कैसा भैया। बोली वहन जी, आप की क्या इच्छा है? वहन की इच्छा भजन रुप में सुनिये :-

भजन ।। 71 ।।

देश से भगादे यह जो देश में तबाही है ।
मांग रही बे बे यही पहोची की बन्धाई है ।।

पाप का विसमार करना, धर्म का प्रचार करना।
तन पर विपता सह कर, सदा देश का सुधार करना ॥
आर्यों की मुख्य रीति ऋषियों ने बनाई है । १॥
इस को तू अपना ले यही पहौंची की बधाई है ॥
शूरवीर बन कर मत ना कायरों जैसे काम करिये ।
सन्ध्या और हवन भाई, सुबह व शाम करिये ॥
सत्यता से काम करिये इस में तेरी भलाई है ॥
वैदिक नारा लादे, ये ही पहौंची की बन्धाई है । २॥
चोरी, जारी, कृतन्घता के मत ना पास जाइये भाई ।
वैदिक, धर्म में लगाइये जिन्दगी के स्वांस भाई ॥
शराब और माँस भाई जितनी भी बुराई हैं ।
इनको कर दे नष्ट ये ही पहौंची की बन्धाई है ॥३॥
भंगड़ा और सनेमा, स्वांग, देखने ना जाइये भाई ।
सुनने को प्रचार विद्वानों को बुलाइये भाई ॥
ऐसे जलसों में जाइये, वही सब रोगों की दवाई है ॥
वैदिक पुस्तक लादे यही पहौंची बन्धाई है ॥४॥

दोहा ॥ 72 ॥

पाकिस्तानी शासकों के, है मन पर भूत सवार ।
समझाने से कभी ना माने, चाहे कोशिश करो हजार ।

भजन ॥ 73 ॥

तर्ज : ओ लूटने वाले...

हम ले ओ३म का झण्डा हाथों में, दुशमन पर बढ़ते जायेंगे ।
भारत माता के चरणों में तन मन धन भेंट चढ़ायेंगे ॥
कशमीर की सीमाओं पर चोटें, हैं चोट हमारे सीने पर ।
दुश्मन को जो शीस झुकादे, लानत है उसके जीने पर ॥
हम मृत्यु विजयी है, सतपन्थी, हम विजय केतु फहरायेंगे ।

बन राणाँ लक्ष्मी की तलवारें, रण कौशल आज दिखायेंगे।
बैरी के धड़ और मुन्डों की, काली को भेंट चढ़ायेंगे॥
दुश्मन की पत्थर छाती पर, अपनी बर्छी पहनायेंगे॥

॥ 2 ॥

स्वर्ण बेला की चिनगारी, तव ज्वाला बन कर धधकेगी।
हिम सरिता की क्रोधित लहरें, लपट बन कर लिपटेंगी॥
हम शीत नहीं हैं ग्रीष्म प्रखर, तेजी की ओर बढ़ायेंगे॥

॥ 3 ॥

हम दिल से चाहे ठण्डे हैं पर गर्मी में ही पलते हैं।
हम दुनियाँ के लिए है शुभ चिन्तक पर शत्रु को देख मचलते हैं॥
हम भोले है हम शंकर हैं, प्रलयंकर नृत्य नचायेंगे॥

॥ 4 ॥

तुम नशा चढ़ाये आखों में उपकारी को ललकार रहे।
पाकिस्तानी रिपुओ खबरदार, सीमाओं पर लाखों सिंह दहाड़ रहे॥
हम गीत लाल के गाते हैं, दुशमन को खाक मिलायेंगे॥

दोहा ॥ 74 ॥

ईश्वर को कर याद भाई. दुखियों की सुन फरियाद।
श्रेष्ठ कर्म करने मे तेरी, पूर्ण होय मुराद ॥

भजन ॥ 75 ॥

ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर।
जीवन की करले नैया पार ओ नादान मुसाफिर॥
प्रीति ना तोड़ देना, आसारान छोड़ देना।
वरना डूबती नाँव तेरी मझधार ओ नादान मुसाफिर ॥ १ ॥
बदियों से बचते जाना, जग में शुभ कर्म कमाना।
जितना है करले पर उपकार ओ नादान मुसाफिर ॥ २ ॥

दुखियों का दुख मिटादे, तन, मन, धन, भेंट चढ़ादे
जीवन जा पाया है दिन चार ।। ३ ।। ओ नादान मुसाफिर
ईश्वर है अन्त सहाई, उस को ना भूलो भाई ।
धोखा है देख सभी संसार ।। ४ ।। ओ नादान मुसाफिर
बन कर चल श्रेष्ठ मुसाफिर, कांटे मत बोना राह पर ।
भीष्म के शिष्य कहैन्या, आता और जाता है संसार ।। ५ ।।

दोहा ।। 76 ।।

ईश्वर के गुण समझ के भाई, गाओ उसी के गीत ।
उस बिन इस दुनियाँ में मनवा, और नही है मीत ।।

भजन ।। 77 ।।

स्थाई- ईश्वर के गुण गाओ मेरे प्यारे भाइयो ।
अन्तरा- शुद्ध पवन हो, साफ भवन हो ।
स्थाई- हर घर हवन रचाओ मेरे प्यारे भाइयो ।। १ ।।
मूर्खताई, हो दुःख दाई ।
लाली और ललना पढ़ाओ मेरे प्यारे भाइयो ।। २ ।।
मीरा बाई, सीता, गार्गी पन्डिता ।
सब की सब बन जाओ मेरी प्यारी बहनों ।। ३ ।।
जितने हमारे, गृहस्थ के सारे ।
पति संग नियम निभाओ, मेरी प्यारी बहनो ।। ४ ।।
सारा परिवार भाइयो प्रेम की धार में ।
आनन्द हो कर नहाओ मेरे प्यारे भाइयो ।। ५ ।।
घर की लड़ाई बुरी बताई ।
झगड़े वतन से निमटाओ मेरे प्यारे भाइयो ।। ६ ।।

घर की कमाई, दसवीं भाई ।
गुरुकुलों में पहुचाओ मेरे प्यारे भाइयो ॥ ७ ॥
जीवन सादा, उत्तम ज्यादा ।
सरलता को अपनाओ, मेरे प्यारे भाइयों ॥ ८ ॥
धर्म राम का, गीत काम का ।
हर घर में अपनाओ मेरे प्यारे भाइयो ॥ ९ ॥
कन्हैया लाल के, भजन काम के ।
जाकर आर्य समाज में गाओ मेरे प्यारे भाइयो ॥ १० ॥

॥ वार्ता ॥

प्रिय पाठको आज की दुनियाँ में अधिक व्यक्तियों का यह विचार बनता जा रहा है, कि प्राचीन काल में गोधन जितना उपयोगी था उतना अब नहीं है । यह वेद विरुद्ध बातें अथवा विचार हैं, क्योंकि वेद वाक्य पूर्ण हैं अपूर्ण नहीं है । गोधन को मां का स्थान वेद में है मां कभी अनुपयोगी नहीं होती भजन रुप में सुनिये ।

दोहा ॥ 78 ॥

गौ धन मात समान है, मन में करो विचार ।
इस की पूजा सेवा के बिना, डूबेगी मझधार ॥

आरती गौ माता की :- **भजन ॥ 79 ॥**

जय जय गौ माता ओ३म् जय जय गौ माता ।
तेरो जय में जय विश्व की माता सुख की दाता ॥
दूध दही रबड़ी मखन्न जो तेरी खाता ।
सब से अधिक अकल में और बल में कहलाता ॥
ओ३म् जय जय गौ माता ॥ १ ॥

तेरे घी से हवन करे जो प्रति दिवस भ्राता।
पवन शुद्ध हो और शुद्ध पानी बादल बर्षाता ।।
ओ३म् जय जय गौ माता ।। २ ।।

तेरे बछड़ों पर जुवा धर कर किसान हल बहाता।
अन्न कमा सब को अन्न देता देश का अन्न दाता ।।
ओ३म् जय जय गौ माता ।। ३ ।।

गोबर और मूत्र भी तेरा, अमूल्य कहलाता।
दर्श कान का पैर का चमरस, दो दिन में जाता ।।
ओ३म् जय जय गौ माता ।। ४ ।।

मरनें पर चमड़ा दे जाती, काम बहुत आता।
खाद बने तेरी हड्डी का, किसान ले जाता ।।
ओ३म् जय जय गौ माता ।। ५ ।।

दुख से छुट छुट कर, जो मानव सुख चाहता।
गौ माता का मान करो वेद धर्म वही बतलाता ।।
ओ३म् जय जय गौ माता ।। ६ ।।

दोहा ।। 80 ।।

उस प्यारे परमात्मा को याद कर हर बार।
श्रेष्ठ कर्म यदि करना है, तो मन में करो विचार ।।

भजन ।। 81 ।।

स्थाई- तुम्हारी याद में हर दम प्रभु जीवन बिताएँ हम।
हमें शुद्ध ज्ञान दो ।।

अन्तरा- मन चन्चल पल २ बहकाता।
ईश्वर भजन में लग नहीं पाता ।
चाहता हूँ मैं कम से कम को अधिक प्रातः सायं ।

मन लगा भगवान दो ॥ १ ॥

प्राणी मात्र की सेवा करूँ मैं।
दुखियों के सन्ताप हरुँ मैं।
डरुँ मैं ना चाहे आलम दिखायें लाखों रंजोगम,
यही बरदान दो ॥ २ ॥

राजा हो या महाराजा चाहे,
कितना हो वह रोब जमाये ।
सिवाये तेरे शाम सुन्द्रम किसी के सामने, सिर खम्,
वह आन दो ॥ ३ ॥

अत्याचार पाप जग अन्दर ना छोड़ेंगे आर्य वीर धुरेन्द्र,
राम, कृष्ण भीम अर्जुन बना भगवान दो ॥ ४ ॥

भजन ॥ 82 ॥

प्रभू प्यारे मेरे प्राणों के सब सन्ताप हर लेना ।
मेरी नस नस में बस बस के मेरे सब ताप हर लेना ॥
हृदय मेरे में तेरे नाम की बीणा बजे निशि दिन ।
हिले ना तार तिलभर भी मिलाप ऐसा ही कर देना ॥ १ ॥
तेरी भक्ति की शक्ति ही, बताती मुक्ति को युक्ति ।
मेरे हर रोम में बस ओ३म् का आलाप भर देना ॥ २ ॥
तेरी अग्नी में कर दूँ, मैं भस्म सारे असूलों को ।
हृदय में बन जाये देव मन्दिर, यह करुणा आप कर देना ॥ ३ ॥

भजन ॥ 83 ॥

स्थाई-

देश का सुधार भाई, होवे किस प्रकार भाई ।
कौन लगावे पार भाई इस भारत की नैया को ॥

अन्तरा- वेद कथा में लोन या चार, सिनेमा में कई हज़ार,
जा रहे बेशुमार देखने सांगीं, भंगड़ा नचैया को ।।१।।

भले आदमी दुःखी महान, मज़े करें गुन्डे शैतान ।
पाखन्डियों का नाम का कोई पूछे गर पढ़ैया को ।।२।।

दया धर्म भक्ति इन्साफ छोड़ दुनियाँ कर रही पाप ।
डुबो रहे हैं आप नाव, खुद दे रहे दोष खिवैया को ।।

परम पिता की शक्ति से जो नहीं डरता है इन्सान ।
यम के दूत पकड़ कर, ओ जालिम ले ज़ायेंगे तेरा कान ।।

क्यों मान रहा इन्सान आज ईश्वर की जगह रुपैया को ।

दोहा ।। 84 ।।

जिस घर बालक जन्म लेता है, उस घर खुशी अपार ।
बहनों मिल कर मंगल गाओ पवित्र शब्द विचार ।।

भजन ।। 85 ।।

बहनो गाओ मंगला चार नन्हें बालक ने जन्म लिया ।
सलाई एक सोने की लेकर उस बालक की रसना पर ।।
लिखो शब्द ओंकार ।। १ ।।

कान में उस के मुह लाओ, तू बेदोषी शब्द सुनाओ ।
ऊँचे बने विचार ।। २ ।।

जब से घर में बालक आया, देखो कैसा आनन्द छाया ।
खुश हो रहा परिवार ।। ३ ।।

गोद में लेकर देकर, लोगी इस बालक को उत्तम थ्योरी ।
समझाओ हर बार ।। ४ ।।

इन को कभी डराओ ना तुम, डोरीं गन्डे बन्धवाओ ना तुम।
करो उचित संस्कार ॥ ५ ॥

बुरी लतों से बचाना, विद्वानों को आप बुलाना
सुनने को प्रचार ॥ ६ ॥

॥ वार्ता ॥

पिता को अपनी कन्या के शुभ विवाह के अवसर पर इस प्रकार उपदेश देना चाहिये लिखकर।

तर्ज बिगड़ी बनाने वाला -

भजन ॥ 86 ॥

स्थाई- जुदा आज होता है टुकड़ा जिगर का।
हटाना ही पड़ता है दीपक धर का॥

अन्तरा- तेरा प्रेम बहने लगा बन के पानी, हुई पानी पानी मेरी जिन्दगानी

स्थाई- समय है कि कुछ तुझको उपहार दूँ मैं।
कोई वस्तु दूँ या अलंकार दूँ मैं ॥ १ ॥

जो चाहता है तुझ को रतन हार द्रूँ मैं न एक बार दूँ बल्कि सौवार दूँ मैं
परन्तु मेरे पास हीरे ना मोती ना गहना।
जो हैं भाव मेरे मुझे तुझ से कहना ॥ २ ॥

कटे जिन्दगी चाहे दुःख भरते भरते, ना धीरज को तजना
पड़े तुम पे संकट व जो कुछ भी।
कड़ा शब्द हरगिज़ पति से ना कहना ॥ ३ ॥

जो माथे पे तेरे कभी बल न होगा तो गरीबों में कोई भी निर्बल न होगा।
विनय पूर्वक ईश गुणगान करना।
न धनवान हो कर के अभिमान करना।४।

ससुर हो या हो जेठ भ्राता, उन्हें समझना पिता और माता।
किसी बात पर डाँट दे भीं जिठानी।
खफा सास हो या होवे देवरानी ।।५।।

यदि सास ने शब्द कैडा कहा है, तो उसका बुरा मानना ही बुरा है।
उलट कर उन्हें कोई उत्तर ना देना।
बतंगड़ जरा बात को कर ना लेना ।।६।।

पति को जो पूजेगी उद्धार होगा, इसी घाट बेड़ा तेरा पार होगा।
विनय पूर्वक ईश गुणगान करना।
न धनवान हो कर के अभिमान करना ।।७।।

प्रथम पूज्य ईश्वर है भरतार दूजा, इन्हें छोड़ पत्थर की करना न पूजा।
न कबरों पर जाकर के सिर को झुकाना।
न हरगिज मेरी बेटी शिक्षा भुलाना ।।८।।

भजन ।। 88 ।।

तर्ज हरियाणा……

चाय सनेमा बोड़ी सिगरेट जब से हुई है जारी।
दुनिया में है शोर मचा हाय बिमारी हाय बिमारी।।
तेल पकोड़े गर्म मसाले खावें, पोवें बरफ का पानी।
गले में ट्रान्जिस्टर लटकाये हुई गले की बिमारी।।
बुखार में संभोग करें, होवे टीबी की बिमारी ।।१।।
खांसी में सम्भोग करें, होवे दम्में की बिमारी।
चाय पीवें चार चार बार हो एगजीमें की बिमारी।।
जो समझाने पर भी न माने उसकी गई मति मारी ।।२।।

फिर नींद न आती विमारी, भूख लगे न बिमारी।
बाल गिरने की बिमारी, पेशाब अधिक आने की बिमारी ।।
समझ लो मेरे भाई ये बड़ी भयानक विमारी ।।३।।

उसका स्वास्थ्य ठीक समझो जो नींद समय पर आती हो।
उसका स्वास्थ्य ठीक समझो जो भूख समय पर लगती हो ।।
टट्टी पेशाब समय पर जावे फिर न कोई विमारी ।।४।।

चार सुख हों जिसको दुनिया में, वो करता फिरे खिलारी।
निरोगी काया घर में माया, पुत्र हो आज्ञाकारी ।।

कहे कन्हैया लाल आर्य जिसके घर हो सतवन्ती नारी।
स्वर्ग समान वह घर समझो उसकी खिली रहे फुलवारी ।।५।।

होली के पर्व पर कविता ।। 88 ।।

होली सो होली, सोच समझ कर खेलो होली।
कीचड़ न मारो, प्रेम से मिल लगाओ चन्दन की रोली ।।

होली का पर्व आया है, सुनो ध्यान से सब नर नार।
खान पान पहरान के ऊपर, आओ मिल कर करें विचार ।।

सादा खाओ फल रस पीओ, सादा पहनो सभी पहरान।
प्रहलाद भगत की ये ही है शिक्षा देश भगत बनो महान ।।

हिरणकुश जैसे अभिमानी अत्याचारी की जो करता है मदद।
ऐसे को होलका की भाँति फूको यही हमारा है मकसद ।।

किसी गलतफहमी से, यदि आपस में हो गई है अनबन।
तो आओ मिल कर बैठें गलत बात का कर दें दमन ।।

यदि चाहते हो सभा में कभी कहीं बोलना।
उस से पहले, सभ्यता संस्कृति के ग्रन्थों को टटोलना ।।

भाग तीसरा :- हास्य रस भजन माला ॥

दोहा ॥ 89 ॥

क्रीड़ास्थल ये है दुनियाँ प्यार प्रेम से खेलो खेल।
जो लालच के वशीभूत हो उस को करदो फेल ॥

प्यारा धर्म न भैया,
सब से बड़ा रुपैया ।

मेरे विचार से धर्म परिवर्तन का कारण आज के नेता यह मानते है, कि ऊँची जाति के लोग नीचीं जाति के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं उन को पीटते है सताते हैं। इसलिये धर्म परिवर्तन करते हैं। मेरा विचार इस के विपरीत है।

प्राचीन काल से ही यह इतिहास बताता है कि बहुमत ही अल्प मत को सताता आया है जिसका जहाँ भीं बहुमत है। आइये सुनिए समझकर विचार कीजिये निष्पक्ष हो कर धर्म परिवर्तन का कारण और उस का हल क्या होना चाहिये देखिये एक हरिजन बन्धु मेरे से क्या पूछता है ?

तर्ज आनन्दी **भजन ॥ 90 ॥**

मैं हरिजन हूँ मैं हरिजन हूँ, पर भूमि हीन लाभ से वन्चित हूँ।
क्यों कि भूमि का भूमिधर, पहले से बना हुआ में हूँ ॥
महाशय जी कोई ऐसी विधि बताओ, जो भूमि हीन लाभ फल पाऊँ मैं
नोट प्लाट का भागी बन, कोठी में मौज उड़ाऊँ मैं ॥

नोट- मैंने हास्य रस में उत्तर दिया :-

लाखों की भूमि बेच के प्यारे पंजाब बैंक में जमा करो।
है कन्हैया लाल को राय यही, भूमि हीन लाभ लिस्ट में नाम भरो।
यदि फिर भी भारत सरकार, लाभ देने की आना कानी करती है।

धर्म परिवर्तन में नाम लिखाओ, इस से सरकार ये डरती हैं ।।
जाति प्रथा भारत सरकार जब तक नहीं मिटायेगी ।
है कन्हैया लाल का ख्याल ये ही, ये मांगे बढ़ती जायेंगी ।।

दोहा ।। 91 ।।

जाति मनुष्य की एक हैं, बतलाते चारों वेद ।
वेद धर्म मनुष्य जाति का, न समझे यह खेद ।।

हमारी भारत सरकार धर्म निरपेक्ष नीति पर आधारित है । फिर उसके उलंघन कर्ता को आदर का स्थान हमारी सरकार को मेरे विचार से देना चाहिए था। जैसे स्वर्गीय डा० भीमराव अम्बेदगर हिन्दुओं आर्यों का समातन धर्म वेद है । वेद धर्म के मानने वालों के जो ऋषि महात्मा साधु सन्त है क्या उन का स्थान बौद्ध धर्म में है. यानि नहीं है तो बौद्ध धर्म के अनुयाई का क्या अधिकार है दूसरे के धर्म ग्रन्थ पर झूठा आरोप लगा कर उस में आग लगा कर फूंक कर दूसरे के धर्म का अपमान करें मैं अपने शूद्र वर्ण के मानने वाले बन्धुओं से यह जानना चाहता हूँ बौद्ध धर्म के मानने वाले स्वर्गीय डाक्टर भीम राव अम्बेदगर के बौद्ध धर्म में ऋषि बाल्मीकी का स्थान महात्मा रैदास भगत का स्थान है महात्मा कबीर जी का स्थान है यदि नहीं तो उस का क्या अधिकार था हिन्दुओ की दो जाति बनाने का जैसे सवर्ण हिन्दू असवर्ण हिन्दू । मानव वेद धर्म की एकता रुपी रोड की हड्डी को तोड़ कर, हम में फूट डाल कर, हमें एक दूसरे का विरोधी बना कर आप नेता वना था ।

मानव धर्म वेद विधान में मनुस्मृति में कहीं भी मनुष्य की दो जाति नहीं लिखी हैं । प्राचीन काल से ही मनुष्य के गुण के

आधार पर चार वर्ण लिखे हैं जैसे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य, शुद्र, मनुस्मृति के आधार पर यह कह सकता हूँ कि स्वर्गीय डा० भीम राव अम्बेदकर प्राचीन भारतीय सभ्यता संस्कृति के शत्रु थे। उस व्यक्ति को जो लोग वेद धर्म के रहते धर्म का गुरु मानते हैं मेरे विचार से उन की बुद्धि को ताला लग गया है।

भजन ॥ 92 ॥

सुनो मेरे मित्रों मैं क्या चाहता हूँ।
शहीदो की याद दिलाना चाहता हूँ॥
शिक्षायें शहीदों की याद दिलाती। दो बार
वतन बच जाए मैं कफन चाहता हूँ॥ १॥

विद्यार्थी होंवें दयानन्द जैसे। दो बार
मैं भारत में ऐसे जवाँ चाहता हूँ॥ २॥

वतन की ये बहनें, सीता सी बन जायें।
मैं सोने की लंका जली देखना चाहता हूँ॥ ३॥

लालच में आकर निरंजन नेता जी को मारे।
मैं करनल लक्ष्मी की पिस्तोल देखना चाहता हूँ॥ ४॥

रिश्वत खोरी, सीना जोरी। दो बार
मैं इस पे जबरदस्त नियन्त्रण चाहता हूँ॥५॥

अधिकारी, कर्मचारी नीति को बरतें।
मैं जनता का ऐसा भला चाहता हूँ॥६॥
ये कवितायें हैं मेरी मैं छपवा ना सकता।
मैं निर्धनता में दबा जायता हूँ॥७॥

कन्हैया की वाणी है दिल को हिलाणी ।
मैं बुराड़ी में अपना घर चाहता हूँ ॥८॥

संघ गीत ॥ 93 ॥

जागे मेरा देश महान, यह धरती यह हिन्दुस्तान ।
वेद ज्ञान का उदय सूर्य हो, पुनः धर्म का हो सम्मान ।
गौ पूजा गायत्री का जप, गंगा गीता के गुणगान ।
पुनः जन्म लें इस धरती पर कर्मवीर और ऋषि महान् ॥
जागे मेरा देश महान ॥१॥

ढंडे से भी ना दर्शन हों, दीन दुःखी के यहां कभी ।
अन्न वस्त्र गृह आत्मज्ञान के, रहें भरे भण्डार सभी ।
फले फूले फिर से जग भीतर, भारत देश यह विश्व महान् ॥
जागे मेरा देश महान ॥२॥

भौतिकता में भटक रहे, मानव को हम पुनः बचायें ।
और पकड़ के आत्म ज्ञान के, राज मार्ग पर लायें ॥
पुनः विश्व के प्राणि मात्र का, अपने द्वारा हो कल्याण ॥
जागे मेरा देश महान ॥३॥

विश्व गुरु सिंहासन पर, फिर बैठे भारत माता ।
दीखे पुनः संसार समर में, माँ को सीस नवाता ॥
हिमगिरि के शिखरों पर फहरे, आर्य राष्ट्र का अमर निशान ॥
जागे मेरा देश महान ॥४॥

भजन ॥ 94 ॥

तर्ज : गजल

स्थाई :- जानता हूँ जहां तक मेरा ख्याल है ।

अन्तरा - बाते करने के बेहद ये शौकीन हैं।

स्थाई – वक्त करने का आया तो बस हाल है ॥१॥

नाम आर्य धरा और जनेऊ लिया।
परन्तु घर में पाखण्डों की वही चाल है ॥२॥
कोई कहते हमारा सनातन धर्म।
पर पुराणों का गल में पड़ा जाल है ॥३॥
अपनी अपनी ये ढपली बजाते फिरें।
मृत्यु आ रही तुम्हारी ये अकाल है ॥४॥
आप अपनी ही ऐठें फिरें ऐंठ में।
शक्ति घटती तुम्हारी ये हर साल है ॥५॥

जैसे तबला सारंगी भी पिटती रहे।
जब तक आपस में मिलता ना स्वर ताल है ॥६॥

यदि आप लड़ते रहे डाकू घर में घुसे।
विद्या बल को भी लूटेंगे धन माल है ॥७॥

देश भक्तों ने कितनी मुसीबत सही।
जैसे आर्य मुसाफिर वह सुख लाल है ॥८॥

छोड़ घर को प्रभु के भरोसे गये।
कष्ट सिर पे उठाया क्या विकराल है ॥९॥
कहता भीष्म का शिष्य जो तुम खड़े हो गये।
तो फिर गैरों की गलेगी नहीं दाल है ॥१०॥

भजन ॥ 95 ॥

तर्ज- हरियाणा

टंक :- मरते हैं दुर्गति हो हो कर गद्दार इस दुनियाँ में। दो बार

कली :- अपने स्वार्थ में फंस कर औरों का खूँन बहाते हैं।
कल कारखाने और मीलो में जो मजदूर कमाते हैं।।
मजदूरों के खून से पेटू पूँजीपति बन जाते हैं।
कभी मोटर में हवा खाते हैं कभी नौकर फिटिन सजाते हैं,
कभी फ़स्ट में लेट लगाते हैं।

तोड़ :- पूँजीपति हैं मजदूरों पर भार इस दुनियाँ में ।।१।।

कली :- मजदूरों ने खूँ पसीना कर के करी कमाई है।
पेठू सेठ ने शादी में पानी की तरह बहाई है।।
दुनियाँ भर के शराबी बुलाये बारात सजाई है।
भंगड़े की कहीं अवाई है बड़ी भारी बारात आई है।
माईक में बजा के धूम मचाई है।

तोड़ :- विदा के ऊपर फैंक दिये कई हजार दुनियाँ में ।।२।।

कली :- बूढ़ा बाप या माँ मर गई अब ये रकम लूटाने लगा।
बढ़िया अर्थी सजाई उसको विवाणा बनलाने लगा।।
पन्द्रह बीस दुशाले डाले पापी ज़नरथ ढाने लगा।
बढ़िया बाजा बजवाने लगा. सोना चांदी वर्षाने लगा।
पीछे खेड़ा करवाने लगा।।

तोड़ :- मजदूरों के बालक करें सर्दी में हा हा कार इस दुनियाँ में

कल :- इसी तरह राजा के राज्य में प्रजा जहाँ दुखारी हो।
नहीं राज्य रह सकता आखिर मुख्यमन्त्री नर्क का अधिकारी हो।
हाँ में हाँ करने वाले जहाँ मन्त्री अत्याचारी हों।
दुःखी देख कर मजदूरों को जों अपना खून बहाते हैं।।
हिन्दु जाति का कितना बुरा हाल हैं।।

वह जीवन सफल बनाते हैं ॥
कन्हैया लाल दुखियों की सेवा करनी चाहिये दुनियां में ॥४॥

तर्ज ओ लूटने वाले जादूगर **दोहा ॥ 96 ॥**

स्थाई- भारत के आर्य बच्चों को हम अर्जुन भीम बनायेंगे।
इस देश के बांके वीरों को, शस्त्र विद्या सिखलायेंगे ॥

अन्तरा- भारत की रक्षा की खातिर हम ऐसी फौज सजायेंगे।

स्थाई- जो भी आयेगा रास्ते में, ठोकर से उसे हटायेंगे ॥ १॥
पाकिस्तानी गुन्डे जब भी सीमा पर शोर मचायेंगे।
मारेंगे मार उन्हें ऐसी कराची तक दौड़े जायेंगे ॥ २ ॥

हाय कतल किये निर्दोष हिन्दू मन्दिर भी सभी गिराये हैं।
जो जुलम किए हैं उन गुन्डो ने, हम उन को मज़ा चखायेंगे।३।

रग रग में खूँन है अर्जुन का, हम हनुमान के साथी हैं।
इस पाकिस्तानी लंका को, दुनियाँ से खोज मिटायेंगे ॥४॥

जो पाकिस्तानी चक्रव्यू, जिन्नाह ने वहाँ बनाया था।
तोड़ेंगें अभियमन्यु बन कर, हम ईट से ईट बजायेगें ॥५ ॥

गये भूल हैं जब गजनी ने आकर, आर्य बीरो को लल ारा था।
हैं लाल उन्हें एक बार वही, नलवे की याद दिलावेंगे ॥६॥

भजन ॥ 97 ॥

स्वामी फिर भारत में आना, स्वामी फिर भारत में आना।
तेरे वेद पे सं ट भारी, चढ़ बन कर कौरवो अत्याचारी।
अब आकर तुरन्त लखाना ॥ १ ॥

तरह तरह के संघ बने है, इन में अनीश्वरवादी घने हैं।
आ ओ३म् का नाद बजाना ।। २ ।।

सब सन्ध्या हवन भूल गये, सभ्यता सुसंस्कृति वेद भूल गये।
इन को वेद का ज्ञान सिखाना ।। ३ ।।

रिश्वत, चोर, जार बढ़े आदि, पीर पैगम्बर अल्लाह् आदी।
ये शाने ढेड मिटाना ।। ४ ।।

भाँड भन्डेले भगड़े आदि, शराब, सुल्फा गांभा आदि।
आ सब इन से छुटवाना ।। ५ ।।

तेरा दास कन्हैया प्रभु चाहे, इस देश को आर्य वनाना ।
वह शक्ति हमें दिलाना ।। ६ ।।

।। ओ३म् की कर वन्दना ।।

कविता ।। 98 ।।

आनन्दी—

हम सब का आदि अन्त ओ३म् है, वेदों का कहना है यही।
है कर्ता धर्ता विश्व का, वेदों का कहना है यही।
हम वन्धना करें हे पिता, बन्धन से हम को दे छुड़ा।
तू सर्वव्यापक ओ३म् है, विश्व में सब से बड़ा ।।

वार्ता — किसी कवि ने कही हैं यह चार लाइनें :-

।। कविता ।।

किस भांति जीना चाहिये, किस भांति मरना चाहिये।
सो पद हमें निज पूर्वजों से सीख लेना चाहिये ।।
पद चिन्ह उनके यत्न पूर्वक खोज लेने चाहियें।
निज पूर्व गौरव दीप को बुझने न देना चाहिये ।।

कविता ॥ 99 ॥

इन्सान ही इन्सान के भाई, काम आता है।
वो श्रेष्ठ इन्सान है जो दुखियों के काम आता है॥

जो किसी की शर्म न करें, वह भी दुष्ट इन्सान है।
दुःखी शरणागत की जो रक्षा करे, वह श्रेष्ट इन्सान है॥

आनन्दी ॥ 100 ॥

जिस घर में बैर न उस को खैर, यह दुनियां कहती आई है।
इतिहास भी ये ही कहते आये यह मार्ग बड़ा दुःख दाई है॥

यह बैर सभी को खाता है, वादी हो या प्रतिवादी हो।
बेचैनी सब में पैदा कर देता घर, गांव, शहर चाहे देश भी हो॥

इस लिये हे मानवो प्रार्थना है मेरी सब न्याय नीति को अपनाओ तुम।
आर्यों का संगठन बना, घर गांव शहर देश को बचाओ तुम॥

क्या बाट देखते औरों की, ये काम नवयुवको तुम्हीं को करना है।
श्रेष्ठ कार्य कर के भैया, भवसागर पार उतरना है॥

भजन ॥ 101 ॥

तर्ज - जिया बेकरार है छाई बहार है।

स्थाई- वेद मुक्ति को द्वार है जिससे उस का प्यार है।
उस का बेड़ा पार हैं वह चार पदार्थ पालेगा।

अन्तरा- वेद ईश्वर का ज्ञान अनादि, नित्य नाश नहीं होता है।
उस का उस में लीन रहे जब जग प्रलय में सोता है॥

स्थाई- जब प्रलय का नाश हो और रचना की आस हो।
वेदों का प्रकाश हो, जो योग्य वह अपना लेना ॥ १ ॥

कली- अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, ऋषियों के नाम सदा।
जिन के ऊपर हो प्रकाशित, वेद मुक्ति के धाम सदा॥

जिस की पवित्र आत्मा द्रोह रहित धर्मात्मा,
परम पिता, परमात्मा, उस को ज्ञान सिखाएगा॥ २॥

जिस ने उन से वेद पढ़े, उस का नाम होता ब्रह्मा।
ज्ञान और विज्ञान के वेत्ता ब्रह्म ऋषि विश्वकर्मा॥

फिर सब ने अपना लिया पुस्तकाकार बना लिया।
जिस ने उस को पा लिया वो आवागमन मिटालेगा॥ ३॥

ईश ऋषि और जीव ऋषि जिसने उस को जान लिया।
ईश्वर जीव, प्रकृति, इन तीनों को पहचान लिया॥

वह पूरा विद्यवान है उस का ही कल्याण है।
योगी यति महान है, वो सब के बन्ध छुड़ा लेगा॥ ४॥

कली- जितनी वस्तु भूगोल में हैं सब को वेद बताता है।
किस से क्या उपयोग है लेना सब को वेद बताता हैं॥

जिस ने उस को पा लिया योग अभ्यास अपना लिया।
तीन दुःखों का नाश किया उस परम पिता को पालेगा॥५॥

वैदिक धर्म अनादि है, और मजहव दिन थोड़े के।
जैनी, बौद्ध, ईसाई, मुसलिम ये कहाँ इस के जोड़े के॥

वाईविल और कुरान है, इस के रचियता इन्सान हैं।
भीष्म के शिष्य के भाव महान हैं वह भजन बनाकर गालेगा।६।

॥ वार्ता ॥

प्रिय मित्रो महर्षि दयानन्द जी ने संसार के मनुष्यों को उच्चकोटी का ज्ञान दिया है यदि हम निष्पक्ष होकर विचार

करे तो हम अवश्य ही यह मान जायेंगे। स्वामी जी ने श्री राम श्री कृष्ण या और देवी देवताओं के नाम से मन्दिर नहीं बनवाये क्योंकि वर्तमान समय में रहने वाले मनुष्य ही अच्छे मनुष्यों के नाम से ही आर्य समाज मन्दिर बनवाये। क्यों कि देश का या संसार की बुराइयों को हटाने के लिये हमारे देवी देवता या राम कृष्ण जो कभी दोबारा नहीं आये प्रकृति के नियम के अनुसार कभी नहीं आ सकते हैं।

उसी मार्ग को अच्छा मनुष्य मान कर ही बुराइयाँ को दूर हटाने के लिए आर्यो [अच्छे] मनुष्यों का संगठन बना कर दूर हटा सकते हैं। क्योंकि बुराइयों को समाप्त करने के लिये जीवित स्वस्थ शरीर चाहिये। धन चाहिये अस्त्र, शास्त्र चाहियें। यह सामग्री मृत देवी देवताओं या महापुरुषों, अवतारों के द्वारा उपलब्ध नहीं हो सकती उपरोक्त कार्य को पूर्ण करने के लिये आर्य मनुष्यों के नाम से आर्य समाज मन्दिरों का निर्माण उचित ही कराया था क्यों कि आर्यों के समाज का नाम ही आर्य समाज है। उन के बैठने के लिए मन्दिर चाहिये इसलिये आर्य समाज मन्दिर नाम है। जो समाज सुधार के लिए विचार कर सकें। गुण, कर्म स्वभाव के आधार पर मनुष्यों में भेद पाये जाते हैं आर्य और दस्यु इसलिये वेद में कहा है "विजानीत्यार्न्ये च दस्यव:" ऋग्वेद

आर्य, अनार्य में भेद :-

हमारे भगवान राम आर्य थे उन्हों ने शराबी, माँसाहारी पर स्त्री गमनों को मारा साधू सन्तो को पीढ़ा देने वालों को मारा। वे मरने वाले आज के युग में भी हैं।

मूर्ति पूजा वेदोक्त नहीं है

हमाये सनातन धर्म का अनादि मूल वेद हैं। उस में ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है। आकार कुछ नहीं है। इसलिये उस को निराकार कहा है तो फिर आकार मानना ठीक नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं बिना आकार के उस में हम ध्यान कैसे लगायें, पहली बात तो यह है कि आकार मूर्ति पूजा से अनर्थ हो सकता है भोले भाले भक्त लोग मूर्ति रूप में परमात्मा को परास्त करने की इच्छा से अकाल अपनी जान दे देते हैं। जब कि वह मूर्ति बोल खा नहीं सकती। दूसरो ध्यान की बात है, हमारे प्राचीन वेद शास्त्र, भूगोल की जान कारी दे चुके हैं। सूर्य, चन्द्र, तारे, पहाड़, समुद्र, भूमि जो हमें दीख रही है उस को देख कर यदि हमारा ध्यान मन प्रभु भजन भक्ति में नहीं लग सकता तो एक मूर्ति पत्थर क छोटे से टुकड़े से कैसे मन लग सकता है। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है भोले भाले मनुष्यों को ठगने के लिये दुकानें बनाई हैं चालाक व्यक्तियों ने।

जो लोग यह कह कर अपनी बात की पुष्टि करते हैं कि अमुक समय में भक्तों को मूर्ति में य देवी देवताओं ने, अवतारों ने भक्ति से प्रभावित हो कर दर्शन दिये हैं, वह सफेद झूठ बोलते हैं। या कपोल कल्पित पुस्तकों को थोड़ा अध्ययन कर के बाद विवाद करना आरम्भ कर देते हैं सनातन धर्म क मूल ग्रन्थ चार वेद शास्त्र है उन को सुनें पढ़े बिना वास्तविकता का पता नहीं चलता है। केवल पोराणिक लोग अपनी पूजा हेतु धन उपार्जन हेतु मूर्ति पूजा का आडम्बर रचाए हुए हैं। मैं सस्कृति पढ़ा हुआ नहीं न चारों वेद छः शास्त्र पढ़े हैं मैंने केवल सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन

किया है। उसी के आधार पर अपने विचार पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। महर्षि दयानन्द कृत यह ग्रन्थ है। मैंने स्वामी जी के जीवन चरित्र को भी पढ़ा है कोई लोभ लालच या मान बढ़ाई के उद्धेश्य का संकत नहीं है। इस की पुष्टि राजनैतिक विद्धानों ने धार्मिक विद्धानों ने अपनी कलम से लिख कर भूरी-भूरी प्रशंसा की सारे विश्व के विद्धानों ने वेयाकरणों के अनुसार स्वामी जी ने अपने सब सुखो को लात मार कर मानव कल्याण हेतु ही अथक परिश्रम कर के सत्याथं प्रकाश ग्रन्थ द्वारा विश्व के मनुष्यों को जो शुभ सन्देश दिया था उसी को याद दिलाना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। यदि इतना समझाने पर मेरे बन्धु व बहिने अन्धविश्वास को नहीं त्यागें तो यही मैं कह सकता हूँ कि वैज्ञानिक दृष्टि से पत्थर मूर्ति से मनुष्य रुप प्रकट नहीं हो सकता है। तर्क की दृष्टि से भी नहीं सिद्ध हो सकता है। यदि फिर भी हठ धर्मी न त्यागें तो यही कहा जा सकता है।

दोहा ॥ 102 ॥

जड़ की पूजा करने से, बुद्धि जड़ हो जाती है।
भगवान की पूजा करने से, चैतन्यता आजाती है॥

शेर ॥ 103 ॥

वेद का प्रचार हर घर में होना चाहिये।
हर गाँव नगर में, आर्य मन्दिर बनाना चाहिय॥

कम से कम वेद पुस्तक, पास होना चाहिये।
सब के घर में सत्यार्थप्रकाश, होना चहिये॥

संस्कृत और शुद्ध भाषा, सीखें नर नारी सभी।
वेद और मनु को पढ़ें राज्य कर्मचारी सभी॥

और सिनेमा घर क आगे, न बुरी तसवीर हो।
वीर रस के गाने हों, धार्मिक तसवीर हो ॥

राज्य न्यायालयों में हर दम, छनता नीर क्षीर हो।
नष्ट पाकिस्तान हो, और देश में कश्मीर हो ॥

कन्हैया लाल अनपढ़ न रहा, बुराड़ी में तकरीर हो।
गाना शार्मानन्द का, मटका बजाता कवल सिंह वीर हो ॥

भजन ॥ 104 ॥

तर्ज कव्वाली।

स्थाई- भाई ये चमन तूने छोड़ जाना है कभी।
मालो जर और घर बिगाना हो कभी ॥

अन्तरा- बाग बंगले सब पड़े रह जायेंगे, नारो सुत भाई खड़े रह जायेंगे :

दूसरों का आशियान हो कभी ॥ १ ॥
साथ का साथी कोई साथ नहीं,
औषधी भी काम कोई आती नहीं।

पाँचों में पाँचों समान हो कभी ॥ २ ॥
न रहा कोई न रहेगा ये नियम है,
झूंठे फूलों से ये झूठा प्रेम है।

त्याग जंगल में ठिकाना हो कभी ॥ ३ ॥
सूखे पत्तों को लख कलियाँ हंस रही,
उड़ चलो प्यारी हवा दिन दस रही।

पिन्जर सब का ये पुराना हो कभी ॥ ४ ॥
किस लिए नाहक फंसा अभिमान में,

भस्मी बन होगी पड़ी सम्सान में,
नारी को आंसू बहाना हो कभी ॥५॥

भक्ति कर जगदीश की एकान्त हो,
भीष्म का शिष्य भय को भगा और शान्त हो।

जो भजन लिखना लिखाना हो कभी ॥६॥

तर्ज गज़ल

भजन ॥ 105 ॥

स्थाई - समझ व सोच कर चलना तू ओ इन्सान दुनिया में।
तेरे जीवन की किशती है, बड़े तूफान दुनियाँ में॥

अन्तरा - मुसाफिर आते जाते हैं ये जग सराय में निश दिन।

स्थाई - मकाँ नारी ना संग जायेगा, कोई सामान दुनियाँ में ॥१॥
बन्धी है हाथ में तेरे घड़ी, और क्या बताती है।
ये पल-पल जा रहा बीता, समय पहिचान दुनिया में ॥२॥

नहीं होता गरीबों का, कभी भगवान भी साथी।
सताते रहते निर्बल को, सदा शैतान दुनियाँ में ॥३॥

बैन, और कंस, दुर्योधन, मान ढहता गया जग में।
कहाँ है गौरी और खिलजी, वो नादिरखाँ दुनियाँ में ॥४॥

वो सर्व शक्तिमान नित देखे, ना कर कोई गुनाह छुप कर।
रे भाई दूध और पानी, हमेशा छान दुनियाँ में ॥५॥

बदी नेकी ही संग जाये, बदी से बाज़ आजा तू।
अमर रह जायेगा, वेद का ज्ञान दुनियाँ में ॥६॥

गुरु भीष्म का शिष्य भी, हमेशा अपनी गलती को देखें।
कभी गलती से गल जाये ना, मेरा ज्ञान दुनियाँ में ॥६॥

भजन ॥ 106 ॥

तर्ज : रोहिणी, हरियाणी

स्थाई- सुनो भारत के कर्णधारो, अब यही है अरज़ हमारी।

अन्तरा- मानवता के नियम को देखो

पक्ष ना देखो कष्ट को देखो ।

श्रेष्ठ कर्म विचारीं ॥ १ ॥

हरिजनों के जो कष्टों को हरते,

जीवन अपना सार्थक करते ।

बन कर के न्यायकारी ॥ २ ॥

छोटे कृषक और मज़दूर बिचारे,

निशि दिन फिरते मारे मारे ।

क्योंकि बेकारी की है लाचारी । ३ ॥

चोर, रिश्वत खोर भ्रष्टों का यहाँ डेरा,

इन को कोई सजा न दे रहा ।

जनता को बड़ी है लाचारी ।! ४ ॥

जब हम इन को पकड़वाते है,

रिश्वत देकर छूट जाते है ।

क्योंकि रिश्वत की भरमारी ॥ ५ ॥

कृषि भूमि के झूठे केसों में,

तीसों वर्षो धक्के खाते न्यायालयों में ।

वहां न के बराबर न्यायाकारी ॥ ६ ॥

रिश्वत खोरी ब्लैक की जोरी,

देश की इस दुनियाँ में खोरी ।

कुछ ध्यान करो अधिकारी ॥ ७ ॥
सोते जागते ज़िकर येही है,
हम सब के मन में फिक्र यही है।

रक्षा करोगे या होवेगी खुवारी ॥ ८ ॥
कन्हैया लाल आर्य भजन बनाता,

दिनेश कुमार करूणा स्वर में सुनाता।
अपने भाइयों की कष्ट बिमारी ॥ ९ ॥

दोहा ॥ 107 ॥

देश की सीमाओं की रक्षा ठीक हो, बीच में हो गड़बड़।
नवयुवको वह देश बच सकता नहीं, आखिर जाय उजड़ ॥

भजन ॥ 108 ॥

नौ जवानो आजाओ होश में, सारा देश बिगड़ता जा।
स्वतन्त्र देश हमार में, भ्रष्टाचार यहाँ बढ़ता जा ॥

महावीरों ने बन्दर, काग निकाले, बने तुम देश के रखवाले।
न बनो शराबी भंगड़ा नाचन वाले ॥

आर्य जाति जने क्यों तेरा रसमों रिवाज़ बिगड़ता जा।
नौ जवानो आजाओ होश में, सारा देश बिगड़ता जा ॥

॥ १ ॥

रहा न ईश्वर भक्त समाज, हवन सन्ध्या का मिटा रिवाज़,
सुता सतियों की लुट रही लाज।

विदेशियों का असर बेहूदा, थारे सिर पे चढ़ता जा।
नौ जवानों आजाओ होश में सारा देश बिगड़ता जा ॥

॥ २ ॥

परमार्थ और प्रेम दान कहां, गुरु शिष्यों का आज मान कहां
संस्कृत और वेद ज्ञान कहाँ ?

पशुओं के माँसों से हर एक शहर देखलो पटता जा ॥
नौ जवानो आजाओ होश में सारा देश बिगड़ता जा ॥

॥ ३ ॥

गये सब त्याग तपस्या भूल, झूठ बेइमानी करी कबूल,
रिश्वत चोरी जारी मूल ।

धर्म कर्म और पंच यज्ञ का बिलकुल बाग उजड़ता जा ।
नौ जवानो आजाओ होश में सारा देश बिगड़ता जा ॥

॥ ४ ॥

अंग्रेज तो चले गये हैं भाई, अब अंग्रेज़ियत की बारी आई,
पहरते कोट, बूट नकटाई ।

कहे आर्य ऋषि दयानन्द का, अहसान धूल में रलता जा ।
नौ जवानो आजाओ होश पें सारा देश बिगड़ता जा ॥ ५ ॥

दोहा ॥ 109 ॥

जाति मनुष्य एक है, गुण कर्मों से वर्ण अनेकों देख ।
श्रेष्ठ कर्म करने से आर्य कहलाते, शेष अनार्य देख ॥

भजन ॥ 110 ॥

नर और नारी बात हमारी सुनो लगा कर कान,
आर्य देश बनाओ ॥

ज्ञान तपस्वी सन्तोषी, सत्यवादी इन्सान बनें ।
दानी दयालु जितेन्द्रिय, शील स्वभाव महान बनें ॥

आठ गुणों को धारण करके होगा देश उत्थान ।
आर्य देश बनाओ ।। १ ।।

स्वाध्याय सन्ध्या नित्य प्रति, और सोलह संस्कार करें ।
करे विवाह स्वयंवर से, और स्वराज्य के संग प्यार करें ।।
पंचायतों से न्याय करें, बन कर के पंच प्रधान ।
आर्य देश बनाओ ।। २ ।।

न्याय नीति पर अटल रहें, और मृत्यु को याद करें ।
सज्जन पुरुषों की रक्षा, और दुष्टों को बरबाद करें ।।
सत्यार्थप्रकाश पढ़, हो सत्यासत्य का ज्ञान ।
आर्य देश बनाओ ।। ३ ।।

आर्य देवी हर घर में, व्यायाम नित्य प्रति दिन करती हो ।
दही बिलोई जाती हो, बछड़े गऊवें रम्भाती हो ।।
हवन की धुवांधार हो घर घर, नगर आये जान ।
आर्य देश बचाओ ।। ४ ।।

मल्ह युद्ध करने के लिये, हर जा बने अखाड़े हों ।
युवति युवक व्यायाम करें, गर्मी हो या सर्दी हो ।।
ब्रह्मचर्य का पालन करके, हों बलवान जवान ।
आर्य देश बनाओ ।। ५ ।।

भंगड़ा, शराबी मांसाहारी ना कोई, उपदेश करें ।
सत्यार्थप्रकाश का तो, स्वाध्याय हमेशा करें ।।
कहे भीष्म का शिष्य वैदिक सिद्धान्त पर देकर के व्याख्यान,
आर्य देश बनाओ ।। ६ ।।

गुरु शिष्य सम्वाद ॥ 111 ॥

प्रश्न- श्रीं शर्मानन्द त्यागी का :—

गुरु जी आप के भजन उपदेश तो बहुत अच्छे हैं परन्तु मैं अपनी शंकाओं का निवारण करने हेतु यह जानना चाहता हूँ कि अपने देश समाज की आपने जीवन में क्या सेवा की है और मुझे यह भी प्रतीत हुआ है, आप के लेख से कि आप देवी देवताओं को और अवतारों को महत्व नहीं देते हैं क्योंकि आप के भजन उपदेश में उन की कहीं भी उपासना नहीं लिखी है।

उत्तर- कन्हैया लाल आर्य का :—

प्रिय शर्मानन्द त्यागी जी, आप के दो प्रश्न हैं जिन का मैंने उत्तर देना है। सुनो पहला प्रश्न :- देश समाज की सेवा, देखो मित्र मैं यह तो नहीं कह सकता की मैंने देश समाज की बहुत सेवा की है परन्तु जो कुछ थोड़ी मैं कर सका हूँ यदि ५०% भी देश के लोग मेरे जितनी सेवा कर देते तो देश से गरीबी और भ्रष्टाचार समाप्त अवश्य ही हो जाता। जैसे :- मैंने सन् १९५३-५४ में सहायता सिविल सरजन दिल्ली हिन्दुराव हस्पताल के डाक्टर डो० डी० आर बाबरी को रिश्वत के केस में रंगे हाथों पकड़वा दिया था। सन् १९५४ जनवरी ता० २४ को शैशन कोर्ट श्री तारा चन्द अग्रवाल जज ने उस को 3 महीने की सख्त कैद की सजा दी और नौकरो से हटा दिया था। वह सरकारी कर्मचारियों से मेडिकल फिटनिस करने के लिये रिश्वत लेता था। मैंने उस को रिश्वत देकर पकड़वा दिया उपरोक्त दैनिक पत्र में मेरा नाम देख सकते हो।

मैंने सन् १९४७ की भारत पाकिस्तान की अदला बदली में अपने निर्दोष हिन्दू भाईयों की रक्षा हेतु काम किये आप श्री तोखराम त्यागी भूत पूर्व सरपंच से पूछलो मैंने अपने जीवन की बाज़ी लगाई थी।

जो दु:खी समाज की मैंने सेवा की सन् १९४८ में सन्त बिनोवा भावे के भूदान यज्ञ में मैंने, अपनी सारी भूमि का दान कर दिया था। बाद में मेरी थोड़ी भूमि समझकर बिनोवा जी ने अस्वीकर कर दिया था मेरे पास घेर की भूमि एक बीधा सात बिसवे थी मैंने उस में से भूमि हीन कम्मे, कालू राजपूत को बसने के लिये बिना मूल्य के दी। इसी प्रकार रामे कमरा को भी बसने के लिये दी, सन् १९६० में। आप अब भी इन से जानकारी मेरे गाँव में ले सकते हैं।

अब आप का दूसरा प्रश्न है किदेवी देवताओं की अवतारों की उपासना का। देखो मित्र, इस पृथ्वी पर जितने भीं देवी देवता ऋषि महात्मा और अवतार हुए हैं उन सभी के ग्रन्थों से ये संकेत मिलता है कि मनुष्य जाति इस प्रकार से सुख शान्ति से अपना जीवन बिता सकती है, इसी लिये उन के नाम का प्रात: सुमरण हमारी हिन्दू आर्य समाज व भारत सरकार द्वारा सब मुख्य स्थानों पर होताहै और होना भी चाहिये। परन्तु उनके नकली चित्र बना कर पूजा उपासना मनुष्य समाज के हित में नहीं है और वेद विधान के विरुद्ध भी है मैं आप को प्रमाण के आधार पर ये बताना चाहता हूँ कि मूर्तिपूजा से बड़े बड़े अनर्थ हमारे आर्य देश में हुए हैं यदि

हम उन भयंकर बुराइयों को नहीं छोड़ते हैं तो फिर दोबारा वह अनर्थ हो सकते हैं। जैसे सब इतिहासकारों ने लिखा और हम पढ़ते आ रहे हैं। अब से अनुमानता एक हज़ार वर्ष पूर्व मोहम्मद गौरी के हथियार बन्द ग्यारह (११) सैनिक सवारों ने सोमनाथ, जगन्नाथ मन्दिर पर सोना लूटने हेतु कई हज़ार पुजारियों को मौत के घाट उतार कर कई हज़ार मन सोना लूटा था। वह मूर्ति पूजा का ही परिणाम था। यदि पुजारी अंधविश्वासी न होते तो उस बड़ी धन राशि के सहयोग से सैनिक तैयार कर के उन विदेशी आक्रमणकारियों को खदेड़ कर अपने देश से बाहर कर सकते थे। ऐसाहोने का कारण क्या बना? उन मन्दिरों के मठाधीश, पुजारी लोग सब ही वेद विद्या रहित थे, यदि वेदों के विद्वान होते तो ऐसा कभी नहीं हो सकता था।

प्रश्न :- शर्मानन्द त्यागी का :—

गुरु जी क्या किसी वेद के मन्त्र का उदाहरण देकर आप ये बता सकते हैं कि धन सम्पत्ति देश की रक्षा का विधान वेद में लिखा है?

उत्तर :- कन्हैया लाल आर्य का :—

देखो मित्र अथर्ववेद का मन्त्र :—

व्याघ्रं दत्वातां वयं प्रथमं जम्भयामसि।
आदुष्टेनमथों अहिं यातुधानमथो वृकम ॥
४/३/४/

भावार्थ :— मनुष्य प्रयत्न पूर्वक दुष्ट जन्तुओं और उन के सामान दुष्ट स्वभाव वाले चार डाकुओं और रोगों तथः तथा दोषों को नष्ट करे।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं ददि पुरुषम् ।
तंत्वा सोसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ।।

१/१६/४

भावार्थ :- मनुष्य वर्तमान क्लेशों को देखकर आने वाले क्लेशों को यत्न पूर्वक रोक कर आनन्द भोगे ।

वेद ज्ञान विज्ञान के अद्भुत भन्डार हैं। वे सब सद् विद्याओं के पुस्तक हैं। संसार में जितनी ज्ञान विद्याऐं और कलाये हैं उनका आदि स्रोत वेद ही है। तर्क और विज्ञान की दृष्टि से पूर्ण है।

अथर्ववेद अङ्गिरा ऋषि के हृदय में प्रकट हुआ था। अथर्ववेद में ज्ञान, कर्म एवं उपासना तीनों का सुन्दर सम्मिश्रण है। आप अब वेदों का अध्ययन कर के देख सकते हो चारों वेदों का हिन्दी अनुवाद हो गया है।

प्रश्न :- शर्मानन्द त्यागी का—

गुरु जी जब तक मनुष्य भगवान और देवी देवताओं की मूर्ति बनाकर उसकी वेदी बना कर नहीं रखेगा तब तक भजन भक्ति में ध्यान कैसे लगा सकेगा इस बात का कोई तर्क आप के पास है?

उत्तर :- कन्हैया लाल आर्य का-

देखो बन्धु, पहली बात तो यह है कि लोग जिन देवी देवताओं अवतारों के चित्र बनाकर पूजा करते हैं पहले तो वे नकली हैं। नाटककार कलाकारों के फिलिम एक्टरों के उनमें कई दोष भी होते है दोषी को पूजना ध्यान करना दोषों में शामिल

है । दूसरे ध्यान लगाने की बात भी गलत है क्योंकि एक कलाकर ने अपनी कलाकारी से सुन्दर चित्र बनाया उस से आप प्रभावित होकर ध्यान लगा रहे हैं ।

मूर्तिपूजा की परिपाटी चलाकर कुछ चालाक लोगों ने केवल धन उपार्जन हेतु भोले भाले लोगों को अपने जाल में फंसाया हुआ है ।

'यदि ध्यान लगाने की बात हो तो उस परमात्मा की चित्रकारी देखकर ध्यान क्यों नहीं लगता ? उस जैसे चित्र कोई भी मनुष्य नहीं बना सकता जो हैं आप को दीख रहे हैं वेदी भी स्वयं सुन्दर बनी हुई है ।

जिस ओर दृष्टि डालो उधर ही विचित्र कारीगरी प्रतीत होती है । इतना ही नहीं अपितु सर्वत्र एक अदभुत नियम पाया जाता है । सारी सृष्टि उस नियम में बन्धी है । कहीं भी व्याघात दिखाई नहीं देता है । जैसे जड़ जगत में सूर्य, चन्द्र, तारागण, और पृथ्वी ठीक-ठीक अपने-अपने भ्रमण और आकर्षण में ऐसे गति कर रहे हैं कि क्षण भर का भेद भी नहीं पड़ता ।

नियम का ही नाम गणित है यदि पदार्थ में कोई नियम न हो तो गणित अपना फल नहीं दे सकती । मनुष्य पशु, पक्षी, कीट, पतंग, और वृक्षादि की शारीरिक रचना अति आश्चर्य जनक है। मनुष्य के रुप की रचना से वैज्ञानिक चकित हैं । सब की आकृति न्यारी-न्यारी है । ऐसी अदभुत चित्रकारी को देख कर मन क्यों न लगे ?

प्रश्न :- श्री शर्मानन्द त्यागी

गुरुजी आप की इस पुस्तक को पड़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि आप विश्व के मनुष्यों को एक समझ कर सब को बराबर का

उपदेश दे रहे हैं और दुनियां के बनाने वाले का ओ३म् नाम बता रहे हैं। जबकि और दूसरे देश ओ३म् नाम परमात्मा का नहीं मानते। तो फिर सारे विश्व की एकता कैसे हो सकती है?

उत्तर :- कन्हैया लाल आर्य का-

मेरे प्रिय सखा, मेरी प्रेरणा सारे विश्व के वैज्ञानिक नबयुवकों के लिए है। यदि विचार करके देखा जाये तो आज का वैज्ञानिक ही किसी बात का निर्णायिक बन सकता है।

सारे विश्व के मनुष्य दुनियाँ के बनाने वाले परमात्मा के एक नाम पर जब तक सहमत नहीं होंगे तब तक सारे विश्व में एकता नहीं हो सकती और यदि एकता नहीं हुई तो संसार के निर्दोष मनुष्यों को न्याय नहीं मिल सकता और यदि न्याय नहीं मिला तो युद्धों के बादल मंडराते रहेंगे। यदि युद्ध होते रहे तो संसार का अकाल ही विनाश होता रहेगा। इस से तो ये ही बात ठीक है कि परमात्मा का नाम तर्क और वैज्ञानिक तरीके से एक माना जाये जैसे आर्यवर्त देश को छोड़कर सभ्यता संस्कृति की अवधि देखी जाये मुसलमानों की सभ्यता, संस्कृति की अवधि १४०० वर्ष मानी जाती है। जिसे ये चौदवीं सदी कहते हैं। ईसाईयों का सन् सभ्यता संस्कृति का १९८३ मानते हैं। प्रमाण के आधार पर ऐसे भो सबूत उनके देशों में पाये जाते हैं कि पचामों हजार पहले भी मनुष्य उन देशों में रहते थे। इस बात को कोई बता सकता है कि पचास हजार वर्ष पूर्व उन मनुष्यों की कौनसी सभ्यता संस्कृति थी। हाँ यदि निष्पक्ष होकर दुनियाँ के बैज्ञानिक विचार करेंगे तो अवश्य ही पता चल सकता है।

हाँ, इस आर्यवर्त देश की सभ्यता संस्कृति की अवधि सब से प्राचीन है क्योंकि वैदिक सृष्टि सम्वत १,९७०८५३०८२ है। इस

संवत से विदित होता है कि सारे विश्व की सभ्यता संस्कृति अर्बों वर्ष एक ही रही हो। क्योंकि वेदों में इस आर्यवर्त्त देश को यज्ञ भूमि कहा गया है इस से विदित होता है कि यह यज्ञ भूमि प्रलय में न आई हो और देशों में सीत या गर्म प्रलय आ गई हो। उस प्राचीन वैदिक धर्म ग्रन्थों में परमात्मा का ओ३म् नाम पाया जाता है। जो आज भी तर्क और विज्ञान की दृष्टि से पूर्ण है। जैसे किसी भी देश में जब मनुष्य का बच्चा जन्म लेता है तो स्वतः ही उस के मुंह में ओ३म् शब्द का उच्चारण होता है। किसी भी देश का मनुष्य जब पेट भर के खा लेता है तो स्वतः ही उस के मुंह से डकार के साथ ओ३म् शब्द की आवाज़ आती है।

दुनियाँ के किसी भी मनुष्य के मुंह से राम, कृष्ण महादेव, अल्लाह, ईसा, बुद्ध गुरु नानक देव, कार्तिक माई, सन्तोषी माइ, साई बाबा काली कमली वाला शब्द नहीं निकलता। इसलिए सारे विश्व के मनुष्यों को परमात्मा को जगह ओ३म् शब्द को ही मानना चाहिए।

श्री १०८ भजन माला का तीसरा भाग :—

मनोरंजक उपदेश

॥ कलयुगि गुरु, शिष्य संवाद ॥

दोहा ॥ 111 ॥

प्रश्न :— कन्हैया लाल कहने लगा, सुन दिनेश कुमार भ्राता।
मैं भजन बनाऊं प्रेम से, तू करुणा स्वर में क्यों नहीं गाता॥

उत्तर :- दिनेश कुमार :- शराब के नशे में

चोपाई ॥ 112 ॥

सुन हूँ गुरुजी उत्तर मोरी, जब तक बधू मिलेना भोरी ।
तुमरे चरण पकड़ यह फल पाई, बूढ़े हुऐ ना हुई सगाई ॥
भजन कीर्तन छोड़ूँ व्रत नेमा मिल जाये कोई बढ़िया सी मैना ।
अब मेरो धर्म ये ही ब्रतनेमा, काम छोड़ हम चले हूँ सनेमा ॥
कहे कहैन्या सुन दिनेश कुमारा, सुकर्म करो फल मिले हूँ तुम्हारा ॥

फटकार :- कन्हैया लाल आर्य की

तर्ज- आनन्दी ।

भजन ॥ 113 ॥

बातें जिनकी चिकनी चुपड़ी, जेबों को करते खोखल ।
पीने वालों के लिये वो ला देते हैं बढ़िया सी बोतल ॥
होश आया पर्चा देखा, दो ढ़ाई सौ रुपया का टोटल है ।
जिसमें उल्लू लूटे जाते, वो न्यू दिल्ली का होटल है ॥
नामी नामी मक्कारों की पल भर में उड़ती चमड़ी है ।
जिसके पीने से हो जाती, आपस में झगड़ा झगड़ी है ॥
दंगा फिसाद हो जाने पर तो, हो जाती सबसे तगड़ी है ।
लाला लेखराज की ही हवा खुशक, वह पुलिसमैन की घुड़की है ॥

सुझाव : कन्हैया लाल आर्य का—श्री दिनेश कुमार को ॥

गीत ॥ 114 ॥

स्थाई - शादी करना है पाप सखे ।

अन्तरा - आज़ादी की लुटिया डूबी, मित्रों से मिलना सुपना है ।
घर में देवी जी हिटलर, अफसोस ना कोई अपना है ॥
आँसू पीता हूँ मन ही मन में, रोता रहता चुपचाप सखे ॥
शादी करना है पाप सखे ॥१॥

जो रुपया रोज कमाता हूँ, लाला लेखराज की थैली में जाता है।

घर वालों की लाओ लाओ, रहती है पार ना पाता है॥
शुभ दिन आने को करता हूँ, राहू, केतू का जाप सखे॥
शादी करना है पाप सखे ॥२॥

चोटी लाता हूँ आज नई, कल किलिप को नया तकाजा है।
साड़ी की बात पुरानी हुई, बिल्लोज का आर्डर ताजा है॥
वह हयातसिंह की नानी है, तू जान सके तो जान सखे॥
शादी करना है पाप सखे ॥३॥

जब सावन झड़ी लगाता है भादों में बिजली चमकेगी।
जब मालपूड़ा खाने को, जीभ हमारी लपकेगी॥
वह उसी समय आ टपकेगा, लेने को उसका बाप सखे ॥
शादी करना है पाप सखे ॥४॥

वह सिहंनी सी घूररायेगी, अपने बाप के आगे रोती है।
यह मेरी इच्छा ना पूरी करता है, खाने को ना देता रोटी है॥
तू कन्हैयालाल आर्य को बुलवाले, वह रोक सके तो रोक सके।
शादी करना है पाप सखे ॥५॥

सुझाव का उत्तर - दिनेश कुमार का :-

दोहा ॥ 115 ॥

मंच पर ऐसा कलाकार चाहिये, दूर करे सब गम।
सभा में सब को हंसाय दे, घर में राखे शरम॥

तर्ज :- वफा करने वाले :-

गीत ॥ 116 ॥

सुनो हे गुरु जी मैं क्या चाहता हूँ ।
खुशी के मज़े लूटना चाहता हूँ ॥

अन्तरा- जो कमबखत मेरा भला चाहते है। (दोबारा)
स्थाई- मैं उस का भी हर दम बुरा चाहता हूँ ॥ १ ॥

जलाता है मुझ को ये गर्मी का मौसम। (दोबारा)
मैं पहाड़ों की ठन्डी हवा चाहता हूँ ॥ २ ॥

जब आयेगा सर्दी का मौसम सुहाना ।
रज़ाई के अन्दर घुसा चाहता हूँ ॥ ३ ॥

तुझे क्या पता है, है क्या मेरे दिल में ।
मैं घर से निकल भागना चाहता हूँ ॥ ४ ॥

जरा मेरी लम्बी अक्ल को तो देखो
खता की है और मेहरबाँ चाहता हूँ ॥ ५॥

फकत बीस पूरी सवा सेर हलवा ।
सुबह का यही नाशता चाहता हूँ ॥ ६ ॥

गधापन तो देखो की मोटर के होते ।
सवारी को अपनी गधा चाहता हूँ ॥ ७ ॥

राये है कन्हैया की सुन मेरे मित्र ।
मैं तेरी आदतों को बदलना चाहता हूँ ॥ ८ ॥

दोहा ॥ 117 ॥

कन्हैया लाल कहने लगा, मित्रो ज्यादा करो ना शोर।
वरना ऐसी भद पीटूँगा, तुम्हें बैठने को मिले ठौर ॥

तर्ज :- हम तो आनन्द अपना मनायेंगे।

गीत ॥ 118 ॥

स्थाई- लूट खाने का ज़माना ये अच्छा मिला।

अन्तरा- जन शासन में लूट है भैया लूट सके तो लूट।
महंगाई के लटठ से टाँट जायेगी फूट ॥

राम भरोसे बैठकर सब का पूछे हाल।
गुनीं जन तो भूखे मरें मूर्ख खायें माल ॥

जुवा, चोरी, ज़ामनी, मुखब्बरी गुण की खान।
ये वस्तु ना छोड़िये जब तक घट में प्राण ॥

रिश्वत मंहगाई का ज़माना ये अच्छा मिला ॥ १ ॥

दूसरा फिर कहने लगा मैं बताऊँ तोय।
पोथी पढ़ पढ़ जग मरा पंडित हुआ न कोय ॥

ढाई अक्षर फिल्म का पढ़े तो पंडित होय।
फिल्म देखो ये अच्छा ठिकाना मिला ॥ २ ॥

तीसरा फिर कहने लगा बेटा मैं बताऊँगा।
मंहगाई के गीत ऊंचे स्वर में गाऊँगा ॥

जिस तरह भी हो सका धन रात दिन कमाऊंगा।
है यही विश्वास दिल में मार कर सब को मरुँगा ॥
जव मरना न करना तो अच्छा मिला ॥ ३ ॥

जिस की मुट्ठी में सत्ता, पारब्रह्म सरकार वही है।
प्रजा पिसे जिसके शासन में प्रजातन्त्र सरकार वही है ॥
मित्रो होश में आजावे।

इलेक्शन जीत कर जालिम कोई मन्त्री न बन जाये ।
बचाना मेरी गीता को कहीं, बाईबिल न बन जाये ॥
कन्हैया के रोने में गाना ये अच्छा मिला ॥ ४ ॥

दोहा ॥ 119 ॥

राम राज्य की हाट में, भूख गरीबी फूट ।
बिना मोल सारी बिके भाई, लूट सके तो लूट ॥

दोहा ॥ 120 ॥

तीन गुणों को सीखले, छल फरेब और बन्द ।
राम राज्य में बन गये, लाखों लखमी चन्द ॥

तर्ज :- आनन्दी ॥ 121 ॥

जब तक हम मूर्ख जिन्दा हैं, तब तक तुम को किसका गम है ।
हे नेताओ यह याद रखो जब तक हम मूर्ख जिन्दा हैं ॥

हम प्रजातन्त्र के पोशक हैं, हमारे बहुमत का नाम लिये जाओ ।
बुद्धि के बन्द किवाड़ करो, हमारी मूर्खता का फल खाओ ॥

हम मूर्खों की वोटें ज़्यादा है, हम मूर्खों के डन्डे में दम है ।
जब तक हम मूर्ख जिन्दा है, तब तक तुम को किस का गम है ॥

बुद्धि के बन्द किवाड़ करो अब मूर्खता के पट खोलो ।
है कन्हैया लाल की राय यही, सब मिलकर देवी जो की जय बोलो ॥

गीत ॥ 122 ॥

राम चन्द्र कह गये सिया से, ऐसा कलयुग आयेगा ।
कौवे वेद वाक्य बोलेंगे, तोता मन्त्र पढ़ायेगा ।

मच्छर नाचेंगे मंचों पर मेंडक ढोल बजायेंगे ।
शेर छिप जायेंगे डर से, गीदड़ आँख दिखायेंगे ।।
शेरों का ये हाल बनेगा गीदड़ खड़ा चिड़ायेगा ।। १ ।।

नेताओं के ऊँचे भाषण होंगे, काम नीच करवायगे ।
ऐसा हाल देख कर प्रजातन्त्र पोशक पछतायेंगे ।।
पाँच वर्ष तक रोते रहेंगे, फिर चक्कर में आयेंगे ।
उन्हीं नेताओं के बहन भान्जे नये रुप धर आयेंगे ।।

हरिजनों को बहका कर अपनी जय बुलवायेंगे ।
नई नई बातें कर के सभी संशय दूर कर जायेंगे ।।
वोटर वोट बेहोश दिये जा, मूर्खता का फल पायेगा ।। २ ।।

चेले बैठे सिगरेट पीवें, गुरु जी आँस बचायेंगे ।
कोई ना उन की बात सुनेगा, बस वह बकते जायेंगे ।।
पढ़ना लिखना छोड़ पड़क्कड़, रातों धक्के खायेंगे ।
बेच किताब और कापियां रोज़ सिनेमा जायेंगे ।।
बाप समझता जाये मदरसे बेटा पिकनिक जायेगा ।।३।।

अध्यापक रखे जायेगें, जो भगडा नाच सिखायेंगे ।
हो सबजेक्ट यहीं उत्तम, लिखना पढ़ना छुड़बायंगे ।।
पी शराब बेहोश हो जायें, नहीं होश में आयेंगे ।
अपनी बहन बेटियों के ऊपर, आप ही खाँस मटकायेंगे ।।
सब से आगे स्कूल तिमारपुर यही नम्बर ले जायेगा ।। ४ ।।

काला चश्मा लगा आंख पर, होठ लाल करवायेगी ।
ऊँची एड़ी के जूते, और कमर लचकती जायेगी ।।

बीस वर्ष की भरी जवानी, तन ढाँचा हो जायेगी।
काला धोला बन जायेगा सांच को झूठ दबायेगी ॥
धरती ऊपर चढ़ जायेगी आसमान झुक जायेगा ॥ ५ ॥
जटा बढ़ा कर घूमे कोई और कोई मूंड मुंडायेगा।
बगुला भक्त रंगेगे कपड़े, योगी धक्के खायेगा ॥
मठ होगा मठ वाली होगी, सन्यासी वही कहलायेगा।
अन्धों की नगरी का नाटक चोपट होता जायेगा ॥
बुरा भला सब आप करे है राम का दोष बतायेगा।
कन्हैया लाल ये हाल देख कर अपने घर को रोता जायेगा ॥ ६ ॥

॥ नाटिका ॥

चक बन्दी चक्र

भूमिका

प्रिय बन्धुओ ! यह तो सर्व विदित है की सारे ही विश्व में कृषक ही एक ऐसा वर्ग है जिसे आय थोड़ी प्राप्त होती है और परिश्रम सब से अधिक करना पड़ता है। विशेष करके भारतियों की तो ऐसी ही हालत है, जो हम सब देख रहे हैं।

इन कृषकों की सुविधा के लिए राज्य ने सब कार्यालय सारी दुनियाँ में हर सरकार ने निर्धारित किये हुए हैं। परन्तु ये सुविधा के स्थान पर दुविधा कार्यालय कृषकों (किसानों) के लिये सिद्ध हो रहे हैं। सच पूछा जाए तो हम किसानों के लिए यह तपेदिक की बीमारी के समान हैं। जो हमें ठीक प्रकार से कमाने खाने नहीं देते

हैं। क्योंकि इन कार्यालयों में अधिकतर भ्रष्ट लोगों को रखा हुआ है, सरकार ने। यह रिश्वत खूब लेते हैं ? आप पकड़ में न के बराबर आते हैं। मेरा यह अनुभव है कि रिश्वत के बिना ये हरेक को खेत का ठीक निशान नहीं देते हैं।

उदाहरण :—

उच्चत्तम न्यायालयों का तो मुझे पता नहीं है परन्तु छोटे न्यायालयों से मेरा बहुत सम्पर्क रहा है किसी भी केस में हमारे नाम का नोटिस पेश होने के लिये हमसे हस्ताक्षर करवा लिए जाते हैं। परन्तु हमारे पेश होने पर अगली पेशी का लिखित नोटिस हमें नहीं दिया जाता। उस आड़ में पक्ष या प्रतिपक्ष के विरुद्ध केस कर सकते हैं यदि रिश्वत न दें तो। आप कहेंगे अपनी सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों पर विश्वास करना चाहिये। तो मैं आप से पूछना चाहूँगा कि सरकार के अधिकारी व कर्मचारी हमारे पर विश्वास क्यों नहीं करते वे अपने पेश होने के नोटिस पर हमारे हस्ताक्षर क्यों करवाते हैं ? ३५ वर्ष होने को आये हमारे देश को स्वतन्त्र हुए रिश्वत की भरमार तेज़ होती जा रही है। क्या फायदा हुआ इस आजादी का यदि कोई पकड़वा भी दे कई भाइयों का मुकाबला करके सब से बड़ा दन्ड तो पकड़-वाने वाले को सरकार देती है बहुत पेशी भुगतनी पड़ती है। हरजा खर्चा नहीं मिलता और न उस की सुरक्षा की गारन्टी मिलती है।

मेरा अभिप्राय अपनी सरकार के विधायकों को दोष देने का नहीं है। विधान प्रयोग कर्त्ताओं का है। उन पर सरकार तीखी नज़र से देख नहीं रही है। अन्यथा सरकार के पास सब रोगों की दवाई है।

आप सब भाई बहनें नाटिका पर अपनी दृष्टि घुमाइये :-

।। चकबन्दी का चक्र ।।

।। दोहा ।। 123 ।।

चकबन्दी के चक्र से, चकरा गये किसान ।
विना नोट के ना मिले, खेत का ठीक निशान ।।

वार्ता :-

एक दिन चकबन्दी की तहसील में एक किसान अपनी भूमि सम्बन्धित कठिनाईयों को हल करने के उद्देश्य से चकबन्दी तहसील में जाने से पहले सोचने लगा पोजीशन बना कर चलना चाहिये, अन्यथा फटे कपड़े देखकर वहाँ के अधिकारी व कर्मचारी मेरी बात की सुनाई नहीं करेंगे। अपने घर में इतना रुपया पैसा था नहीं जो नये कपड़े बनवा लेता। उसने अपने पड़ोसियों से, किसी से जूती मांगी किसी से पगड़ी माँगी कोट मांगा। कुछ अच्छी पोजीशन बनाकर चकबन्दी कार्यालय में पहुंच गया। दफ्तर में अधिकारियों व कर्मचारियों की महफिल बैठी थी। अन्डे, माँस, शराब खा पी रहे थे। और गप-शप उड़ा रहे थे। एक कन्हैया लाल नाम का दलाल भी बैठा था। जो भूमि की दलाली करता था। चाय, बर्फी, बोतल इत्यादि का उस महफिल का उसी ने पेमेन्ट किया था।

अब कन्हैयालाल आर्य किसान को देखकर सारी महफिल खुश होकर मचल कर इस प्रकार गीत गाने लगी।

तर्ज :- आँखो में रंग भरके तेरा इन्तजार है ।।

गीत ।। 124 ।।

स्थाई :- यारो चकबन्दी कोर्ट का गुप्त फैसला देख लो ।
सही काम करने से पहले नोट लो ।।

अन्तरा :- देखो तो मुझको चकबन्दी तहसील में,
कहने लगा क्लर्क, कहने लगा क्लर्क ।
यारो शिकार आया है इस को खसोट लो ।। १ ।।

सही काम करने से पहले नोट लो ।।
जैन साहब कहने लगे, मोटा है ये किसान,
मोटा है ये किसान ।
रिश्वत में इस से बढ़िया सी बैलों को जोट लो ।।
सही काम करने से पहले नोट लो ।। २ ।।

फरमाया गुप्ता जी ने झन्झट में मत पड़ो,
झन्झट में मत पड़ो ।
सीधी सी बात ये ही है कि इस से सौ सौ के नोट लो ।।
सही काम करने से पहले नोट लो ।। ३ ।।

बोला कन्हैया लाल, बुजदिल हो आप लोग,
बुजदिल हो आप लोग ।
मेरी तो ये राय है कि इस से कफन भी खसोट लो ।।
सही काम करने से पहले नोट लो ।। ४ ।।

चन्दर जी काँप कर कहने लगा, यारो करो न शोर,
यारो करो न शोर ।।

जो कुछ भी तुमको लेना परदे की ओट लो ।।
सही काम करने से पहले नोट लो ।।५।।
श्री नत्थूराम कड़क के बोले डर की है बात क्या,
डर की है बात क्या ।
अपना ही राज्य है अब तो डन्के की चोट लो ।।
सही काम करने से पहले नोट लो ।। ६ ।।

।। भजन ।। तर्ज आनन्दी ।। 125 ।।

बाजार जहां हो वेश्याओं के, कहो किस से कौन वहाँ शरमाये
कन्हैयालाल आर्य लिखकर माँगे, तो रिश्वत को निज हक बतलाये
अनुशासन बिन कैसा शासन, बिन दन्ड व्यवस्था कैसे हो ?
जब दिनकर का प्रतिनिधि उल्लू हो, तो सूर्य प्रकाश फिर कैसे हो ?
अयोग्य जहां अधिकारी हों, योग्य पुरुष फिर वन्चित हो ।
व्यर्थ विभाग अनेक बने, जनता के लिए दूभर हों ।।
प्रधान पंच सब सुनो ध्यान से, यदि देश भलाई चाहते हो ।
अनुशासन का मार्ग अपनाओ तो, देश भलाई फिर क्यों न हो ।।
भूलो न उन महावीरों को, जो देश को कर आजाद गये ।
बुरे कर्म करने वाले तो, देश को कर बरबाद गये ।।
यही व्यवस्था चलती रही तो, देश परतन्त्र हो जायेगा ।
मानव वेद धर्म दुनियाँ से मिट जाये, फिर न आने पायेगा ।।
नकली लीडर बने, गांव शहर में, रिश्वत यही दिलवाते हैं ।
फिफ्टी फिफ्टी खा जाते, और नेता ये ही कहलाते हैं ।
रिश्वत लेने की विधि सारी लिखूँ, तो पुस्तक बड़ी बन जायेगी ।
लेखक कन्हैया लाल है निर्धन भैया, कभी न छपने पायेगी ।।

मेरी प्रिय भजन माला 108 का

चौथा भाग

महा पुरुषों कीर्ति (कीर्तन) और

।। प्रभु का भजन ।।

वार्ता कन्हैया लाल आर्य

हे प्रिय मानवो मैं अपनी छोटी सी बुद्धि के अनुसार विश्व के महान पुरुषों ने जो कार्य किया है मानव कल्याण हेतु उनकी कीर्ति (कीर्तन) कह रहा हूँ ।

दोहा ।। 126 ।।

प्रथम पूज्य ओ३म् है, जगतपति प्रतिपाल ।
दूजे सरस्वती माता है, दो हम को स्वर ताल ।।

दोहा ।। 127 ।।

तीन लोक के नाथ तू, सुन तीनों की टेर ।
भक्ति का हमें दान दो, क्यों करते हो देर ।।

दोहा ।। 128 ।।

शर्मानन्द, कवल सिंह करें, कान्हा की मेर ।
सरस्वती माता स्वर दो, क्यों करती हो देर ।।

वार्ता- कन्हैया लाल आर्य

जो इस विश्व की महान आत्माओं ने मानव को सुख से रहने के लिये ज्ञान दिया है। उन महान आत्माओं के गुणों की धुन में हम सब मस्त होकर धुन गायें।

दोहा ॥ 129 ॥

जो महान आत्माओं के गुण गाते हैं, वही महान हो जाते हैं।
धरती पर वे फिर आ जायें, ये ही कामना करते हैं ॥

कीर्तन :– धुन :-

भजन ॥ 130 ॥

आदि काल में चार ऋषि पधारे ओ३म् ओ३म् श्लोक उचारे।
चारों चार वेदों को गा रहे, ईश्वर जीव भेद बतला रहे ॥
अग्नि गुण गाओ, वायु गुण गाओ, आदित्य गुण गाओ,
अंगिरा गुण गाओ, जीवन अपना सफल बनाओ ॥ १ ॥

आदि युग में बली महादेव पधारे, वेद धर्म के ये रखवारे।
वैज्ञानिक थे देव हमारे, अभिमानी रावण से हारे ॥
महादेव गुण गाओ गौरा गुण गाओ।
जीवन अपना सफल बनाओ ॥ २ ॥

ब्रह्मा विष्णु भगवान पधारे, भगतों के वे थे रखवारे।
नारद मोह दिखा अपने भक्तों को भवसागर से पार उठारे ॥
ब्रह्मा गुण गाओ श्री विष्णु गुण गाओ।
जीवन अपना सफल बनाओ । ३ ॥

त्रेता युग में श्री राम पधारे, रावण जैसा राक्षस मारे।
दुष्ट दलन की शिक्षा प्यारे, मानव जाति को बतला रहे ॥
अपने भक्तों के थे प्यारे, जाकर बेर भिलनी घर खाये।
सिया गुण गाओ श्री राम गुण गाओ ॥
जीवन अपना सफल बनाओ ॥ ४ ॥

त्रेता युग में श्री कृष्ण पधारे, योग से प्रभु दर्शन दरसारे।
कंस से राजा अभिमानी मारे, अपने हक पर रहना प्यारे।।
श्री कृष्ण गुण गाओ गोपाल गुण गाओ।
जीवन अपना सफल बनाओ ।। ५ ।।

कलयुग में मुहम्मद आये, चार फरिश्तों का पैगाम लाये।
ओ३म् का अल्लाह नाम बतायें, मनुष्य को मुसल्ला बतलायें।।
मुहम्मद गुण गाओ, चाहे ईसा गुण गाओ ।।
जीवन अपना सफल बनाओ ।। ६ ।।

कलयुग में ही ऋषि दयानन्द आये, ईश्वर कृत वेद बतलाये।
सारे पाखन्ड पोल दिखाये, सत्यार्थ प्रकाश सा ग्रन्थ रचाये।।
वेद पढ़ो औरों को पढ़ाओ ।।
जीवन अपना सफल बनाओ ।। ७ ।।

कन्हैयालाल की पढ़ कर बाणी, शर्मानन्द तू बनजा ज्ञानी।
कवल सिंह ने भी ये मानी, नहीं पढ़ झूठे किस्से कहानी ।।
जड़ पूजा से मन को हटाओ ।।
जीवन अपना सफल बनाओ ।। ८ ।।

भजन ।। 131 ।।

ओ३म् मुझे ओ३म् से प्यार हो गया ।।
चल दिया जो किनारे किनारे, अपनी जीवन दशा को समारे।
ओ३म् उस का बेड़ा पार हो गया ।। १ ।।
अपनी नैया का तू खुद खिवैया, किस की आस करे है तू भैया।
ओ३म् कहाई तेरे विश्व रचैया ।। २ ।।
उस की लीला हैं अजब निराली, कहीं लाल फिरें कहीं लाली।
औ३म् आकृति सब की न्यारी-न्यारी रचैया ।। ३ ।।

जब राणां ने मीरा सताई, बता किस से तूने प्रीति लगाई।
ओ३म् मेरा तो प्यारा मुरली बजैया ॥ ४ ॥

भक्त रोते हैं दुखिया बिचारे, दुखी होते ना होते गुजारे।
ओ३म् इनको तू प्रभु दे दे रुपया ॥ ५ ॥

बूढ़ा हो गया कन्हैया प्रभु तुम्हारा, तुझ बिन दीखे ना और सहारा
ओ३म् बुराड़ी अपना गाँव बतैया ॥ ६ ॥

तर्ज :- तेरे पूजन को भगवान-

भजन ॥ 132 ॥

प्रभू जी तुम सब जग के आधार, बारिष करो मूसलाधार।
पिता तुम सब जग के रखवाले, तुम बिन जगह नहीं कोई खाली ॥
करदो जल से जंगल हरिया, जिस से हो जाये बेड़ा पार ॥ १ ॥

जब तक इन्द्र देव ना वर्षे, हम सब अन्न जल को तरसे।
भक्त जन करते यही पुकार, बारिष करो मूसलाधार ॥ २ ॥

तेरे भक्तों की ये पुकार, भूखे प्यासे जीव बेजार।
मोर करें पीहूँ पीहूँ को पुकार बारिष करो मुसलाधार ॥ ३ ॥

ये सन् १९७८ भाई, बिन बारिष के आई तवाही।
भजन सब मिल के करो नर नार बारिष करो मुसलाधार ॥ ४ ॥

छोड़ो झूठ कपट और छल को, मानो परमपिता हलधर को।
वरना प्रभु का ऐसा लगे तमाचा तू जा डूबेगा मझधार ॥ ५ ॥

मुझ को कविता का नहीं ज्ञान, भैया मुझे गुरु रहें क्यों मान।
मैं तो हूँ बिलकुल अज्ञान, मेरी जीबन नैया है मझधार ॥ ६ ॥

ये है कन्हैया लाल टेर, भजन कर समय मिले न फेर।
मनुष्य तन है मुक्ति का द्वार बारिष करो मुसलाधार ॥ ७ ॥

भजन ।। 133 ।।

जपो प्रभु का नाम घमन्ड भाइयो नहीं करना ।
घमन्ड करे तो प्रभु भक्ति का करले, भवसागर से पार उतर ले ।
मिले मुक्ति का धाम, घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।१।।

घमन्ड किया था हिरणकुश ने, निर्दोषों को सताया उसने ।
जीते जी पेट लिया फड़वाय, घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।२।।

उल्टी शिक्षा आप चलावें, वेद पढें न भक्त कहलावें ।
फिर साथी बने क्यों भगवान घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।३।।

जो कोई जैसा कर्म करेगा, दुःख सुख अपने आप भरेगा ।
ये है वेदों का पैगाम घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।४।।

जो कोई बुरे कर्म से हटजा, और आकर नेक कर्म पे डटजा ।
उस को करदे पार भगवान घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।५।।

राधेशाम बुराड़ी वाले आर्य समाज मन्दिर बनवाने वाले ।
भूमि एक लाख की देकर दान, घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।६।।

जो कोई वेद धर्म पर चाला उस का रहे दुनियां में उजाला ।
उस की कीर्ति गायें महान घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।७।।

कन्हैया लाल आर्य भजन बनाता, यज्ञ वेदी में सब को सुनाता ।
बनो आर्य वीर महान घमन्ड भाइयो नहीं करना ।।८।।

भजन ।। 134 ।।

कैसा बना मकान है, अजब निराली शान है,
लख अकल हैरान है हम कैसे उसका व्याख्यान करें ।
शिल्पकला देखो शिल्पी की, जिसने भवन बनाया है ।

दो खम्बों के उपर देखो कितना श्रेष्ठ बनाया है ?
है रचना का ढंग क्या अंग और प्रति अग क्या ?
चढ़ा दिया है रंग क्या अलग अलग पहिचान करें ॥१॥

इस मन्दिर में नौ दरवाजे, एक वस्तु भण्डार बना।
बिजली की दो लाईट लगी हैं, जहाँ ऊपर का द्वार बना।
दो वायु का द्वार लगे पास पास एक तार लगे ।
और निकट दो तार लगे जो शब्दों का ज्ञान करें ॥२॥

एक बड़ा दरवाजा है, सब खाद्य पदार्थ जाने को ।
फिर नीचे है दो दरवाजे फोकट बाहर लगाने को ॥
कल पुर्जो का मेल है, बाजीगर का खेल है ।
दो टंकियों में तेल है जो चलने का सामान करें ॥३॥

बड़ा चतुर एक वैद्य है, ऊपर के दरवाजे में ।
करके परीक्षण जाने देगा, दोष न हो किसी खाने में।
इन मन्दिर में सारी मशीनें चलतीं हैं, सारी वस्तुएं गलती है।
पर पहले चक्की दलती बुरे अच्छे का अनुमान करे ॥४॥

चारों वर्ण है इस मकान में, अपना अपना काम करें।
सप्त ऋषि भी हैं इस में जो सारा इन्तज़ाम करें ॥
इस में तीनों ताप है, पुण्य भी है और पाप है ।
जुल्म और इन्साफ है, जो लाभ करे और हानि करे ॥५॥

इस मन्दिर में रहने वाला पास कोई-कोई होता है।
पास हुआ सो अमर हुआ, फैला हुआ सो रोता है ॥
उत्पत्ति और नाश है, निशिदिन बारह मास है ।
मन्दिर तेरे पास है, गुरु भीष्म का शिष्य व्याख्यान करे ॥६॥

॥ भजन ॥ तर्ज आनन्दी ॥ 135 ॥

हम कहते रहे तुम सुनते रहे, करना पड़ा तो नठ बैठे ।
इसीलिये तो विद्या बुद्धि, धन का करके मठ बैठे ॥

बाल, वृद्ध कुछ कर नहीं सकते, करना है सब जवानों को ।
कर्म योगी बन कर के भैया, पार उतरना जवानों को ॥

कन्हैयालाल की बुद्धि कहती, काम ये करना जवानों को ।
राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री, आर्य बनना जवानों को ॥

भजन ॥ 136 ॥

आर्य सब दुनियाँ का सम्मान चाहते हैं ।
नर नारी का सदाचार सम्मान चाहते हैं ॥

यही है आर्यों का आधार, कि उन्नत हो सारा संसार
वेद का घर घर हो प्रचार ।
ऋषि और मुनियों की जग में शान चाहते हैं ।
दुष्ट भावनाओं की हमेशा हान चाहते है ॥ १ ॥

बालिका बाल रहें ब्रह्मचारी, निकट ना आवे कोई बिमारी,
गृहस्थ के फिर होवें अधिकारी ।
नर नारी की ऊँची आँन बान चाहते हैं ।
खुले विश्व में गुरुकुल वेदों के विद्वान चाहते हैं । २ ॥

राष्ट्रपति भवन वेद भन्डार बने और वैदिक हो सरकार
हवन हो हर घर धूआँधार ।
पुलिस फौज में हों ब्रह्मचारी जवान चाहते हैं ।
करने वाले तन मन धन का दान चाहते हैं ॥ ३ ॥

निकल जाये सब दुनियां की भूल, चलें सब वेदों के अनुकूल,
वैदिक धर्म सुखों का मूल ।
न्यायालयों में वेदों का विधान चाहते हैं ।
न्याय वैशेषिक सांख्य पातन्जली ज्ञान चाहते हैं ।। ४ ।।

मटन मांस पर हो प्रतिबन्ध निर्दोष पशु न मारे कोई मतिमन्द
कटें मजदूरों के भी फन्द ।
सब का सादा खान पान पहरान चाहते हैं ।
गौ रक्षा का दुनियां में ऐलान चाहते हैं ।। ५ ।।

देश का प्रधान मन्त्री बने आर्य कोई लाल, देश की पलट जायेगी चाल ।
भारत हो फिर माला माल ।
करें मनिस्टर सभी वेद व्याख्यान चाहते हैं ।
कहे भीष्म का शिष्य कहे हम वेद का विधान चाहते हैं ।। ६ ।।

वार्ता :- कन्हैया लाल आर्य

हे दुनियाँ के नवयुवको जब तक उपरोक्त हालात नहीं बनाओगे तब तक दुनियाँ में एकता नहीं आ सकती और न ही सुख शान्ति होगी और यदि किसी देश में सुख शान्ति नहीं होगी तो उस का दोष दुनियाँ के नवयुवकों को लगेगा। उन का ही नाम कलँकित होगा।

यदि यही हालत रही तो वो दिन दूर न समझें जब श्री राम श्री कृष्ण भगवान, ज्ञानेश्वर भगवान महर्षि दयानन्द और प्राचीन ऋषि मुनियों के ज्ञान सन्देश के सुनाने वाले इस दुनियाँ में नज़र नहीं आयेंगे। फिर इस दुनियां में सम्प्रदायों के द्वारा अन्धकार अन्याय का रामराज्य हो जायेगा। उस के बाद बाकी

यही कहावत रह सकती है। जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया फिर पछताये क्या होता है ?

ऋषियों मुनियों का सन्देश :-

भजन ॥ 137 ॥ तर्ज आनन्दी

वैदिक पथ प्रदर्शक बन कर, जवान तू सीना तान चला जा।
सत्यासत क्या है दुनियाँ में, करता ये पहिचान चला जा ॥
ईश भक्ति या देश भक्ति को, जिस ने मन में धार लिया।
काम क्रोध मद लोभ मोह, जिस ने पाँचों को मार लिया ॥
जात, पात, के भेद भाव में फँसा तो वो मस्ताना क्या।
प्रभु भक्त के लिये जगत में, अपना और विगाना क्या ॥
बाग की रक्षा करने से प्रसन्न बाग का माली हो।
गऊओं की रक्षा करने से, खुश गऊओं का पाली हो ॥
दुनियाँ की रक्षा करने से, खुश दुनियाँ का रखवाली हो।
इन बातों को वो समझे, जिस के पास ज्ञान की ताली हो ॥
जीवन ज्योति कब बुझ जाये, है विश्वास नहीं पल का।
सच्चे सौदा करें सत्य का, पर कुत्ते झूठी पत्तल का ॥

शेर ॥ 138 ॥

धन कमावें और लुटावें ज़ुल्म ढाने के लिये।
दोष देते हैं मगर ज़ालिम जमाने के लिये ॥
किस को कहता है जमाना आप अनर्थ ढाइये।
किस को कहता है जमाना जीवों को मरवाइयो ॥
किस को कहता है जमाना मद्य मांस उड़ाइये।
किस को कहता है ज़माना वेश्या के घर जाइये।

लूट कर रहे रात दिन आनन्द उड़ाने के लिये ।।१।।
गर्म कैसा रात दिन ये लूट का बाज़ार है ।
ब्लैक रिश्वत और चोरबज़ारी की भर मार है ।।
क्या किसी की शर्म उसको जो सरमायेदार है ।
कोठी बंगले कार जिस पे उस की सरकार है ।।
पेटू को देखो उधर वह ज्यादा खा के मर गया ।
और इधर मजदूर भूखा तड़फड़ा कर मर गया ।।
डाकुओं के हाथ पेटू धन लुटा कर मर गया ।
मजदूर कपड़े के बिना सर्दी में आ के मर गया ।।
है कन्हैया लाल का व्रत मैं, इलेक्शन लड़ सकता नहीं ।
शुभ कार्य सर्वसम्मति से कराओ तो मैं, मना कर सकता नहीं ।।

।। मेरा सुभाव ।। 139 ।।

।। दहेज कुप्रथा ऐसे समाप्त हो सकती है ।।

कन्हैया लाल आर्य :-

प्रश्न लाला लखीम चन्द जी नमस्ते, आप कुशल से तो हैं । आप का चेहरा काला क्यों पड़ा हुआ है ?

उत्तर लाला लखमी चन्द का :- महाशय जी क्या बताऊँ दि० १५-५-८३ को मेरी लड़की यशोदा का शुभ विवाह है उसमें ८०,००० हज़ार रुपये लगेगा और इतने रुपया का प्रबन्ध है नहीं । रात को नींद भी नहीं आती है ।

उत्तर - कन्हैया लाल आर्य का - लाला जी अपनी आय के अनुसार ही कन्या के विवाह में व्यय करें । अधिक व्यय क्यों करते हो ?

प्रश्न :- लाला लखमी चन्द जी का :-

क्या बताऊँ महाशय जी, दो बसें बरातियों की भर के आयेंगी यदि मैं उन की इच्छा के अनुसार दहेज नहीं दे सका तो मेरी लड़की यशोदा को जिन्दगी मौत का खतरा हो सकता है। और बराती आंख फाड़-फाड़ के देखते हैं कि लड़की वाले ने कितना दहेज दिया है इस लिये उन के सामने भी इज्ज़त बचाने का सवाल होता है।

उत्तर- कन्हैया लाल आर्य का :-

लाला जी आप ठीक कहते हैं, मैं आप की कष्ट कहानी का पत्र जनता जनार्दन के चरणों में अर्पित कर रहा हूँ। प्रभु आप की रक्षा करें।

यह कुप्रथा दहेज की समाप्त करने का काम भारत सरकार का है। मेरे विचार से एक ही मार्ग है की बरातों का आना जाना वन्द करवा दें। प्राचीन काल में तो बरातों का आना जाना ठीक था क्यों कि यातायात के साधन नहीं थे परन्तु आज के युग में तो यातायात के साधन खूब उपलब्ध हैं। उस ज़माने में रक्षा के लिये बारात अवश्यक थी क्यों कि चोर डाकुओं का आतंक का भय रहता था, बैंक इत्यादि भी नहीं थे।

॥ शिष्य सम्बाद संख्या (१) ॥

॥ बालक बालिकाओं को भ्रष्ट होनें से
कैसे बचाया जाय ? ॥

प्रश्न- श्री शर्मानन्द त्यागी का :-

गुरु जी आप सांग की रागनी और फिल्मी गीतों का विरोध करते रहते हो जो ठीक नहीं है। क्यों कि सांग

सिनेमा, आज के युग में मनोरंजन का साधन सारी दुनियाँ मानती है।

उत्तर- कन्हैया लाल आर्य का :-

देखो मित्र जैसे एक किलो दूध में एक बूँद ज़हर गेर दी जाये यो सारा दूध ज़हर बन सकता है। आप कि ये बात तो ठीक है की आज के युग में मनोरंजन का साधन है। परन्तु साँग की रागनियां और फिल्मी गीत में ९५ प्रतिशत ऐसे गाने होते हैं जो अबोध बालक बलिकाओं पर काम वासनाओं का प्रभाव पड़ता है। जिससे काम वासनायें उत्तेजित हो जाती हैं जो उन के जीवन के लिये घातक सिद्ध हो जाती है। और सामाज का वातावरण भी दूषित हो जाता है। इस लिए हमारी सरकार को गन्दे गानों पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहिए क्यों कि हमारी वैदिक संस्कृति के विरुद्ध है। जिस देश की सुसंस्कृत सभ्यता नहीं है वह देश उन्नत नहीं हो सकता। फैले हुए भ्रष्टाचार पर प्रतिबन्ध लगाना अति आवश्यक है।

।। गुरु शिष्य के प्रश्नोत्तर ।। (2)

प्रश्न- मास्टर कवल सिंह सिसोदिया :-

गुरु जी चरणस्पर्श और मेरे मन की शंकाओं का निवारण करने की कृपा करें। पहली शंका आपको गाँव के लोग महाशय क्यों कहते हैं ? यह बतायें।

उत्तर- कन्हैयालाल आर्य का :-

देखो बन्धु, महाशय नाम जनता जनार्दन महान काम करने से देती है। जब मेरी पच्चीस वर्ष की आयु थी उस समय हमारे गाँव में हिन्दी देव नगरी पढ़ाने के विद्यालय नहीं थे।

और कोई सरकार की ओर से औषधालय भी नहीं था तो मैं अपने ही कमाये धन से हिन्दी भाषा को पढ़ा करता था। और फोड़ा फुन्सियों की मल्लम पट्टी भी किया करता था उस के बदले में किसी से भी शुल्क नहीं लेता था और मैं स्वामी भीष्म आर्य उपदेशक के बनाये इतिहासों को अपने गाँव को जनता को हरमोनियम पर गा कर सुनाया करता था। यह बातें सन् १९४५-४६ की हैं जब हमारा देश परतन्त्र था। गाँव के भाई बहिन मेरे कार्य से प्रसन्न होकर मुझे महाशय कहने लगे थे और मैं इस शब्द को अपना पुरस्कार समझ कर आगे बढ़ता गया।

प्रश्न- गुरु जी आप के काम से गाँव के सारे मनुष्य प्रसन्न थे ?

उत्तर- नहीं, प्रिय मित्र मेरे विरुद्ध बहुत आदमी थे। जैसे- अन पढ़ हिन्दु धर्म के ठेकेदार, मेरा तो गाँव में रहना भी भारी कर दिया था।

सन् १९४४ की घटना इस प्रकार से है। मेरे पास हरिजनों के बच्चे भी देवनागरी (हिन्दी) पढ़ते थे उन में एक दीपचन्द नाम का हरिजन (चमार) का लड़का था। उस को मैं (पनघट) कूएं पर लेगया प्रातः काल वह बालटी से पानी खींच रहा था और मैं नहा रहा था। एक त्यागी ब्राह्मण आया मेरे से कुल्ला करवाने का संकेत किया मैंने उस हरिजन बच्चे के द्वारा पानी दिलवा दिया उस को। वह मेरे से पूछने लगा यह लड़का किस का है ? मैंने उस को सच्चा बता दिया।

जब उस को यह पता लगा इसने हरिजन के बच्चे द्वारा मेरा कुल्ला करवाया है तो उसे और मुझे मारने पीटने पर उतारु

हो गया और कहने लगा तूने मेरा हिन्दु धर्म खराब किया है। देखता हूँ तू इस गाँव में कैसे रहेगा और मेरे विरुद्ध पंचायत बुलाली।

मेरे ही गाँव के तीन चौधरी कुछ लिखे पढ़े काँग्रेसी थे वह तीनों आर्य समाज से प्रभावित थे उन्होंने ही मुझे जैसे-तैसे उन पाखन्डियों से बचाया मेरा कुछ पक्ष लेकर मुझे उन्होंने यह चेतावनी दे दी कि अभी वह समय नहीं आया जितना आप आगे बढ़ रहे हो।

कुछ लड़कियां भी मेरे पास पढ़ती थी। उस का विरोध दो अनपढ़ बुढ़िया करती, औरतों में वह दोनों ही बिधवा थी जो श्री राधेश्याम प्रधान के रिश्ते में कुछ लगती थी। उन बुढ़ियाओं के न म एक का नाम अनारो दूसरी का नाम डुन्डाहडो कुछ ऐसे ही थे।

वह हमारे सारे गाँव में यह प्रचार किया करती थी कि बहिनों देखो घोर कलयुग आ गया है और हमारा तो गाँव ही गरक होने वाला है। देखो न वह उल्ता राधेश्याम तो हमारी सरकार के खिलाफ तिरंगा झन्डा उठाए फिरता है। कई बार तो गाँव के अच्छे लोगों ने उसे पकड़वा दिया और पीटा भी हैं पर बाज नहीं आया।

और अब यू रामसहाय का कन्हैया कलयुग की पूँछ बना डोले है। हाये, मेरी मैया मुझे तो बताते हुए भी शर्म आवे है। दिखे बिसम्बर कि लौंढिया राजो और माया दोनों इस कन्हैया की भतीजी लगती हैं उन लड़कियों की माँ भी वहीं बैठी रहती है। शाम को आठ बजे रात के अन्धेरे दीवे की रोशनी में यू काले मुँह वाला कन्हैया दोनों लौंढियों को

अपने पास बैठा कर रोज दो घन्टा हिन्दी पढ़ावे है मेरी भैनो आप यही बताओ कहीं लौडियोंओ के हाथों में किताब अच्छी लगे है। इस गांव के तो सारे लोग मर गये ऐसे का मुँह भी तो न पीटा जाता।

इस प्रकार से मित्र मेरे इनके अतिरिक्त और बहुत बिरोधी थे। परन्तु सत्य की जीत होती है यह परमात्मा की गति है।

प्रश्न- गुरुजी, जिन हरिजन बन्धुओं को बराबर का दर्जा दिल्ली दिलाने का आपने प्रयत्न किया था। क्या अब वह आर्य समाज को मानते हैं या उस संस्था में कुछ काम करते हैं?

उत्तर- हाँ, प्रिय मित्र यह तो मुझे भी अनुभव सा होता है की आज का नव युवक हरिजन आर्य समाज की हिमायतों को भूला हुआ सा ही दीखता है। इस का भी कारण है। आज की आर्य समाज लक्ष्मीहीन समाज है लक्ष्मी तो राजनैतिक लोगों में पहुँच गई। और राज्य नैतिक संस्थाओं में भिन्न-भिन्न मतों के लोग है और आर्य समान उन में न के बरा-बर है।

हरिजन नवयुवक बन्धु भी लक्ष्मी के पीछे भाग रहे हैं। इसलिये जब तक इन को लक्ष्मी नहीं मिलेगी तब तक ये आर्य समाज के उपकारों की याद कर के वेद धर्म की धुरी नहीं बन सकते है। इन का तो अब यही कहना है, उपकार करने वाले जायें भाड़ में हमें तो पहले लक्ष्मी और पद दो। वैसे तो सारा समाज ही धन लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये ही प्रयत्न शील है चाहे जैसी भी मिल जाये। इन्हीं कारणों द्वारा वेद विरोधी बढ़ते जा रहे हैं और आर्य समाज की रीड़ की हड्ड़ी टूटने को हो रही हैं और यदि रीड़ की हड्डी टूट ही गई तो सारे विश्व में वेद धर्म समाप्त

हो जायेंगे उस के बाद मानव निर्दोष को न्याय नहीं मिलेगा हर गली मोहल्ले में दिन रात अवारा नवयुवक घूमते फिरते है। यदि (१०००) हज़ार की बस्ती के १० नवयुवक अपनी अवारागर्दी का आधा समय भी आर्य समाज में काम करने को दे दें तो यह समाज सारे विश्व में न्याय और सुख शान्ति की वर्षा कर सकती है।

प्रश्न- गुरुजी जब हिन्दू धर्म के वेदों में हरिजनों को अछूत और शूद्र अर्थात नीच जाति लिखा है तो वह आर्य समाज का सदस्य कैसे बन सकते हैं? मुझे सेमुल पादरी ने बताया था की यजुर्वेद में शूद्र शब्द लिखा है और भी वेदों के विरुद्ध हमारे सारे गाँव में प्रचार खास करके हरिजनों में करता रहता है और स्त्री जाति को भी शूद्रबताया है।

उत्तर- देखो सिसोदिया जी अछूत शब्द तो किसी मनुष्य जाति को नहीं लिखा है शूद्र अवश्य ही लिखा है परन्तु नीच जाति का द्योतक नहीं है जैसे यजुर्वेद का मन्त्र "तप शूद्रम् कठोर कर्मा"

अर्थ :- समाज में कठोर कर्म करने वाले को ही शूद्र कहा है। इस लिये चारों ही वर्ण बराबर के हैं और चारों ही आर्य है। दुष्ट नहीं है।

और इसी प्रकार स्त्री के विषय में भी है जैसे मनु स्मृति में

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"

जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं।

ऋषि वाल्मीकी अपने रामायण ग्रन्थ में लिखते हैं। अयोध्या काण्ड ७८/२३ श्लोक इमामणि हतां कुबजा जनाति राघव: तबा चमा चैव धर्मात्मा नाभिभाषिष्यते ध्रुवम् ॥

॥ अर्थ ॥

जब भरत कुब्जा को मृत्यु दन्ड देने लगा तो। राम वन वास के वियोग के वशीभूत होकर तो शत्रुघ्न ने भाई भरत को उपदेश दिया कि वेद में स्त्री अवध्य है और यदि श्री राम ने यह सुन लिया तो हम दोनों से बात भी नहीं करेगें।

प्रश्न- श्री राम कुमार सक्सेना जी के :— (३)
गुरु जी क्या वेदों की सारी बातें ही मानने योग्य हैं और क्या और भी किसीं देश में वेदों के धर्म को मानते हैं या केवल आर्य समाज ही मानती है।

उत्तर- कन्हैया लाल आर्य का :—

प्रिय राम कुमार जी, आप तो स्वयं विद्वान हैं। परन्तु मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं और मुझे अपनी परीक्षा देने में हर्ष है जो कुछ मैंने पडा सुना समझा है उसी के अनुसार आप कें प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयत्न करुँगा।

देखो मित्र, बैदिक धर्म ही पृथ्वी तल पर एक ऐसा धर्म है जिस को तर्क और विज्ञान से बिल्कुल भी भय नहीं है। वेदों की सारी बातें मानने योग्य थी और अब भी हैं और जब तक यह दुनियाँ है माननी पड़ेंगी यदि सुख और शान्ति से दुनियाँ के मनुष्यों को रहना है तो, क्यों कि वेद ईश्वरीय

ज्ञान है ईश्वर की कोई भी बात अपूर्ण नहीं होती है। विदेशी लोग भी किसी न किसी रुप में वैदिक धर्म को मानते हैं। आज कल तो विदेशों में समाज स्थापित हो भी रही है और सारी दुनियाँ में जो मनुष्यों की सुख शान्ति हेतु कार्य हो रहे हैं, वह सब वेदों की शिक्षा से हो रहे हैं इसके अतिरिक्त विनाश कारी जो कार्य हो रहे हैं वे सब वेद धर्म के विरुद्ध हो रहे हैं।

प्रश्न- गुरु जी, देव - देवी पूजा की क्या परिभाषा है ?

उत्तर-देखो मित्र, शास्त्रों में देव-देवी की परिभाषा इस प्रकार से है। विद्वानों, माता, पिता, आचार्य, अतिथि, न्यायकारी राजा, धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री, पतिव्रत पुरुषों का आदर सत्कार करना ही देव-देवी पूजा कहलाती है। इसके विपरीत पाषाण मूर्ति-अपूज्य है।

प्रश्न- गुरु जी तीर्थ-व्रत की क्या परिभाषा है ?

उत्तर-देखो बन्धु तीर्थ दुःख सागर से पार उतरने को कहते हैं। पार उतरने के साधन हैं सत्य-विद्या, सत्संग, सत्य-भाषण, योगाभ्यास, दान आदि जो शुभ कर्म हैं। वही तीर्थ व्रत हैं। इतर जल स्थल नहीं।

प्रश्न- महर्षि दयानन्द की बनाई आर्य समाज का क्या मुख्य कार्य है ?

उत्तर-मौखिक प्रचार :— शास्त्रों द्वारा पाखन्ड खन्डन करना और वेद प्रचार करना, वेदों के भाष्य और अन्य ग्रन्थों के निर्माण द्वारा प्रचार की दृढ़ भूमि तैयार करना। अपने ही हाथ से पीतल, ताँबा इत्यादि धातु की मूर्ति को बना कर ईश्वर के स्थान पर उसे पूजना यह वैदिक धर्म के विरुद्ध है।

प्रश्न- स्वर्ग और नरक किस को कहते है ?

उत्तर-स्वर्ग सुख विशेष का नाम है, और नरक दुःख विशेष का नाम है।

प्रश्न- सत्य का क्या लक्षण है ? उससे मनुष्य को क्या लाभ है ?

उत्तर-सत्य का सामान्य लक्षण है, मन वाणी में एकता रहे और सत्य का व्यवहार करने से बड़ा लाभ होता है। यह होता है कि अपने-पराये सब सत्यवादी की बात पर विश्वास करते हैं। सत्य पर आचरण करने से मनुष्य की आत्मा उन्नत हो जाती है।

परन्तु किसी निर्दोष जीव को सत्य से हानि या कोई कष्ट पहुँचता हो तो उसे सत्य बोलने से पाप का भागी हो जाता है। इसलिए हमारे भारत देश का महा-मन्त्र 'सत्यमेव जयते' है अर्थात सत्य की जीत होती है।

प्रश्न- स्वदेश भक्ति से मनुष्य को निजि लाभ क्या है ?

उत्तर-माता पिता के नाम को सुन कर महाहिन्सक मनुष्य भी आदर से सिर झुका देता है। चार पदार्थो को माता शब्द से कह कर आदर दिया जाता है। जैसे :— वेद माता, गौ माता, और जननी माता जो हमारे पालन पोषण में सहयोग रुपी ऋण मिला है। उस ऋण से उऋण होकर ही मनुष्य की (हमारी) गति हो सकती है। इसीलिये जीवनभर प्रयत्न शील रहना चाहिए। अथर्ववेद का मन्त्र है—

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्यः

अर्थात राष्ट्र भूमि मेरी माता है। मैं भूमि का पुत्र हूँ।

प्रश्न- गुरु जी, आर्य समाज का सदस्य माँसाहारी और शराब सेवी को क्यों नहीं बनाते क्योंकि हमारे देश के कुछ ऐसे प्रान्त हैं जहाँ उनको इसका प्रयोग आवश्यक है।

उत्तर-देखो बन्धु, यह पदार्थ अभक्ष हैं वेद सनातन धर्म के विरुद्ध हैं। इसलिये किसी भी प्रान्त में इसका सेवन अतिआवश्यक नहीं है। देखो मैं पत्राचार विद्यालय तिमारपुर दिल्ली में रिकार्ड कक्ष में कार्यरत हूँ जो सारे देश का (ओलिन्डिया बेसिस) पर है। सब प्रान्तों के विद्यार्थी मेरे पास आते है और मैं जो माँस शराब सेवी प्रान्त है उन्हीं विद्यार्थियों से माँस शराब आवश्यक खाने की जानकारी लेता रहा हूँ सभी ने मना किया कि आवश्यक नहीं है।

प्रश्न- आर्य समाज श्राद्ध (कनागतों) को क्यों नहीं मानता जबकि अपने बड़ों की यादगारी की बात है।

उत्तर-देखो मित्र मनुस्मृति में सोलह(१६) संस्कार हैं अन्तिम १६वां ही मृत्यु संस्कार उसके बाद मनुष्य का कोई संस्कार शेष नहीं रहता है और वह अन्नदान का कोई भी भाग मृतक आत्मा को नहीं मिलता है। इसलिए वह दान निष्फल होता है। दान दाता को उसका फल नहीं मिलता महाभारत के लेखक महर्षि वेदव्यास जी ने भी लिखा है जो आजकल संस्कृत विषय में विद्यार्थी भी पढ़ते हैं।

प्रश्न- वे कौनसी कुरीतियां हैं जिसे आर्य समाज हटाना चाहता है।

उत्तर-वैसे तो समाज में बहुत कुरीतियां हैं फिर भी मैं कुछ अपनी बुद्धि अनुसार बताता हूँ। जैसे :- शादी का अर्थ है सादगी

(साधारण) है परन्तु असमाजिक तत्व एक गरीब आदमी को विवश कर देते हैं अर्थात कुरीति करने पर बाध्य कर देते हैं जैसे विवाहों आदि के सस्कारों के अवसरों पर अधिक कन्या दान दहेज, आभूषण, प्रतिभोज, गाजा-बाजा, बिजली-रेडियो लाउडस्पीकर और नाँच स्वांग, इस प्रकार निर्धन व्यक्ति विवाह में दब जाता है। शराब पीने की कुरीतियाँ नाच, स्वांग, सिनेमा, राज्य कर्मचारियों में घूँसखोरी, रिश्वत, बढ़ेंगी फशन परस्ती, मुकदमेंबाजी, राज नीति में भाई-भाई से झूठ का बोलना, परमात्मा निराकार है उसको साकार बनाकर धन लूटना। अवैदिक रीति से देवी देवताओं की पाषाण की मूर्ति बनाकर भोले भाले मनुष्यों की बुद्धि को पाषाण सम बना देना देवी देवताओं के नाम से निर्दोष जीवों की हत्या इत्यादि।

प्रश्न- गुरु जी, आर्य समाज ईसाई मुसलमानों को भी हिन्दू बनाकर शुद्ध कर लेता है क्यों ये कोई अच्छा काम कर रही है ?

उत्तर-आर्य समाज वेद धर्म प्रचारक समुदाय है। इसलिए उसके कार्यों में शुद्धि के लिए भी समय स्थान होना स्वाभाविक ही था और है। वेद किसी देश जाति विशेष के लिये नहीं किन्तु सम्पूर्ण जगत की सम्मिलित सम्पत्ति है। इसीलिये सारे विश्व में वेद धर्म का उपदेश देना आवश्यक है। अनिवार्य है तब ही सारे विश्व में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सन्देश गुंजा सकते हैं।

प्रश्न-गुरु जी "गुरु" शब्द की क्या परिभाषा है यह और बताने की कृपा करें ?

उत्तर-मित्र, आपने बड़ा अच्छा प्रश्न किया है देखो गुरु शब्द की

परिभाषा इस प्रकार से है। माता पिता, और विद्वान, और सत्य के ग्रहण कराने करवाने और असत्य को छुड़वाने, छुड़ाने उस की गुरु संज्ञा है।

प्रश्न- गुरु जी, क्यों कोई मनुष्य पारब्रह्म परमात्मा के दर्शन भी कर सकता है और अव से पहले किसी ने किये भी हैं ? और ब्रह्मा किस को कहते हैं ?

उत्तर-देखो बन्धु, परमात्मा के दर्शन सिद्ध योगी कुम्भक योग आसन के द्वार ।करते हैं। सिद्ध योगियों की सीमायें होती हैं न उनकी सीमाओं में जाकर कोई धर्मात्मा, सन्यासी' यदि उन के दर्शनों का ध्यान करता है तो उस को दर्शन भी दे देते हैं। उन का मुख्य स्थान हरिद्वार से आगे चल कर गोमती स्थान बताते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती को सिद्धि प्राप्त थी। वह प्रभु दर्शन रोज़ किया करते थे।

ब्रह्मा चारों वेदों के विद्वान को कहते हैं। प्रथम ब्रह्मा ने ही वेदों के द्वारा विश्व के मनुष्यों को वेद का ज्ञान देकर रहन सहन के नियम बताये थे।

प्रश्न- क्या आप कुम्भक योग आसन जानते हैं ?

उत्तर-देखो भाई कुम्भक योग आसन सही रुप में तो सिद्ध योगी ही सिखा सकते हैं और मुझे वह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, और में प्रयत्न कर रहा हूँ परन्तु मैं अभी तक धर्मात्मा वन नहीं पाया हूँ।

प्रश्न- क्या राजनैतिक पार्टियों में भारतीय जनता पार्टी शासन चला सकती है ?

उत्तर-भारतीय जनता पार्टी केवल वैदिक सभ्यता संस्कृति की पुकार है। अभी इनकी इतनी संख्या नहीं जो शासन चला सके, भारत देश में।

प्रश्न- गुरु जी, आपने ये ज्ञान की बातें और कविता मैंने सीखी, अर्थात आप के गुरु कौन थे।

उत्तर-मेरे, गुरु देव, आर्योपदेशक श्री १०८ स्वामी भीष्म जी हैं अब उन की आयु १३७ वर्ष की है घरोन्डा गाँव गुरुकुल में रहते हैं मेरे ज्ञान के ये प्रथम गुरु हैं।

और वेद धर्म की अधिक जानकारी जो मुझे मिली वह महर्षि दयान्नद सरस्वती कृत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से मिलो। यदि आप को सत्य असत्य की जानकारी करनी है तो आप भी सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन कीजिए। मैं अपनी संख्या विद्वानों में नहीं मानता हूँ।

प्रिय राम कुमार जी मुझे बार-२ गुरु जीं कहा है परन्तु मैं अपने आप को गुरु के योग्य नहीं मानता क्यों कि गुरु वह होता है जो परसात्मा के दर्शन करा सके। मैंने तो स्वयं ही परमात्मा के दर्शन नहीं किये हैं।

॥ गुरु शिष्य सम्वाद ॥ (4)

प्रश्न- श्री रामकिशन त्यागी पहलवान बुराड़ी दिल्ली संख्या-६। गुरु कन्हैयालाल आर्य जी नमस्ते मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताओ।

उत्तर-कन्हैयालाल आर्य - भाई पहलवान जी आप मुझे गुरु क्यों कहते हैं, मैं गुरु के योग्य नहीं हूँ में तो केवल जन सेवक और महर्षि दयानन्द का सन्देश वाहक हूँ। मुझे धर्म कार्य में आप

का वड़ा सहयोग मिलता हैं मै आप को बार-२ नमस्ते करता हूँ।

प्रश्न- गुरु जी आपने मुझे जब से अपने सम्पर्क में लिया है। तभी से अपने पठ्ठे पहलवानों से यह कह दिया है कि ये मेरे धर्म के गुरु हैं यदि इन के धर्म उपदेशों में या धार्मिक कार्य कर्मो में रुकावट पैदा करता है या कोई गुन्डा गर्दी करता है तो आप सब को उनकी अक्कल ठिकाने लगानी है और मैंने सुना है गाँव के लड़के आप को बिना किसी कारण के ही परेशान करते हैं। मुझे आदेश दो उन की अकल ठिकाने लगा दूं।

उत्तर-मित्र आप का धन्यवाद, यदि कोई मेरा अपमान करता है तो मुझे और अच्छा काम करने की प्रेरणा मिलती है। मैं अपने मान की या अपमान की चिन्ता नहीं करता मुझे चिन्ता है अपने देश की समाज की विद्वान और बलवान बनाने की उपदेशों के द्वारा और आप को भी उपदेश ही देकर नौ जवानों को समझाना चाहिये।

प्रश्न- गुरु जी मैं उपदेश देना नहीं जानता मेरा काम बदमाशों को अपने दाव पेचों से ठीक करने का है। किसी को धोबी पाट से ठीक करता हूँ किसी को साँडीपेच किसी को निकास से किसी को कलाजंग से किसी को इकडंगा ले और यदि इन से भी ठीक न होता हो तो मेरे पास वे दाव पेच भी है जो छट्टी का दूध पिया वाहर निकल कर पड़े, और उस की बुद्धि ठीक हो जाये।

जब आप के सहयोग से नई दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

राज्य हनुमान रोड आर्य समाज मन्दिर आर्य सन्यासियों ने मुझे बुराड़ी शाखा का महामन्त्री बनाया था। मैंने तो वही कह दिया था यदि कोई भी मेरे देश में यदि आर्य विद्वान को सतायेगा और मुझे उस आदमी का पता मिल गया तो मैं उसे बिना पीटे नहीं छोड़ूगा। अपने धर्म गुरु का आदेश अवश्य लूँगा।

अब आप से सविनय निवेदन है कि एक या दो महीने के बाद शर्मानन्द, ओमदत्त, दिनेश तीनों रमेश से अच्छे कलाकारों के द्वारा कोई नया नाटक समाज बिगाड़ सुधार का श्री राधेशाम आर्य समाज मन्दिर में दिखा दो परन्तु हरमोनियम आप को ही बजानी होगी।

प्रबन्ध मेरे पहलवान केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के करेंगे वहाँ किसी गलत आदमी को कान नहीं हिलाने दूँगा।

उत्तर-प्रिय मित्र अवश्य ही मैं प्रबन्ध करूँगा।

।। बाबा पोते की बात चीत ।।

प्रश्न-सतीश कुमार त्यागी -

बाबा श्री कन्हैयालाल आर्य जी नमस्ते

उत्तर-बेटा नमस्ते परमात्मा आप को सद्बुद्धि दें।

प्रश्न-बाबाजी मैं देश भक्त बनना चाहता हूँ और मैं खद्दरधारी भी बन चुका हूँ मैं कहीं किसी मन्च पर यदि देश भक्ति के भाषण देता हूँ तो लोग मेरी खिल्ली उड़ाते हैं और सब मुझे मजाक में नेता कहते हैं। इस लिये कोई ऐसी विधि बताओ धर्म और देश भक्ति में मैं प्रगति कर सकूं। मेरी आयु इस समय २० वर्ष की है।

उत्तर-कन्हैयालाल आर्य का :- सुनो बेटा

।। शेर ।।

करना चाहे सो कर सकते नौजवान दुनियाँ में।
बाल, वृद्ध क्या करेंगे मेहरवान दुनियाँ में ।।

।। विचित्र बात ।।

परन्तु कार्य विपरीत हो रहा है। जैसे :- देश और दुनियाँ के बाल, बालिकायें बिना ही वेतन के नियमित रूप से विद्यालयों में विद्या अध्ययन करने अनुशासन में जा रहे हैं और वृद्ध भी निजि लोभ लालच को छोड़ कर घर और समाज की सेवा कर रहे हैं और सन्तोषजनक कर रहे हैं।

परन्तु खेद का विषय है, आज का नौजवान केवल झूठे आश्वासन और भाषण दे रहा है । यदि यही गति रही तो वे दिन दूर नहीं, जब वेद धर्म, घर धन देश बचेगा नहीं बहुत जल्दी ही देश दुबारा गुलाम हो जायेगा, वेद धर्म विरोधियों द्वारा, यह मेरा विचार है।

।। धर्म देश की प्रगति कैसे होती है, सुनो ।।

जब मेरी आयु १६ वर्ष की थी उस समय मैं माता पिता रहित था और घर धन हीन भी था।

मैं अपने गृह कार्यों के साथ-२ सामाजिक कार्य भी करता था जैसे फोड़ा फुंसियों की मरहम पट्टी अपने खर्च से, हिन्दी भाषा पढ़ाता था अपने ही खर्च से। और हर एक महीने एक या दो बार रात्रि के आठ बजे के बाद से ग्यारह बजे तक

श्री १०८ स्वामी भीष्म आर्य उपदेशक के बनाये इतिहास हारमोनियम पर गा बजा कर सुनाया करता था।
मेरे इस कार्य से प्रसन्न होकर जनता जनार्दन मुझे पुरस्कार रूप में महाशय कहने लगे और मेरी बातों पर आर्य बन्धु विश्वास करने लगे। मैं इस ही पुरस्कार को प्राप्त करके आगे बढ़ने लगा।

सन् १९४४ की बात है। मैंने राष्टीय स्वयं सेवक संघ के कार्यालय दिल्ली से अपना सम्पर्क जोड़ा। कुछ ही दिनों के बाद १०-११ शाखा मिलकर १०० स्वयं सेवक बुराड़ी मेरे गाँव में मेरे घर पर आ गये उसी दिन से नित्य प्रति हमारे गाँव में राष्टीय स्वयं सेवक संघ की शाखा लगने लगी। और कुछ दिनों के बाद मुझे मुख्य शिक्षक भी बनाया।

बुराड़ी गाँव की शाखा में २०० स्वयं सेवकों की संख्या थी। पुराने काँग्रेसी श्री राधेश्याम और शान्ति स्वरूप भी स्वयं सेवक बने थे। सन १९४७ में जब हमारा देश आज़ाद हुआ तो पाकिस्तानी गुन्डों ने हमारे निर्दोष हिन्दुओं को जान से मारना शुरू कर दिया था। मैंने भी हिन्दूपति महाराणा प्रताप का स्मरण करके अपने हाथो में भाला (बलम) लेकर अपने निर्दोष हिन्दू भाइयों की रक्षा में जी जान की बाजी लगा दी थी।

और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के चालीस स्वयं सेवक अपने निर्दोष हिन्दुओ की रक्षा हेतु पाकिस्तान में जा घुसे थे। पाकिस्तानी गुप्तचरों द्वारा उनको पकड़कर कैद कर लिया था और उस सरकार ने यह आरोप लगाया था कि ये स्वयं सेवक हमारी पार्लियामेंट पर बम मारने की योजना

बना रहे थे इसलिए इन चालीसों को मृत्यु दन्ड देना चाहिये।

मुझे खूब अच्छी तरह से याद है। माननीय श्री राम गोपाल शालवाले वानप्रस्थी जी जो आजकल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। उन्होंने दीवान हाल आर्य समाज मन्दिर दिल्ली से गर्जना करते हुये यह घोषणा की थी। यदि नेहरू सरकार ने हमारे उन ४० स्वयं सेवकों को मृत्यु दन्ड से बचाकर भारत में नहीं बुलाया तो हम अपने भारत देश में एक भी मुसलान नहीं रहने देंगे।

नेहरू सरकार लालाजी की सिंह गर्जना से काँप दहल गई थीं और हिन्दू पाकिस्तामी कैदियों की अदला बदला से ४० स्वयां सेवक सुरक्षित भारत आ गये थे वह चालीसों हिन्दू वीर सप्त ऋषि तारों की तरह इतिहास के पृष्ठों में जगमगाते रहेंगे।

इसलिए सतीश कुमार जी धर्म देश के शुभ कार्य में जो इसी प्रकार अपने जीवन का योगदान देते हैं वही देश भक्त और नेता कहलाने के अधिकारी होते हैं उनका कोई भी उपहास नहीं कर सकता है और यदि किसी ने इसके विरुद्ध साहस भी किया तो उसको बड़ी हानि उठानी होती है।

॥ तर्ज :- आनन्दी ॥ 140 ॥

पक्षा पक्षी छोड़ो हे मानवो, झूठ साँच को सब तोलो।
विश्व की नवयुवतो, नवयुवको, सब वेद धर्म की जय बोलो।
झठ साँच क्या है दुनिया में, ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को टोहलो।

विश्व के सब विद्वानो मिलकर ऋषि दयानन्द को जय बोलो।
जनता जनार्दन में यदि मेरे मन की बात को अपना लिया।
कन्हैयालाल आर्य यह समझे, मैंने अमृत फल को चाख लिया।

प्रश्न- सतीश कुमार त्यागी का : बाबाजी अब तो आप वृद्ध हो चुके हैं। अब आप घर और समाज की क्या सेवा करते हैं।

उत्तर-कन्हैया लाल आर्य का :— हाँ बेटा ये आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया है अब सन् १९८३ है मेरी आयु अब ५६ वर्ष की है। मेरे चार लड़की है दो का विवाह कर दिया है। एक लड़का है जिसकी आयु १५ वर्ष है। नौवीं कक्षा तक पढ़ कर स्कूल छोड़ दिया है आगे पढ़ने से अब मैंने मना कर दिया है। मैं ७०० रुपया मासिक कमा कर मुश्किल से गृह व्यय की पूर्ति करता हूँ।

मेरे गांव में आर्य समाज मन्दिर नहीं था। मैं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद से सम्पर्क कर के राधेश्याम आर्य समाज मंदिर बुराड़ी गाँव में बनवा रहा हूँ। मुझे सर्व सम्मति से बुराड़ी आर्य समाज का प्रधान भी आर्य समाज ने बनाया हुआ है। और बुराड़ी की शाखा का केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने मुझे सर्व सम्मति से संरक्षक भी बनाया हुआ है।

मेरा पूरा विश्वास है कि परमात्मा मेरे इस सामाजिक कार्य को अवश्य ही पूर्ण करेगा।

प्रश्न- सतीश कुमार त्यागी का— बाबाजी आपका उद्देश्य क्या है?

उत्तर-कन्हैया लाल आर्य का —

।। संगठन गीत ।। 141 ।।

संगठन हम करें आपदों से लड़ें हमने ठाना।
हम बदल देगें सारा ज़माना ।।

वीर प्रताप के शेर जागो, वीर बन्दा के शमशेर जागो ।
बज रहा है बिगुल, नौ जवाँ तू निकल रण में जाना ।। १ ।।
शेर शिवराज की तेग खड़के, छावनी हर हर महादेव भड़के ।
शक्ति हो साथ में ओ३म् ध्वज हाथ में बढ़ते जाना ।। २ ।।
चाहे आंधी या तूफान आये, वर्षा आये या बादल भी छाये ।
हम रूकेगें नहीं और झुकेगें नहीं, पग बढ़ाना ।। ३ ।।
वीर आर्य युवकों ने राग गाया, वैदिक राज्य का डन्का बजाया ।
हम जिएं या मरें छल बलों से लड़े हमने ठाना ।। ४ ।।

।। शान्ति पाठ ।।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्विशान्तिरापा शन्तिरोष-
धयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः शन्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः ! ।।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
4	बजे	2 बजे
8	जन्ता पार्टी	रामलीला पार्टी
8	नहीं	वहीं
23	बनेगा	बनता जा रहा है
30	झट	झूठ
30	फल	फूल
31	घूर-२ कर	घुट-२ कर
32	मूँछ	मुँह
35	धम	धर्म
39	१ आने	१२ आने
40	वध	वर्ष ६६ रुपया
42	चुकता	चट कर गया
45	पट	ठाढ़
46	वह भी	वही परेशानी
48	कन्हैयालाल एकता	कन्हैयालाल से
50	रल	इस

55	बाँकी	चादी
67	गुरुओं	गउँओ
	१९२२	१९२४
69	५० वर्ष	५९ वर्ष
71	सन १-४४	सन १९४५
72	दान	मान
79	सुण ले	ढोह ले
83	किया	मिला
84	५३ २७	१७-३-१९७८
87	अमिचन्द	शर्मानन्द की भेंट
93	मूर्ख	पूर्ण
94	सन १४०८	सन १४९४
		वीर रसीली
95	नाढर	नाहर
108		मेरे विचार से नहीं
116		१०० ऋषियों के नाम
122		देश की इस दुनियाँ से खोगी
131		हजारों वर्ष
137		नहीं रामचन्दर
138	आंस	आँख

140	फहाइ	पहाड़
147	लाल ढेर	लाल की ढेर
162	जननी	माता/जननी भारत माता
166	मैंने सीखी	किसी से सीखी

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

लेखक का परिचय

प्रस्तुत पुस्तक 'मन का दान' पढ़ने से मुझे ऐसा लगा कि लेखक को ग्रामों में आर्य समाज का सन्देश पहुँचाने की धुन है। अपने मन की इसी इच्छा को पुस्तक का रूप दिया है। निश्चित रूप से ग्रामों में आर्य समाज का प्रचार करने के लिए सीधी-सादी ग्राम की भाषा में इनका यह प्रयास उपयोगी रहेगा।

श्री कन्हैयालाल आर्य अत्यन्त सरल प्रकृति के सादगी पसन्द और सच्चे आर्य समाज के प्रचार की तड़प रखने वाले व्यक्ति हैं। इनमें सदा निःस्वार्थ सेवा का भाव रहा है और इसी कारण अपने गाँव में इन्हें काफ़ी सम्मान प्राप्त है।

बुराड़ी ग्राम में आर्य समाज की स्थापना करके वे इसे ग्रामों में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार का केन्द्र बनाने की इच्छा रखते हैं। उन्हें अपनी धुन में अवश्य सफलता मिलेगी। आर्य जनता को उनके प्रयास में अवश्य सहयोग देना चाहिए।

ग्रामों में उनका वैदिक प्रचार का जो कार्यक्रम है उसमें उन्हें सफलता मिले, इसी शुभकामना के साथ —

प्रेमचन्द श्रीधर
एम० ए०
E-36, रणजीत सिंह मार्ग,
आदर्श नगर, दिल्ली-33

मुद्रक :- श्रीधर प्रिंटर्स, आदर्श नगर दिल्ली-११००३३